७ भादों की अति रेन अन्धयारी

८ आश्विन वदी तेरसकों प्रकटे बालकृष्ण.सुखदाई

९ कार्तिक सुद दुतिया के दिन हलधर सहित सुभद्रा के आये

१० अग्रहन सुदी साते शुभ दिन आयो

११ पोष कृष्ण नोमी के शुभ दिन पूत अकाजु जायो

१२ प्रकटे भक्त शिरोमणि राम माघ मास सुद । चोथ है हस्त नक्षत्र रविवार

पार्वणिकोत्सव—यह उत्सव पर्वों पर तथा नक्षत्र प्रधान लौकिक त्यौहारों से संवेष्टित होय है—

होली, डोल, दिवाली, राखी, स्नान-यात्रा, रथयात्रा, अक्षयतृतिया, प्रबोधिनी, भाईदूज, ठकुरानी तीज, गणगोर, अक्षय नवमी, नागपञ्चमी, धनतेरस, रूप चऊदस, दशहरा, मकर-संक्रांति चारो जयन्ति, (राम, कृष्ण, नृसिंह, वामन,) अषाढ़ी कसूम्बाछठ, हरियाली मावस । कुल पार्वणिकोत्सव २४ होय है ।

महामहोत्सव—नन्द महोत्सव में पलना दधिकांदो नन्द जसोदा.गोपी ग्वाल चार, ब्रज भक्तन के भाव से चार प्रकार के वाद्य मृदंग झांझ नौबत मांदल । सुवासनी गीत सारे उपक्रम नव उत्सव स्वरूप होय ।

अन्नकूटदिवाली—चार शृंगार, महायज्ञ स्वरूप ६ आरती दोनों दिन विशेष महायज्ञ की सेवा में विशेष सेवा ।

डोला—चारभोग चार यूथाधिपान के भाव सों धरें खेल चार-चार बीड़ी अरोगे तथा आरती आदि सेवा में खेल बड़े । यामें डोल छः दिन गवें । शयन राजभोग में ।

महारास—भीतरकी सेवा सारे उत्सवाङ्ग उपक्रम शयन में गुप्त सेवा भावना से होय ।

महादान—यामें अन्तरंग ब्रज भक्तन की अन्तरंग लीला—

या प्रथम तरंग को वर्णन सत्य कवि द्वारा—

गोवर्द्धनधर श्रीनाथजू की उत्सव माल,
ग्रन्थ ये सम्पूर्ण भयो भाग रस चार में ।
प्रथम चन्द्रावलि गोस्वामीं विट्ठलवर,
स्नेह के प्रगाढ़ता में होरी ओ धमार में ।
कुञ्ज ओ निकुञ्ज की लीला रस पूर्ण यामें,
संगत समाज संग वन-वन विहार में ।
चंचल चपल चारू चतुर चन्द्रावलि,
साथी तीन.मास सेवा 'सत्य' सुखसार में ।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ–सेवा–रसोदधि

द्वितीय तरंग

बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़

की

श्री यूथाधिपा

श्री यमुनाजीमहारानी

श्रीनाथजी

द्वितीय तरंग

असरन सरनी कलिमल तारिनि भवभय हारिनि जमुना महारानी की त्रैमासिक सेवा क्रम में वैसाख जेष्ठ एवं अषाढ़ आवे हैं। यह सेवा गोवर्धनोद्धरणधीर श्रीनाथजी की द्वादश मास सेवा में तुर्यप्रिया भानुतनया की सेवा क्रम में उत्सव, महोत्सव, नित्योत्सव, नैमित्तिकोत्सव या प्रकार वर्णन करवे में आवें हैं। तासों सर्व-प्रथम महाभागा जमुना जू के रूप, लीला, गुन वर्नन करत हैं। ऐसो कोऊ विद्वान नाहिं भयो जानें जमुना माँ के गुन न गाये होंय। तथा ऐसो कोऊ साहित्यकार, कवि, कलाकारहू अछूतो न रह्यो जाने यमुना मैया के गुन न गाये होंय। पुष्टि मार्ग में सर्वप्रथम जमुनाजी सों अंगीकृत जीव कूं ही प्रभु सन्निधि सम देय है तासों यहाँ हू जमुनाजी के त्रैमासिक सेवा पूर्व ने उनके रूप, लीला, गुन बर्नन करे हैं। आचार्यश्री जगद्गुरू वल्लभ प्रभु ने 'यमुनाष्टक' ग्रन्थ निर्मित कियौ और यह स्तुति ग्रंथ है। अष्टछाप तथा ब्रज साहित्य भक्तन ने लीला रस वर्नन कियौ है। सों यहाँ ऐक्य लायवे कों प्रयास करत हैं। काहे तें कि प्रथम वंदन करनों चाहिये—

नमामि यमुनामहं सकल सिद्धि हेतुं मुदा,
मुरारि पद पंकज स्फुरदमंद रेणूत्कटाम्।
तटस्थ नव कानन प्रकट मोद पुष्पाम्बुना,
सुरासुर सुपूजित स्मर पितुः श्रियं बिभ्रतीम्॥१॥

महाप्रभु जी के या श्लोक में कृष्णदासजी के पद कौ समन्वय करे हैं। नमो तरनि तनया तीर परम पुनीनत जग पावनी कृष्ण मन भावनी रुचिर नामा।

अखिल सुखदायनी सर्व सिद्धि हेतु राधिका रमन रति करन श्यामा।
विमल जल सुमन कानन मोदयुत अति रम्य प्रिय ब्रज किसोरा।
गोप गोपी नवल प्रेम रति बन्दिता तट मुदित रहत जैसे चकोरा।
लहर भाव लालित बालुका सुभग ब्रज बाल पूरन रास फलदा।
ललित गिरिवरधरन पिय कलिन्द नन्दिनी निकट कृष्णदास विहरत सर्वदा ?

कलिन्द गिरि मस्तके पतदमंद पूरो ज्ज्वला,
विलास गमनोल्लसत् प्रकट गंड शैलोन्नता ।
सघोषगति दन्तुरा समधिरूढ दोलोत्तमा,
मुकुन्द रति वर्धिनी जयति पद्म बन्धोः सुता ॥२॥

प्राणपति विहरत श्री यमुनाकूले ।
लुब्ध मकरन्द के भ्रमर ज्यों बस भये रवि उदय देखि मानो कमल फूले ।
करत गुंजार मुरली जु लै साँवरो, सुनत ब्रज वधू तन सुध जु भूले ।
चत्रभुजदास श्री यमुने प्रेम सिन्धु में लाल गिरधरन वर हरख झूले ।

भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेक स्वनैः,
प्रियाभिरिव सेवितां शुक मयूर हंसादिभिः ।
तरंग भुज कंकण प्रकट मुक्तिका बालुकां,
नितम्बतट सुन्दरीं नमत कृष्ण तुर्यं प्रियाम् ॥३॥

प्रफुलित वन विविध रंग, झलकत यमुना तरंग सौरभ घन मुदित अतिहीं सुहावनो ।
चिन्तामनि कनकभूमि, छवि अद्भुत लताझूमि, सलिलादि अतिसुगंध मारुततँह आवनो ।
सारस हंस सुक चकोर चित्रित नृत्यत सुभोर कल कपोत कोकिल फल मधुर गावनो ।
जुगल रसिक वन विहार, परमानन्द छवि अपार, जयति चारु वृन्दावन भावनो ।

अनन्त गुण भूषिते शिव विरंचि देवस्तुते,
घनाघन निभे सदा ध्रुव पराशराभीष्टदे ।
विशुद्ध मथुरातटे सकल गोप गोपी वृते,
कृपा जलधि संश्रिते मम मनः सुखं भावय ॥४॥

अति मंजुल जल प्रवाह मनोहर सुख अवगाहत विदित राजति अति तरनि नन्दिनी ।
स्यामवरन झलकत रूप लोल लहर वर अनूप सेवित सतत मनोज वायुनंदिनी ।
कुमुद कुंज वन विकास मंडित दिसि सुवास
कूजत अलि हंस पास कोक मधुर छन्दिनी ।
प्रफुलित अरविन्द पुञ्ज कोकिल कल सार गुञ्ज
गांवत अलि मञ्ज पुञ्जु विवध वन्दिनी ।
नारद सिव सनक व्यास ध्यावत मुनि धरत आस,
चाहत पुलिन वास सकल दुख निकंदिनी ।
नाम लेत कटत पाप मुनि किन्नर ऋषि कलाप,
करत जाप परमानन्द महा अनन्दिनी ।

यथा चरण पद्मजा मुररिपोप्रियं भावुका,
समागमनतोभवत्सकल सिद्धदा सेवताम् ।
तया सदृशतामियात्कमलजा सपत्नीव यत्,
हरि प्रिय कलिन्दया मनसि मे सदा स्थीयताम् ॥५॥

अधम उधारनी मैं जानीं श्री यमुने ।
गोधन संग स्यामधन सुन्दर तीर त्रिभंगीदानी ।
गंगा चरन परसते पावन हर सिर चिकुर समानी ।
सात समुद्र भेद जम भगिनी हरि नख सिख लपटानी ।
रास रसिकमनि नृत्य परायन प्रेम पुंज ठकुरानी ।
आलिङ्गन चुम्बन रसविलसत कृष्ण पुलिन रजधानी ।
ग्रीष्म रितु सुख देन नाथ कों संग राधा मनहरनी ।
गोविंद प्रभु रवितनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥

नमोस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतम्,
न जातु यम यातना भवतु ते पयः पानतः ।
यमोऽपिभगिनी सुतान्कथ मु हन्ति दुष्टानपि,
प्रियोभवति सेवनात्तव हरेर्यथा गोपिकाः ॥६॥

श्री यमुना देवी कोन भलाई ।
दै गुन नाम रूप हरि जू को न्यारी अपनी गैल चलाई ।
ऊजड देस कियौ भाई कौ तब परसत उनकों नहि जाई ।
जे जन तजत सरीर तेरे तट तात तरनि पर गैल चलाई ।
जल को उछलिकर अनल अघन तें तात तपत तन सीतलताई ।
आपुन श्याम औरन उज्वल कर यह सुन उनको न पतियाई ?
मुक्ति वधू कर दूतपनो अधमनहू को आन मिलाई ।
यद्यपि पच्छपात पतितन को तदपि गदाधर प्रभु मन भाई ॥

ममास्तु तव सन्निधौ तनु नवत्वमेतावता,
न दुर्लभ तमा रतिर्मुररिपौमुकुन्द प्रिये ।
अतोस्तुतव लालना सुरधुनी परंसंगमात्,
तवैवभुवि कीर्तिता नतु कदापि पुष्टि स्थितैः ॥७॥

जयति श्री यमुने प्रकट कल्पलतिके ।
अष्टसिद्धि अद्भुत वैभव सकल स्वजन विख्यात स्वाधीनपतिके ।
केलिस्रम सुरत पय रूप ब्रज भूप को पुत्र पय पान दे विश्वमाता ।
अंग नूतन करत पुष्टि तव अनुसरत त्रिदल रस केलि अमित दाता ।

रहत यमद्वारते मुक्त सुख चारते नाम त्रय अक्षर उच्चार करन।
उभय लीला विशिष्ट ब्रजपति प्रिय कुमारिका तुर्यप्रिया वदत रंग भीने।
अनावृत ब्रह्म ते सदा आवृत रहे कनक शाखा विटप श्यामवल्ली।
सदा प्रफुलित द्वारकेश अवलोकि कै नित्य आनन्द आभीर पल्ली ?
स्तुतिं तव करोति यः कमलजासपत्नीप्रिये,
हरेर्यदनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षतः।
इयं तव कथाधिका सकल गोपिका संगम,
स्मर श्रम जलाणुभिः सकल गात्रजैः संगमः ॥८॥
पिय संग रंग भरि करत विलासे।
सुरत रस सिन्धु में अति ही हरषित भई कमल ज्यों फूलत रवि प्रकासे।
तन ते मन ते प्रान ते सर्वदा करत है हरिसंग मृदुल हासे।
कहत ब्रजपति तुम सबन सों समझाय मिटे जग त्राण इनहीं के पासे।
तवाष्टकमिदं मुदा पठति सूर सूते सदा,
समस्त दुरतिक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः।
तया सकल सिद्धयो मुररिपुश्च संतुष्यति,
स्वभाव विजयो भवेत् वदति वल्लभः श्रीहरेः ॥९॥
श्री यमुने पतित पावन करनि।
प्रथम ही जब भयो दर्शन कोटि कलिमल हरनि।
पैठत ही जल तरंग परसत मिटी जिय की जरनि।
नाम उच्चरत सुद्ध बानी बुद्धि पोषनि करनि।
उपजे उग्र वैराग्य जाको खैचि लावै सरनि।
सूर हरि की भक्ति दाता विश्वतारनतरनि।

अब यमुनाजी को स्वरूप कहत है। आप तुर्यप्रिया (चतुर्थ प्रिया) कहाईं। किन्तु अनेक भक्तन को ब्रजलीला में अंगीकार कियो। जैसे नन्दादि कितनेनको राजलीला में अंगीकार किये। जैसे वसुदेव प्रभृति कितनेन कों उभयलीला में अंगीकार किये जैसे कुमारिकानकों।

प्रादुर्भाव प्रकार—

गोलोक सों जब साक्षात् पुरुषोत्तमने आज्ञाकरी तब श्रीकृष्ण की परिक्रमा करिके आपके अंग सै समुद्भूत होयकै नदीन में श्रेष्ठ यमुनाजी ब्रज में पधारीं—

हेकृष्णे ! त्वं तु धन्यासि सर्व ब्रह्माण्ड पावनी।
कृष्ण - वामांशसम्भूता परमानन्द रूपिणी ॥

पट्टराज्ञी परां कृष्णे कृष्णे त्वां प्रणमाम्यहम्।
तीर्थे देवैः दुर्लभात्वं गोलोके पि च दुर्भरा ॥
यूथीभूत्वा भविष्यामि श्रीव्रजे रासमण्डले।

अतः कृष्ण के वामपार्श्व सों आविर्भूत होयके समान श्रीअंगवारी, तीर्थन में दुर्लभ ऐसी श्री यमुना ब्रज के रासमण्डल में रासरंस आनन्द देवे हेतु पधारीं। कृष्ण के प्रादुर्भाव पश्चात् मथुरातें ब्रज पधारते प्रभु के सर्वप्रथम आपने ही चरण स्पर्श किये। जब आप गोलोक सों पधारीं तब विरजा (सारस्वती) हू संग पधारीं तथा गंगाहू जो वैकुण्ठ सों मिलिकै त्रिगुणात्मिका ह्वै के भूतल पर पधारी सत्चित् आनन्द रूपा भईं।

यमुना कुञ्जद्वार सों, गंगा चरणन सों, विरजा वाम पादाँगुष्ठ सों ब्रह्मा के मन सों, या प्रकार ब्रह्माण्ड सों होय के अजित भगवान के स्थान वैकुण्ठ सों होती भई ध्रुवलोक होइ के देवलोक को पावन करती, बड़े वेग सों पधारी। विरजा तो ब्रह्मद्रव में विलीन है गई तथा गंगा-यमुना सुमेरु पर्वत सों होती भई सात समुद्र भेदि कै सुमेरु के दक्षिण भाग कलिन्द पर्वत सों यमुना पृथक् होइके ब्रज कूं पावन करती भई पधारीं।

सात्विक—आपके तीन रूप वर्णित हैं। सात्विक, राजस, तामस। सात्विक रेणुका की प्रतिनिधि कात्यायनी निर्मित करि कुमारिकान ने साधन कियो। हेमन्त मास में ताकों साधन सिद्धा श्रुतिरूपान के स्वरूप सों आप "यन्निर्मल पानीया कालिन्दी सरिताम्वरा" ताते प्रथम सात्विक भईं।

यमुनाजी कौ आविर्भाव प्रकार यमुनाष्टक की टीकामें श्रीहरिराय महाप्रभु या प्रकार वर्नन करें हैं।

"यथा भगवान वसुदेव देवकी समक्षमाविर्भूति वरदानाय यथावात्मना पूर्वानुभूत भगवद् विरहेण च तापात्मकात्तदुभय हृदयात् यथा वा आविर्भूयान्येव केवल लीलास्थाने गोकुले प्रथातस्तत्रगत्वा सर्वात्म भावबद्ध भक्तसंवलितो जातस्तत्र लीलांच प्रकटितवान् तथा श्रीयमुनाऽपि प्रथमं सूर्यमण्डलान्तर्वर्त्ति नारायण हृदयादानन्द पदाविर्भूता द्रवीभूत रसात्मिका ततस्तस्माद्रविमण्डलात्कलिन्दो परि समागत्य भूमावागता ततो लीलास्थाने समागत्यतादृक् भक्त संवलिता जातेत्यर्थः।

घनीभूत रसात्माहि जातोनन्द गृहे हरिः।
केवलो धर्मयुक्तस्तु वसुदेव गृहे तथा ॥
शब्दात्मा गुणगानादौ वदनादुद्गतः स्वतः।
द्रवीभूतरसात्मैषा सर्वांगीणा श्रमाम्बुभिः ॥

नारायणस्य हृदयाच्छुद्ध सत्वस्वरूपत: ।
प्रादुरासीन्मूल रूपा पुष्टि लीला प्रसिद्धये ॥

यासों ये आपने सिद्ध कियो कि घनीभूत रसात्मा नन्दकुमार नन्द गृह में अवतरित भये और शब्दात्मक गुण गान हेतु आपश्री के वदनसों प्रकट होयके रसरूप द्रवीभूत होय, आप जलधारवत् विराजत है। शुद्ध सत्वरूपा नारायण के हृदय सें प्रकट होय पुष्टि मार्गीय रासलीला के हेतु ब्रज में पधारीं। आगे कहैं है।

प्रयोजन—

रविमण्डल[illegible]आगमन प्रयोजनमित्यर्थ: ।

यथा भगवतो मथुरातो [illegible] समागतस्यैव स्वामिनी भाव वर्द्धकत्वं तथा रविमण्डलादाविर्भूय कलिन्द [illegible]परि पतित्वा तत: कालिन्दीं स्वप्रविष्टां विधाय व्रजभूमौ समागताया एव लीला ।

सृष्टि स्थायिमुकुन्द रतिवर्धनीत्वमित्यर्थ: ।

यासौं प्रभुनन्द राजकुमार कीरति वर्धिनी यमुना महाराणी होवेसो आप सात्विक रूपते व्रज में विराजे हैं। तथा समस्त व्रजलीला आपके सन्मुख भई। आप रसदानार्थ रसरूपा हैं।

राजस तामस रूप—

इन दोनों रूपन सों "[illegible]यमुना जलें" या वाक्यसों आप विविध लीलो पयोगिनी प्रभुलीला संबंध अभिलषित करिवे वारी है। सो खाण्डव वन में आप विराजती कालिन्दी कहाई। आप द्वारका लीला में पट्टरानी भई। यह लीला उत्तरार्धदशम की भई। "[illegible] प्रिय कृष्ण" याकी सुवोधिनी कुमारिकानकों पुराणान्तर में द्वारकानयन लिये है। याही सों वहाँ गोपीचन्दन तो तब भयो जब कुमारिकान को मन है। [illegible] सों कालिन्दी तुर्य प्रिया द्वारका में मानी है। रुक्मणीजी, सत्यभामाजी [illegible] और चौथी कालिन्दीजी या सों भी ये तुर्य प्रिया हैं।

तासों ब्रज लीला में हूं, तुर्य प्रिया या प्रकार है। श्रुतिरुपा को एक यूथ, नित्य सिद्धान को दूसरो यूथ। नन्द कुमारिकान को तीसरो यूथ अरु चौथो यूथ श्री जमुना महाराणी को भयो। यासों तुर्य प्रिया भई। वहाँ यही, यमुना तुर्य प्रिया अष्ट सिद्धि दात्री है "सकल सिद्धि हेतु मुदा" की टीका में श्री हरिराय महाप्रभु अलौकिक सिद्धि वर्णन करत है (१) साक्षात् सेवोपयोगी देहाप्ति (२) तल्लीलावलोकनत्व (३) तद्रसानुभव (४) सर्वात्मभाव (५) भगवद्वशीकरणत्व (६) भगवर्दात्प्रयत्व (७) भक्तिदातृत्व (८) भगवद्रसपोषकत्व, ये अष्ट सिद्धि व्रज भक्तन के पद एवं वार्ताहू में सिद्ध होय है। पुष्टि मार्ग में सर्व प्रथम ब्रह्म संबंध पूर्व स्नान करावत है। सो तनुनवत्व अर्थात् साक्षात् सेवापयोगीदेहावाप्ति तब प्रभुसन्निधि में तल्लीला अवलोकन कौं सौभाग्य मिले फेरि तद्रस में छके। ताके बाद प्रभु मय सब जगत् वैष्णव स्वरुप समझे और तापै प्रभु बस है जाय और बस होइवे पर वो जीव प्रभु के प्यारो वन जाय और भक्ति बढ़ावे भक्ति के रस को पोषणहू करे। अब अष्ट सिद्धि के पद वार्ता या प्रकार है।

(१) साक्षात् सेवोपयोगी देहावाप्ति

श्री यमुने अगणित गुण गिने न जाई।
यमुने तट रेणुलें होत है नवीन तन इनके सुख देन की करों बड़ाई।
भक्त माँगत सोई देत हैं ताहि छिन सो ऐसी करें प्रण निभाई।
कुम्भनदास गिरधर मुख निरखत कहो कैसे करे मन अघाई।

साक्षात् सेवोपयोगी देहाप्ति (वार्ता १५१ किशोरीबाई की)

सो वो किशोरीवाई एक वैष्णव की बेटी हुती और बालपणेसू श्री गुसाईं जी की सेवक भई। पाछे शीतला निकसी तामें किशोरीबाई के हाथ पांव लूले भये और मां बाप तो मर गये हुते एक किशोरीबाई की बहिन हुती वह बहिन एक बेर खबर काढ़ जाती। और किशोरीवाई कूं बालक पणेंसू यमुनाष्टक के पाठ सीखी हुती अष्ट प्रहर यमुनाष्टक को पाठ करती। सो एक दिन किशोरीबाई की बहिन कों रिस चढ़ी तब किशोरीवाई कूं खवायवे न आई। तब श्री यमुनाजी पधारिके किशोरीवाई कूं रसोई करिके प्रसाद लिवायकें गये। वाही दिन आधो रोग मिटि गयो।

दूसरे दिन यमुनाजी ने ऐसी कृपा करी तब सगरो रोग मिटि गयो तीसरे दिन किशोरीबाई स्वयं रसोई करन लगी और महाप्रसाद लियो। चौथे दिन किशोरीवाई रसोई करन लगी वाही समय किशोरीवाई की बहिन आई चार दिन भये किशोरीबाई ने कछू खायो पीयो न होयगो ये खबर देखवे आई तब देखे तो किशोरीवाई तो रसोई करि रही तब बहन चकित भई मन में विचार कियो लूलोपन कैसे मिटि गयो। फेर किशोरीवाई की बहन ने गाम के लोगन कूं कही सब देखवे आये। सब विस्मित भये फेर वा गाम में गुसाईंजी पधारे किशोरीवाई चलिके दर्शन करिवे गई और विनती करी मोकूं सेवा पधराय देऊ। गुसाईं जी ने आज्ञा करी तुम्हारे पर श्री यमुनाजी ने कृपा करी सो मैं तुमको

यमुनाजी की रेती एक थैली पधराय देऊँ। सो श्री गुसाईंजी ने रमन रेती की थैली दीनी सोपधराय के सिंहासन पे मार्ग रीतिसूं सेवा करती किशोरीवाई के ऊपर ऐसी कृपा भई कई दिन श्रीनाथजी कई दिन नवनीतप्रिय आदि सातों निधि दर्शन देते। सब स्वरूपन के लीला दर्शन होते।

तल्लीलावलोकनत्व—

भक्त पर करे कृपा श्रीयमुना जी ऐसी।
छांड़ निजधाम विश्राम भूतल कियो प्रकट लीला दिखाईजु तैसी।
परम परमार्थ करत है सबन को देत अद्‌भुत रूप आप जैसी।
नन्ददास यों जान दृढ़ करि चरन गहे एक रसना, कहा कहूँ विशेखी।

२—वार्ता २०६ श्यामदास अजान कुनवी—

सो वे श्यामदास गुजरात में रहते। जब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब श्यामदास गुसांईजी के सेवक भये। फेर बहुत दिन रहिके श्यामदास गोकुल गये नवनीतप्रियजी के दर्शन किये। गुसांईजी के संग गोपालपुर गये तब उहाँ श्यामदास जी को मन बहुत लग्यो। गुसांईजी सों विनती करी में जन्मपर्यन्त इहाँरहूँगो। सो कछू मोकू सेवा बताओ। तब गुसांईजी ने श्यामदास को फूल घर सेवा सौंपी। तब श्यामदास ने गुसांईजी सों विनती करी, मोकूं फूलन को सरूप कृपा करिके समझावोतो आछो। तब गुसांईजी ने आज्ञा करी, जो व्रजभक्तन गोपीजन तिनके चित है सो पुष्प होयके श्रीठाकुरजी के अंग को स्पर्श करे है। ये सुनिके श्यामदास बहुत प्रसन्न भये। कबहूँ पुष्पन में पात न लगावते। और धोये बिना हाथ न लगावते। कुम्हलाय न जांय या प्रकार स्वरूपमान पुष्प सेवा करते। एक दिन श्यामदास ने गुसांईजी सों पूछी फूलन को ऐसो सरूप है तो बिनकूं सुई सों पिरोये कैसे जाय? तब गुसांईजी आज्ञा किये। सुई है वह सूची है व्रज भक्त के चित में भगवत्सम्बन्ध की सूचना करे है। वा सूचना सों व्रज भक्तन को चित्त बहुत प्रसन्न होय है। आज हमारो भगवत् सम्बन्ध भयो अब तुरंत अंगीकृत होयेंगे। ये सुनके श्यामदास को सब संदेह निवृत भयो। एक दिन श्यामदास देखे तो व्रज जन को यूथन के यूथ फूल घर के फूलन में देखे तब श्यामदास ने पूछी आप कौन हैं? पहचानूं नहीं। तब व्रज भक्त बोले हम पुष्प हैं, जो तुम माला अंगीकार करावो सो स्वरूप है। तू कछू मांग तब श्यामदास ने कही मेरो चित्त कोई दिन हू सेवा छोड़ के कहूँ न जाय। वे व्रजभक्त अस्तु कहे और ये बात श्यामदास ने गुसांईजी सों कही सो श्यामदास को तल्लीलावलोकनत्व शक्ति मिली।

३ तद्रसानुभव—

हेत कर देत श्रीयमुने वास कुञ्जे।
जहाँ निसिवार रास में रसिकवर कहाँ [illegible] वरनिये प्रेमपुञ्जे।
थकित सरितानीर थकित व्रज वधूभीर [illegible] ना धरतधीर मुरली सुनीजे।
चत्रभुजदास यमुना पंकज जानि [illegible] चित्त लाय लीजे।

वार्ता २०३ एक क्षत्री वैष्णव गु[illegible]—

सो वे क्षत्री वैष्णव चाचाजी [illegible] जाते हुते। सो वो वैष्णव भगवद्वार्ता करते भगवद्रस में मग्न [illegible] और विनकी रहस्य वार्ता श्रीगोवर्द्धननाथजी सुनते सो वें क्षत्री [illegible] भूलि गये और चाचाजी सो न्यारे परि गये सो एक गाम में गये वा गा[illegible] वैष्णव रहतो हुतो वो वा क्षत्री वैष्णव कूं अपने घर ले गयो और [illegible] भगवद्वार्ता करन वैठे सो रसावेश है गयो देहानुसंधान न रह्यो श्रीगोवर्द्धन[illegible] विनकी वार्ता ठाड़े-ठाड़े सुनत रहे। तब चाचाजी बिनकूं ढूंढ़वे निकसे। सो [illegible] विनसों मिले तब भगवद् रस में छके आधी रात बीति गई। श्रीगो[illegible]नाथजी कोंउ जागरो भयो तोंहूँ वाकों देसानुसंधान न भयो चाचाजी विनके [illegible] ठाड़े रहे और चाचाजी ने उनकूँ हाथ पकड़ के उठाये। देहानुसंधा[illegible] और कही तुमतो भगवद्रस में छके रहे। प्रभू श्रीगोवर्द्धनधर को श्रम होय [illegible] जासूँ सँभार के क्यों करो। चाचाजी बिनकूँ संग ले गये।

४ सर्वात्मभाव—

रास रस सागर श्रीयमुनेजु जानी।
बहतधार तन प्रतिछिन नौतन रा[illegible] मांझ ठानी।
भक्त को सहे भार देतजु प्राण आ[illegible] बोल मधुर बानी।
श्रीविट्ठल गिरिधरन वरबस किये [illegible] महिमा बखानी।

वार्ता २४५ मधुकर साह राजा की वार्ता

सो मधुकरसाह ओरछा नगर को राजा [illegible]। सो श्री गुसांईजी कोई समय ओरछा पधारे सो वो राजा सेवक भयो और [illegible]कुरजी पधराय के सेवा करन लग्यो जो कोई वैष्णव आवतो ताको बहुत स[illegible]र करतो जो कोई भी कंठीबन्द आवतो वाके चर्ण स्पर्श करतो पांव धोवतो। [illegible] देख के वाके भाई बन्धु मसकरी करते फेर एक दिन राजा के काका ने एक ग[illegible] मँगाय के वाकू दस बीस कण्ठी पहराय तिलक कर राजा के पास पठायो तब [illegible] राजा ने गर्दभ के चर्ण स्पर्श किये और पग धोये। चरणामृत लियो वा [illegible] शुद्ध भाव देखिके श्रीठाकुरजी

वामें प्रकट भये और राजा को दर्शन दिये और आज्ञा करी कछू मांग । तब मधुकरसाह ने मांग्यो जो मेरो भाव वैष्णवन में ऐसो ही बन्यो रहे । जिनकी कृपा ते आपने दर्शन दिये । ठाकुरजी प्रसन्न होय के कही ऐसो ही तेरो भाव रहेगो ।

(५) भगवत वशीकरणत्व

कोनपै जात श्री यमुने जुवखानी ।
सबन को मन मोहत मोहन पियासों पिया को मन जु हरनी ।
इन बिना एक क्षण रहे न जीवनधन ब्रज चन्द मन आनन्द करनी ।
श्री विट्ठल गिरिधरन संग आप भक्तन के हेत अवतार लेनी ।

वार्ता १९६ मान कुंवरवाई

सो वो सेठ की बेटी हुती । दस बरस की विधवा भई । तब थोड़े दिन पाछे श्री गुसांईजी गुजरात पधारे तव वा सेठ की बेटी कूं ब्रह्म सम्बन्ध करायो और श्री मदनमोहनजी की सेवा पधराय दीनी सो वो सेठ की बेटी मदनमोहनजी की सेवा करन लगी । सो वा मान कुवर वाई ने जन्मसुधी सेवा करी जन्म सुधी मदनमोहन जी के बिना कोई स्वरूप के दर्शनहू न किये और घर सों सेवा छोड़ के बाहर हू न गई । और ये निश्चय राख्यो मदनमोहनजी जैसे सब ठाकुरजी होयगे । जब मान कुंवर वाई ६० वर्ष की भई तब वाको पिता भगवच्चारणविन्द में पहुच्यो । तब मनुष्य राखि के सेवा करती । फेर एक दिन एक विरक्त वैष्णव वा गाम में आयो और मान कुंवरवाई के घर उतर्यो शीत काल के दिन हुते श्री ठाकुरजी की झांपी देके तालाब में न्हायवे गयो तब मान कुंवरबाई ने ठाकुरजी जगाये । सो ठाकुरजी बालकृष्णजी हुते । और वाने मदनमोहनजी बिना और ठाकुरज देखे न हुते । तब मानकुंवर वाई समझी जो श्री ठाकुरजी ठण्ड के लिए ऐसे सकुच गये हैं । ठंड बहुत पड़े है वा वैष्णव ने कछू मान नहीं राख्यो ऐसो विचार कर नेत्रन मेंसे आंसू डारे । बहुत मन में ताप कियो । अंगीठी लाय के तेल लेके अनेक प्रकार की गर्म ओसधी डार तेल को जराय तातो सुहातो श्री ठाकुर जी के हाथ पांव मसले (मीड़े) और मन में समझी जो प्रभू को बहुत श्रम भयो क्षमा याचना करन लगी । ऐसी प्रार्थना तथा शुद्ध हृदय देखि के श्री बालकृष्ण लाल मदनमोहनजी बनि गये । तब डोकरी ने राजभोग धरे वैष्णव ने आय के दर्शन किये गद्दल में विराजे हुते । कछू समझ नहीं पड़ी ऐसे करते पंदरह दिन रहे फेर मानकुंवर बाई ने वैष्णव सो कही शीतकाल के दिनन में यही रहो । फेर थोड़े दिन रहे जब फागण को महीना आयो तब चलिवे की तैयारी करी ठाकुरजी पधरावे की टेम मान कुंवर वाई सो वा वैष्णव ने झगड़ो कियो कि तेने मेरे ठाकुर जी पलटाय दिये मेरे ठाकुरजी न देगी तो तेरे आगे प्राण छोड़ूंगो ।

वाई ने कही मैंने तेरे ठाकुरजी पलटाये नहीं हैं । बहुत झगड़ा भयो फेर दोनों जने श्रीगोकुल गुसांईजी के पास आये विनती करी गुसांईजी ने दोनोन की बातें सुनी और झापी लेके श्रीगुसांईजी ने खोली तब ठाकुरजी देखे ठाकुरजी आज्ञा किये डोकरी के भाव सों में मदनमोहनजी भयो हूं याने कोई दिन भी दूसरे सरूप के दर्शन न किये तब गुसांईजी ने झगड़ो चुकायो और वैष्णव सों कही ये ही तेरे ठाकुरजी हैं तब डोकरी ने कही ऐसे तेने ठाकुरजी कों ठंडन मारे सो ठाकुरजी नहीं पधराय देने चाहिए गुसांईजी हँस गये फेर वो डोकरी सो वैष्णव बोल्यो जीवन भर तुम्हारे यहाँ रहिके टहल कराऊगो फेर श्रीनाथजी के दर्शन किये जमना पान किये डोकरी अपने गांव आप सेवा करन लगी ।

भगवत् प्रियत्व (६) भगवत् तात्पर्यज्ञत्व—

धन्य श्रीयमुने निधिदेन हारी ।
करत गुणगान अज्ञान अघदूरि कर जाय मिलवत पिय प्राण प्यारी ।।
जिन कोऊ संदेह करो बात चित्त में धरो पुष्टि पथ अनुसरो सुखजुकारी ।।
प्रेम के पुञ्ज में रासरस कुञ्ज में ताहि राखत रसरंग भारी ।
यमुने अरुप्राण पतिप्राण अरुप्राण सुत चहु जने जीव पर दयाविचारी ।।
छीत स्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रीति के लिये अब संगधारी ।।

वार्ता ८९ विरक्त वैष्णव एवं सेठ आगरे में रहतो—

सो वो विरक्त वैष्णव चुकटी मांग के निर्वाह करतो और ठाकुरजी की सेवा भली-भांति सो करतो ।

ठाकुरजी वाके ऊपरि बहुत प्रसन्न रहते । फेर कोई दिन वा सेठ को विरक्त वैष्णव सों मिलाप भयो तब वा सेठ ने कही ठाकुरजी पधराय के मेरे घर में रहो तुम हम हिल मिल के सेवा करें तब वा विरक्त ने ऐसो ही कर्यो सेठ के घर में जायके रह्यो । और जो बाहर की सामग्री चहिती बो विरक्त खरीद लावतो एक दिन बाजार में नयो खरबूजा आयो पहल-पहल । तब विरक्त वैष्णव खरबूजा खरीदवे लग्यो एक रुपैया खरबूजा वारे ने कीमत बताई । विरक्त देवे लग्यो पास में उहाँ वड़ी जात वारो (यवन) खड़ो हुतो वो बोल्यो सवा रुपैया दऊँगो वैष्णव बोल्यो में डेढ़ दऊँगो ऐसे करत-करत दोनों सामासामी बढ़े । करत-करत हजार तक बढ़े विरक्त ने एक हजार में खरबूजा लियो फेर लेके घर आयो और खरच लिखवायो तोऊ सेठ कछू न बोल्यो न कछू पूछी हू । फेर श्री ठाकुरजी ने खर-बूजा उठाय लीनो और सिंहासन पै धरिके खेलन लगे । जब उत्थापन को समय भयो तब सेठ ने खरबूजा ठाकुरजी के पास सिंहासन पै देख्यो । सेठ बहुत प्रसन्न

भयो मन में कही जो विरक्त धन्य है जाने एक हजार के खरच ते डर्यो नहीं। और सेठहूने विरक्त के लिये मन में अभाव न लायो दोनों ऐसे कृपा पात्र प्रभु प्रियत्व यों सेवा में होत है।

(७) भक्तवात्सल्य—

श्रीयमुनासी नहीं कोई और दाता।
जो इनकी शरण में जात है दौर के ताही कों तेही छिन करे सनाथा।
एही गुण गान रसखान रसना एक सहस्र क्यों न दई विधाता।
गोविन्द बलि तन-मन-धन बारने सबहिन को जीवन इनही के हाता ॥ १ ॥

वार्ता ४५ कुणबी गुजरात के वासी—

यह वैष्णव तादृशी हुते श्रीठाकुरजी ताकूं सानुभाव जतावते सो वैष्णव चाचा जी के संग गुसाँईजी के दर्शन कूं व्रज गयो। रस्ता में एक गाँव हुतो। वा गाम में एक ब्राह्मणी हुती वा ब्राह्मणी को गलित कुष्ट हुतो और कीड़ाहू पड़ गये हुते। सो ब्राह्मणी को बेटा नदी ऊपर ताकूं धोयवे ले गयो हुतो। पहवे धोती धोई ताके छीटा वा ब्राह्मणी पै परे सो जा ठिकाणे छीटा पड़े वो अंग को कोढ़ मिटि गयो तब वो ब्राह्मणी वैष्णव के पावन परी और कह्यो जो मेरी शरीर की ये व्यवस्था है परन्तु तुम्हारी धोती के छीटन ते मेरो शरीर इतनी नीको भयो है तब वा वैष्णव ने कही में तो शूद्र हूँ तुम ब्राह्मण होय के मेरे पायन मति परो। जब ब्राह्मणी ने हाथ जोड़ कही तुम तो बड़े महापुरुष हो मेरे दुःख तुम बिना दुसरो को न दूर करे जासों मोरे पर कृपा करो तब वो वैष्णव कूं चाचाजी के पास ले गयो सब व्रतान्त कहे चाचाजी ने नाम सुनायो और चरणामृत दियो वाको सब कोढ़ मिटि गयो ब्राह्मणी आछी होई घर गई वाको शरीर स्वस्थ देखि गाम के लोग चाचाजी के पास आये और सबन ने नाम सुन्यो और पुष्टि मार्ग रीति सीखें। ब्राह्मणी वाको बेटा सब वैष्णव गोकुल गये और गुसाँईजी के सेवक भये।

(८) भगवद् रस पोषकत्व—

भक्त इच्छा पूरण श्रीयमुनाजु करता।
बिना माँगेहु देते कहालौं कहों देस जैसे कोऊ काहू को होय धरता।
श्रीयमुना पुलिन रास व्रज वधू लिये पास मंद-मंद हास करत मनजु हरता।
कुम्भनदास लाल गिरिधर मुख निरख यही जिय लेखत श्रीयमुनाजुभरता।

वार्ता १६४ पर्वत सेन हुते—

सो पर्वत सेन के मन में ऐसी हुती जो श्री गुसाँईजी श्रीनाथजी को श्रीनाथजी साक्षात् सरूप है परि दर्शन ऐसे होंय तो नीको। एक दिन बैठक में श्रीगुसाँईजी

बिराजे हुते। और पर्वतसेन कों आज्ञा किये कि चन्दन लगाऊ, तब पर्वतसेन ने श्रीगुसाँईजी के चन्दन समर्प्यो तब गुसाँईजी के रोम-रोम में श्रीनाथजी के दर्शन भये। पर्वतसेन विचार में परि गयो। मैं स्वप्न देखत हों—तब गुसाँईजी आज्ञा किये पर्वतसेन तुमको कहा संदेह है। तब पर्वतसेन ने कही कृपानाथ मोकूं संदेह मिट्यो। और पर्वतसेन के मन को संदेह दूरि भयो और लीलानुभव भयो। उनने कई पद बनाये।

तो या प्रकार यमुना महाराणी के रस लीला पूर्व अष्टक के पाठसों आठ सिद्धि तथा सेवानुगत देह मन इन्द्रिय जब अंगीकृत होय तब तीन मास सेवा के दर्शन होंय। आप श्रीके के सेवा क्रम में महारास के द्वादश अंग वारी तीन मास की सेवा या प्रकार होवे है। वैसाख वन बिहार। ज्येष्ठ जल बिहार। अषाढ़ क्रीड़ा पुष्प शृंगारादि। अतः यासों ही सारे ज्येष्ठ में आपके गुणगान होय। परिसमाप्ति में स्नान यात्रा सवालक्ष आम्रभोग में आवें।

वैसाखवदी प्रतिपदा (श्री यमुनाजी की सेवा)।

प्रथम शृंगार श्री महाप्रभु वल्लभ के जन्मोत्सव के पूर्व पद के आधार पर आज शृंगार होय। वस्त्र लाल। वागा खुले बन्द को। चाकदार केशरी धोती। केसरीउपरना के सरोपाव। आभूषण पन्ना मोती के मोर चन्द्रिका। सादा कर्णफूल होय छोटो मध्य को शृंगार। लूमा सिर पे। पिछवाई चितराम की। श्रीजी पलना झूलते भये। एक ओर गोस्वामि गोवर्धनलालजी और दामोदरलाल जी झुनझुना बजावते तथा एक ओर नन्द बाबा एवं यशोदाजी चौक तिवारी में पद के भाव को शृंगार। यह पद सारंग राग में—

केसर की धोती पहरे, केसरीउपरना ओढ़े,
तिलक मुद्रा धरें बैठे श्री लक्ष्मन भट्ट धाम।
जन्म घोष जान-जान अद्भुत रुचि मान मान नख,
शिर की शोभा ऊपर वारों कोटि काम।
सुन्दरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई आस,
पास युवति जन करत है गुण गान।
पद्मनाभ प्रभु विलोक गिरिवर धर वागधीश,
यह अवसर जे हुते ते महा भागवान।

यह धोती उपरना को शृंगार होय है। यामें कछु नियम नाहि। जब कबहूँ बधाई बैठे ये होय है। यामें लक्ष्मण भट्ट के धाम आचार्यश्री केशरी उपरना

धोती धराय तिलक मुद्रा करि बिराज रहे हैं। सुन्दरता अनुपम है। तेज हू अति प्रबल है। जन्मघोष पे अद्भुत अपनी-अपनी रुचि अनुसार आप सबन के काम पूरण करें हैं। आस पास युवतिजन आपके गुण गान कर रही हैं। काये ते—आपहू निकुञ्जेश्वरी श्री स्वामिनीजी है। आपके श्रीचरणन में स्वामिनीजी के चरणचिन्ह वत् चिन्ह है। अतः वा समें जो दर्शन करत हुते ते महा भाग्यवान हुते। आज की सेवा कृष्णावेसनीजी की होय है।

वैसाख वदी २ श्रृंगार ऐच्छिक (जमनाजी की प्रिय सखी)

श्यामाजी की सेवा क्रम पीले रेसमी फूल वारी अब्बलचडी के वस्त्र। पिछवाई खण्ड वस्त्र। सब एकसे खुले बन्द को वागा। फेंटा श्री मस्तक पै। मध्य को श्रृंगार। मोर शिखा ठाड़े वस्त्र। लाल आभरण शोभते आज की सेवा श्यामाजी की।

वैसाख वदी ३ ऐच्छिक श्रृंगार। वस्त्र पिछवाई खण्ड। गुलाबी रेसमी फूलवारे सफेद फूल। घेरदार वागा। सूथन; पाग। छोटो श्रृंगार। आभरण सोना के। चैत्र वदी से अक्षय तृतीया पूर्व फूल के आभरण भी आवे। शयन में तथा भोग सरे बाद भोग में आरती। भोग, उत्सव भोग संग आवे फेर आभरण बड़े होय जाँय। ये श्रृंगार वन में श्रीमद्भागवताधार पर होय है। घर आय के विराजे बाद शयन में नित्य होय। यदि शयन में आभरण धरें तो निकुञ्ज में प्रिया प्रीतम परस्पर श्रृंगार कर शयन रास लीला करै। दान करें। ये भी निकुञ्जलीला के भाव सों श्रृंगार होय। आज की सेवा ईश्वरीजी की।

वैसाख वदी ४ श्रृंगार ऐच्छिक।

वस्त्र गहरे गुलाबी धरे। पिछवाई खण्ड सहित श्रीमस्तक पर पगा मोर शिखा। आभरण पन्ना मोती के। ठाड़े वस्त्र श्याम। वागा खुले गले को चाकदार। आज की सेवा छबिधामाजी की।

वैशाखवदी पंचमी श्रृंगार महाप्रभुजी के उत्सव को। परचारगी। नौवत की बधाई बैठे। वस्त्र रंगीले। ये श्रृंगार होय है। दिन निश्चय सो है। नौवत की बधाई बैठवे पर उत्सव को श्रृंगार होय। ये सब उत्सव चार यूथनायिकान के एक-एक श्रृंगार एक-एक की आड़ी सों होय। परचारगी श्रृंगार पहले तथा दूसरे दिन उत्सव के तथा बधाई बैठे तवा और उत्सव के दिना या प्रकार चार श्रृंगार होय। सो ये दूसरो श्रृंगार है। दो जोड़ को हू। यहू महाप्रभुजी के श्रृंगार वन चौखटा फूलन को आवे। वस्त्र मलमल के। केसरी वागा खुले बन्द को।

सफेद किनारी को सूथन। कुल्हे तथा पिछवाई खण्ड मलमल की। कुल्हे जोड़ मयूर पक्ष को। कुण्डल हाँस त्रवल वन माला के। श्रृंगार ठाड़े वस्त्र स्वेत। जोड़ मयूर पक्ष को। चोटी हास। नौवत की बधाई बैठे। सब आगे दर्शनन में नगारा बजे। शंखनाद होय माला बोले। रसोईया बोले तब नौबत बजे। तथा मांगलिक सामग्री आवे। वस्त्रहू माँगलिक ही आवे। जब भी फूल को चौखटा मण्डनी आवे वो राजभोग माला बोले बाद भोगसरे बाद आवे। सन्ध्यार्ति होय चुके बाद वड़ी होय जाय। आज की सेवा रस प्रकाशिकाजी की है।

वैशाख वदी छठ—वस्त्र कसूमल खुले बन्द चाकदार गरमी होवे सों पटकान धरिके। पीरी धोती धरी जाय। श्रृंगार ऐच्छिक। पाग पीरी सादा। आभरण पिरोजाके। कसरा नागफणी को सलमासिताराकी। आज की सेवा भामाजी की।

वैसाखवदी ७ ऐच्छिक वस्त्र। फूल गुलाबी चाकदार वागा। खुले बन्द को। दुमाला भीमसाई तुर्रा। आभरण हीरा मोती के। मध्य को श्रृंगार। कर्णफूल चार। बीच में मोती वारो लूम तुर्रा। मनोहराजी सेहरा को श्रृंगार एक लेय है और स्वामिनी भाव सौं वल्लभ है यासों करे है।

वैशाखवदी ८ ऐच्छिक श्रृंगार। वस्त्र पीरे नीबूवा वागा चाकदार मोर चन्द्रिका सादा पाग वाम कतरा मोर पक्ष को पिछवाई खण्ड। सब मलमल के पीरे ठाड़े वस्त्र सोसनी।

'हेरि हेरि रे मैया होरी है'। या भाव को पद गथ्यो पर पीपरोप्योसार को रानी जसुमति पहरे सेवा तुंगविद्याजी की।

वैशाखवदी ९ महाप्रभुजी के उत्सव के पूर्व छठी को करे। वह श्रृंगार वागा घेरदार, पाग, सूथन कसूमल ठाड़े वस्त्र पीरे मोर चन्द्रिका सादा कटि को पटका। पन्ना मोती के आभरण। छोटो श्रृंगार। वस्त्र जैसे किनारी सफेद के खण्ड पाट। पिछवाई सेवा कुमोदिनीजी की।

विशेष शीतकाल में कबहुँ-कबहुँ तथा विशेष कर बिना किनारी के वस्त्र धरें। तथा उष्णकाल में भी जेठ में तथा गरमी में बिना किनारी के भी कबहु-कबहु वस्त्र धरें।

वैशाखवदी १० गोस्वामी तिलक श्रीगोवर्धनलालजी महाराज कृत पाँच स्वरूपोत्सव—

यह उत्सव विक्रमाब्द १९६६ में आज—के दिन श्रीनाथजी में छप्पन भोग भयो ताको वर्णन कविवर घनश्यामजी ने विशेष रूप से कियो है। ता उपलक्ष्य में श्रीनवनीतप्रिय तथा मथुरानाथजी श्रीद्वारकानाथजी प्रभृतिन को पधराय के

जो-षड्ऋतु मनोरथ किये, वो या प्रकार है। मथुरानाथजी नाथद्वारा पधारे। बाद में चैत्र शुक्ला ९ को श्रीनवनीतलाल लालबाग में पधारे और १६ दिन बिराजे। षोडषकला रूप सो भक्तन को आनन्ददान दियो। रस वर्षाय के तामें नवीन नवीन मनोरथ हू किये। श्री गो० ति० गोवर्द्धनलालजी महाराज तथा उदीयमान दामोदरलालजी बाबा साहेब ने जो प्रभु सुख पहुंचाये वो या प्रकार वर्णन मिले है।* **चित्राजी** की आड़ी की सेवा—

चैत्र शुक्ला ९ को नवनीतलाल लालबाग पधारे राजभोग आरती उतारे बाद खुले। सुखपाल (चक डोल) में बिराजे दोनों मन्दिर श्रीनाथजी एवं नवनीत लाल के कीर्तनियान ने अलापचारी सारंग की करी। सबसे आगे नगारो निशान गोपाल बेंड, फौज तोपखाना, रसाला के घोड़ा, हाथी, ध्वजा पताका छात्री छड़ी तामझाम, छत्र, भँवर, छड़ीदार श्रीनाथजी के समाधानी सेवक वर्ग वैष्णव वर्ग गोस्वामी बालक बहू बेटी गो० ति० गोवर्द्धनलालजी प्रभृति चारों और सुखपाल चकडोल के बीड़ी अरोगते पधारे। बालक बहू बेटीन के इरद-गिरद श्रीजी नवनीतप्रिय के सेवक वर्ग श्रीगोवर्द्धन पूजा के चौक सो होय के मालन दरवाजा होय, लाल बाजार होय, फौज सिहाड़ होय, लाल बाग पधारे। जब सुखपाल सेवकन के कंधन पर हाथन पर उठाते ही ये पद सुरू भयो सारंग में—

चलो किन देखन कुञ्ज कुटी।
मदन गोपाल जहाँ मधनायक मन्मथ फौज लुटी।
सुरत समर में लरत सखी की मुक्ता माल टुटी।
उरज तें जु कंचुकी चुरकट भई कटि पर ग्रंथि खुटी।
रसिक शिरोमणि सूर नन्दसुत दीनी अधरघुटी।
परमानन्द गोविन्द ग्वालिन की नीकी जोटजुटी।

मालनी दरवाजा के यहाँ ये पद भयो—
खेलत कुञ्ज गोपाल जहाँ, आगेहु खेलत बाल गोविन्द।

जब लालबाग पहुँचे तब सिहाड़ के तलाब ते—
लालन देखि ये भवन हमारो।

या प्रकार कीर्तन भये सबन के हाथन में कनेर की छड़ी हुती। कृष्ण भण्डार के अधिकारीजी चरणदासजी ने चाँदी सोने के फूल उछारे उत्साह करत

---

*श्रीजी के बीनकार भगवदीय जमनादासजी की पोथी सो उतारी।

गये लालबाग के द्वार पर सुवासनीन के मंगलगान सों प्रभु के सन्मुख कलश बधायो मार्जन भयो।

पाछे लालबाग के भीतर चबूतरापे फूलमण्डनी चेती गुलाबन की भई दर्शन भोग आयके सायं नित्यक्रम सेवा भई। शृंगार रामनवमी को रह्यो।

चैत्र शुक्ला १० जन्माष्टमी को उत्सव—

शृंगार रामनवमी को। परचारगी कल्ल वारो, चबूतरापे पलना भयो। सो नन्द यशोदा गोपी ग्वाल सब भये। श्री चि० बाबासाहेब दामोदरलालजी यसोदाजी बने। दर्शन खुले पे पेड़ा, बरफी ग्वाल बालन ने लुटाये दर्शन राजभोग के ओर पलना के सामिल भये। दर्शन पाँच बजे तक भये। अनोसर न होय के सेवा चालू रही। रात्री को आठ बजे शयन होय। अनवसर भये। पद या प्रकार भये विविध सामग्री भोग आई। आरती में राई लौन निछावर भये। दर्शन खुलत में तोप चली। जब जब दर्शन खुलते तब तोपे चलती। आठ कीर्तन होते। जब नन्द यशोदा पधारे तब "अहो ब्रज भयो महर के पूत" जब गोपी ग्वाल पधारे तब "वे निकसी देत अशीष" पाँच पलना गवे। "प्रेंखपर्यङ्क शयनं"—

झूलो पालने गोविन्द।
दधि मथों नवनीत काढ़ो तुमकों आनन्द कन्द।
कण्ठ कठुला ललित लटकन भृकुटी मन के फन्द।
निरख छबि छिन-छिन झुलाऊँ गाऊँ लीला छन्द।
द्वे दूध की दतियां सुख की निधिया हसत जस कछु मंद।
चत्रभुज प्रभु जननी वलि-वलि गिरधरन गोकुलचन्द।

सुन्दर श्याम पालने झूले,
ललितत्रभंग लाडले ललना।

तुम ब्रजरानी के लाला अहोदधिमथत सुहाई के लाला।
गिरधर लाल पालने झूले,
माईरी कमल नेन श्यामसुन्दर।
हालरो हुलरावे माता।
आशीष गवी—रानीजू तिहारो धर सुबस बसो—

ऊपर पधार के यशोदाजी ने चरण स्पर्श दीने उनके राई लौन निछावर समस्त लालक बहू बेटीन ने किये। अपार भीड़ने दर्शनको आनन्द लियो।

फेर एक बधाई आशिष की गंगादासजी कीर्तनीया के मुखिया ने गाई।
युग-युग राज करो श्रीगोकुल।

चैत्र शुक्ला ११ दान—दान को उत्सव भयो महाप्रभुजी के उत्सव की बधाई बैठी। श्रीजी में हू महादान भयो श्रृंगार मुकुट काछनी के सब सरूपन के भये वस्त्र लाल केसरी काछनी। श्रीजी में तथा यहाँ हू दान की पिछवाई, आभरण, चोतरा के पास दानघाटी पे बिराजे। सजावट श्रीदामोदरलालजी ने ठाड़े रहिके कराई ब्रजभक्त गोपी दधि दूध हाँडी लिये बड़ो दान गव्यो "श्री गोवर्द्धन की शिखर लेहो मोहन" चार घन्टा तक दर्शन भये। तोपें चली श्रीजी मेंहू ऐसे दर्शन भये।

साझकूं राधाविलास की सादडी पे साँझी को मनोरथ भयो। पधारे तब ये पद गावत पधारे 'सब मिल आई लाडली ब्रषभान" वहाँ दर्शन भये भोग आये पाछे दर्शन खुले। राई लोन नोछावर भये पाछे जब पधारे तब ये पद को गान भयो।

लाल कह्यो अब हम घर जैहैं मैया जानत नाय।
पाछे शयन होइके नित्यक्रम सेवा भई।

चैत्र शुक्ला १२ गुसाँईजी के उत्सव। साँझ को दिवारी राज भोग में तिलक भयो। पहले बधाई गवी। श्रृंगार दोनों ठिकाने उत्सव को। कुल्हे जोड़ दो, जोड़ के श्रृंगार कुंडल हास त्रवल चोटि आदि। श्रीजी में वागा चाकदार खुले बन्द को। ठाड़े वस्त्र मेघश्याम। दिन भर बधाई गवी। सामग्री विट्ठलनाथजी के उत्सव वत् आधोनेग दियो जाय।

साँझ कों चोतरा पर हटडी भई। तथा हटडी में भोग आये। गाय खिलावे के पद भये हटडी के पद भये। रोसनी दीपमालिकावत् भई। श्रीनाथजी में शयन में हटडी काच की भई। भोग विशेष आये। दर्शन नहीं भये। कीर्तन हटडी के भये शयन मात्र में।

चैत्र शुक्ला १३ वसन्त एवं डोलोत्सव मंगला श्रृंगार राज भोग सरे तब तक बधाई गवी। वस्त्र श्रृंगार डोलवत। डोल कुण्ड की तिवारी में भयो। पधारते समय अलापचारी होयकें ये पद गव्यो—

"चली भरन गिरधरन लालकों बनि बनि अनगन गोपी"

या पद को भाव वा समें पे हुतो गोवर्धनलाल को अथवा श्री नवनीतप्रिय को समस्त वैष्णव ब्रज भक्त गोस्वामि बालक। गुलाल अबीर सो खिलावन वन-वन के रंग-विरंगे वस्त्रन सो सज-सज के गोपीभाव सो गई। सन्मुख वसन्त को कलश धर्यो गयो। विराजते ही दर्शन खुले। पदारम्भ भयो। खेल भयो प्रथम सिंहासन पे विराजे पद या प्रकार भये।

"हरि रिह ब्रज युवती सतसंगे" "श्री पञ्चमी परम" आदि।

"आयो वसन्त" "नन्द के द्वारे हम आई" भारी खेल भयो। पोटली सों गुलाल उड़ी। अबीर उड़ी। फेर डोल को अधिवासन होय के वसन्त डोल को। सङ्ग ही भोग आयो।

डोल भोग आमते वर्षा भई भोग सरि के दर्शन खुले एक ही डोल के दर्शन भये। पद या प्रकार गवे।

"घोष नृपति सुत गाइये" "मोहन खेलत होरी"

खेलत वसन्त वर विट्ठलेश। फेर परस्पर वालक खेले। कीर्तनिया सेवक खिलाय के परिक्रमा दीनी पाछे राई लोन नोछावर कर आरती होय के पाछे पधारे। उत्थापन भोग आरती भेले भये। शयन में बधाई गवी। शयन रात्रि को दस बजे भये। श्रीजी में कछू न भयो केवल सामग्री अरोगी और नित्यवत् सेवा भई वहाँ बधाई ही गवी।

चैत्र शुक्ला १४ रथयात्रा तथा हिंडोरा को उत्सव ये मनोरथ दरी में भयो। श्रृंगार दोनों ठिकाने सेहरा के वस्त्र नीवुवा भारी कुण्डल को वनमाला को श्रृंगार मंगला से लेकर राजभोग तक बधाई भई। राजभोग सरे वाद रथ को अधिवासन भयो। रथ में विराजे रथ को भोग आयो। अंकूरी तथा विविध सामग्री भोग आई। और भोग आते "श्याम देख नाचत वन मोर" मेहु की वर्षा भई। दर्शन खुले तब" "तुम देखो भाई रथ बैठे गिरधारी"

बाग की सड़क तक रथ चल्यो समस्त बालक बहू बेटी सेवक वर्ग असंख्य वैष्णवन को आनन्द रस दान मिल्यो फेर आरती भई। एक ही दर्शन भये। राई लोन न्यौछावर भई। फेर उत्थापन भोग आरती भीतर भये शयन के दूसरे भोग आये पाछे चकडोल में विराजे भीतर उत्थापन वगेरे में वधाई के पद ही गवे।

कुञ्ज के तथा वाग के दर्वाजा के सामें हिन्डोला रच्यो। पल्लव तथा पुष्पन को अधिवासन होय के विराजे। अधिक भोग आयो विविध व्यञ्जन चावल भोग आये। ये पद भये।

"निज सुख पुंज वितान सों कुंज हिंडोरना"

दर्शन खुले तब—

"तेसोइ वृन्दावन तेसोइ हरित भूमि तेसीय वीर वधू"
"यमुना तट हिंडोरो रोप्यो कन्हाई"
फूल के हिंडोरा झूले।
माई आज तो हिंडोरा झूले छैया।
सो तू राख लेरी झोटा तरल भये।

यमुनाजी सन्मुख भरी गई। सजावट अति सुन्दर भई। रात्रि को अनवसर १२ बजे भये। दर्शन खूब भये। श्रीजी में हिंडोरा भये। विशेष भोग आये दर्शन श्रावणवत् भये। हिंडोरा पल्लव को भयो।

चैत्र शुक्ला १५ अक्षय तृतीया एवं शरदोत्सव दोनों ठिकाने श्रृंगार नियम के। मुकुट काछनी राजभोग में चन्दन के बंगला में विराजे। चन्दन की खौर भई। और अनवसर चन्दन के बंगला में ही भये। पद नित्य बधाई वारे भये। पाछे राधा विलास के पास चह बच्चा में सिंहासन। स्वेत में शरद की तैयारी भई। बहुत सुन्दर तैयारी भई उत्थापन भोग आरती भये बाद ग्वाल अरोगके शयन भोग के बाद पधार के विराजे तब दर्शन खुले। पद रास के भये चांदनी खूब आई "पूरी-पूरी पूरणमासी पूर्यो है शरद को चन्द्र" शरद में पधारते समय यह पद भयो "चलियेजु नेकु रास मण्डल में" पाछे पधारते समै "देखो गोपाल की आवनी" शयन की सजावट भीतर शरदवत् भई श्रृंगार बड़े होइ के अनवसर भये शरद में विराजे तब राई लोन नोछावर आरती भई भीतर विशेष सामग्री अनवसर में आई। शरद की सामग्री के साथ-साथ श्रीजी में हू विशेष सामग्री अरोगी।

वैशाख बदी प्रतिपदा अद्भुत अनुपम मनोरथ भयो। दोनों ठिकाने वस्त्र हरे पाग। किलंगी माणक मोती के आभरण। छोटो श्रृंगार कर्णफूल को श्रीजी में हरे घेरदार हलके अंगूरी ठाड़े वस्त्र लाल।

यहाँ श्री प्रियाजी सावन भादरवा नामक कुंज में पधारे। वा कुंज मांहि सघनता हुती चारों दिस फुब्बारा की चादर तथा बीच-बीच में हू फुहारा हुते सजावट उष्ण काल की भई तथा वर्षा रितु के पशु पक्षी सजाये गये अद्भुत छटा रही नवनीत पधारे तब ये पद गायो गयो। "चटक वारी पावरी" चारों और ते जब वर्षा सी भई तब "आज सुहानी रात" "आज कछू कुंजन में वर्षा सी" "बरस रे सुहाये मेहा में हरि" "सारी मेरी भीजत है जू नई" आज कहूतें या गोकुल में अद्भुत वर्षा आइ जु। दर्शन चार घण्टा भये भोग आये। भोग सरे बाद दर्शन भये राई लौन न्यौछावर आरती भई। पाछे पधारते समे यह पद गायौ। "लाल भाई भीजत आयेगेह" अनोसर होय के पोढ़े। मान के पद में "यह रितु रूसवे की नाहिन" या प्रकार अद्भुत मनोरथ भयो। श्रीजी में विशेष सामग्री अरोगी।

वैशाखबदी द्वितीया—सावन भादरवा के सामने बाहर भूल-भुलैया को स्थान है। जामें स्वेत संगमरमर की छत्री चारोंदिश वृक्ष लतान में गली रूप छत्री के

चारोदिश वृच्छन में छोटे छोटे गलीयान में जो या तरफ वा तरफ दौड़ खेल सकें। कामबन के चौरासी खम्भ की भाँति ये छोटे रूप में है यामें मनोरथ भयो श्रीनवनीतप्रिय पधारे।

वस्त्र पीरे टोपी वापरी वारी। श्रृंगार छोटो दिन भर बधाई। सवेरे पलना फूलन को चबूतरा पे भयो फूल के आभरण धरें टोपीहू फूल की धरी।

भूल-भुलैया में फेर साँझ को पधारे। भोग आये। छत्री में भोग सरे दर्शन भये सजावट खेल की। बाललीला सम्बन्धी भई। पद या प्रकार गवे जब पधारे तब "खेलन चले बालगोपाल" "खेलन में को काको गुसैया" तथा आँख-मिचौनी के हू पद भये खेल के आरती राई नोन न्यौछावर भई फिर अनवसर भये।

बोल लेहु हलधर भैया को।
मेरे आगे खेल करो कछू नेनन सुख दीजे मैया कों।
में मूंदो हरि आँख तुम्हारी बालक रहे लुकाई।
हारे श्याम तब सखा बुलाये खेलत आँख मिचाई।
हलधर कह्यो आँख को मीचे हरि कह्यो जननी जसोदा।
सूरश्याम लिये जननी खिलावत हर्ष सहित मनमोदा।

"हरि तब अपनी आँख मुदाई" आदि पद भये। फिर पधार के नित्यक्रम सेवा होय पोढ़े। भीतर बधाई गवी।

वैशाखवदी ३–व्रत चर्य्या को मनोरथ वस्त्र गुलाबी मुकुट धरें। पन्ना मोती के आभरण। मंगला में—"भली कीनी भोर आये मेरे" रंगभरी मूरति अनैगनरी अखियां राजभोग तक महाप्रभुजी की बधाई गाई गई।

पाछे तिवारी के चोतरा के पास कमल तलाई पर कदम्ब के डार पर बिराजे। वस्त्र लटकाये गये कमल तलाई में जमना घाट बनायो गयो। व्रजभक्त ठाड़े भये दान घाटी के सामने ये स्थल सिद्ध भयो भोग आये। दर्शन खुले सजावट श्रीदामोदरलालजी बाबा साहेब ने स्वयं खड़े होय के कराई। पद या प्रकार गाये "हरिजस गावत चली ब्रज सुन्दरी" "देहो बसन हमारो" "देहो ब्रजनाथ हमारीं आँगी" "ब्रज नन्दकदम्" आदि पद भये। दो घन्टा दर्शन भये फेर आरती भई राईलोन नोछावर भई भीतर पधार के नित्यक्रम सेवा भई। उत्थापनादि में बधाई गवी।

वैसाखवदी ४–मण्डप प्रबोधनी को। उत्सव वस्त्र सुनहरी किनारी केशरी कुल्हे जोड़ को श्रृंगार। आभरण उत्सव के दिन भर बधाई मंडप के समय महात्तम के। चबूतरा पे गन्ना को मण्डप भयो साँझकूं काच को बंगला भयो। रोसनी भई।

दिवारी के पद्र गवे । आरती राईलोन नोछावर भये भोग अधिक एक ही आयो । हटड़ी को अलग आयो ।

वैशाखवदी ५—वस्त्र हरे मुकुट काछनी । मानक के आभूषण राजभोग तक बधाई । सांझ को चोतरा पे सजावट भई काच को हिंडोरा भयो । तब हांडी लटकी रोसनी भई झाड़-फानूस आये सन्मुख मृदंगादि आये । अधिवासन होय बिराजे अधिक भोग आये बाद दर्शन खुले । पद ये गवे "झूलत कुञ्जन में" "झूलत नन्द आगन में" "आज लाल झूलत" "राधाजू झूला" "सो तू राख लेरी" बाद अनवसर भये । बधाई भई ।

वैशाखवदी ६—आज लालबाग में नित्य सेवा भई आज कांकरोली सों द्वारकानाथजी पधारे ब्रजपुरा में धूम की खोली उतरी । बाजा गाजा बेन्ड सिपाही लवाजमा गयो । कीर्तनिया नवनीत के गये तलपद गायो "सुन्दर ब्रज की बाला" पहले श्रीमथुरानाथ जी को पधारवे टीकेत छड़ीदार समाधानी कीरतनियादि गये । वहाँ मथुरानाथजी ग्वाल अरोगके पधारे तब ये पद गायो "आये देव विमानन चढ़ि चढ़ि" फूलन की वर्षा भई फेर श्रीनाथजी के पास बिराजे द्वारकानाथजी को पूर्वोक्त रीती सो पधराये गये । फेर दोनों स्वरूप श्रीजी के अगल-बगल बिराजे और राजभोग आये । कीर्तनिया गली में कीर्तन भये "श्रीब्रषभान सदन भोजन को" और बधाई के पद गवे ।

श्रीनाथजी को शृंगार केशरी वस्त्र बाग चाकदार लूम की किलंगी दुमालावे । श्रीमथुरानाथजी के टिपारा मोर पच्छ को । जोड़ वस्त्र अधरंग श्रीद्वारकानाथजी के गुलाबी वस्त्र । कुल्हे मुकुट को शृंगार विविध सामग्री भोग में आई भोग सरे बाद तीन बजे दर्शन खुले फेर दर्शन होय चुके बाद चालू सेवा रही उत्थापन भोग आरती शयन होय के पोढ़े सन्मुख दशंन में ये पद गाये—"नन्द बधाई ग्वालन दीजे" "नन्द बधाई बांटत ठाड़े" राईलोन नोछावर आरती भई तीन घन्टा दर्शन भये छः बजे मथुरानाथजी पधारे । बाद द्वारकानाथजी मन्दिर में पधारे तब ये पद गायो "आवत मदनगुपाल त्रिभंगी" ।

वैसाख कृष्णा ७—श्री द्वारकानाथजी के मंदिर को मनोरथ वस्त्र कसूमल पाग सादा । किलंगी, मंगला से लेकर राजभोग पर्यन्त वधाई गवी । १० बजे लाल बाग सों नवनीतलालजी द्वारकानाथजी के मंदिर पधारे । मथुरा दर्वाजा पे पधारे तब द्वारकानाथजी के कीर्तनिया बाल कृष्ण लाल छरीदार समाधानी असंख्य वैष्णव पधरायवे गये । तब मथुरा दरवाजा सो ये पद गायो "नेक कुंज कृपाकर आइये" । द्वारकानाथजी के मंदिर के दरवाजा पे पुन्याहवाचन भयो श्रीनवनीतलाल पर श्री वालकृष्णलालजी महाराज ने मुट्ठी भर रुपैया नोछावर कर उड़ाये (उछारे) ता

समय पद गायो "भले ही मेरे ओ यही ठीक दुपहरी की विरियाँ" । या पद गाते के साथ चकडोल भीतर तिवारी में ले गये तहाँ श्री नवनीतप्रिय को शृंगार भयो । सहरा धरें तथा द्वारकानाथजी मथुरानाथजी के मुकुट को शृंगार भयो मंदिर की तिवारी के वाहर जगमोहन के आगे पगलियां के यहाँ सजावट भई । चाँदी को सुन्दर कलात्मक बंगला आयो । और हू ब्रज भक्त लता केलादि सजावट भई । भीतर शृंगार भये वाद राजभोग सब स्वरूपन के संग ही आये ता समें पद गायो "श्री ब्रजभान सदन भोजन कों नन्दादिक सब आये । फेर भोग सरके वंगला पे वाहर विराजे बीच में श्री नवनीतप्रिय वाई आड़ी श्री मथुरानाथ जी जेमनी दिश श्री द्वारकानाथजी विराजे । आगे गोद में बालकृष्णलाल मदन मोहन जी । दर्शन खुले चौक सड़क आदि सो सुन्दर दर्शन भये । ता समें पद गवे । "विहरत सातोरूप धरें" "वल्लभ नन्दन स्वरूप अनूपसरूप" "ऐसी बंसी बाजी वन धन में" "श्रीलछमन नन्दन नन्द बधाई दीजे ग्वालन" फिर आरती भई । आरती बीच गो. गोवर्धनलाल वाई ओर रणछोड़ लाल जेमनी ओर वालकृष्णलाल तीनन ने मिलके आरती करी राई लोन भये । घोवान सो भरि के नोछावर करी समस्त सेवकन को पहरावनी बांटी । दर्शन होय चुके पाछे नवनीत लाल आगे पधारे ता समे ये पद गवे । "युगल वर आवत है गठ जोरे" "बसो मेरे नेनन में दोऊ चन्दा" "बसो मेरे नेनन में यहजोरी" । सब सरूपन में उत्थापन से शयन पर्यन्त सेवा भई शयन में न्योते के पद केदारा में गाये । तथा कटोरी बताई गई ।

वैशाख कृष्ण ८—मनोरथ छप्पनभोग को लालबाग में आज ही सतुवा संक्रांति भई वस्त्र केशरी सुनहरी किनारी के टिपारा गोकर्ण भारी वनमाला की शृंगार मथुरानाथजी विट्ठलनाथजी द्वारकानाथजी तथा श्री नवनीतप्रियाजी के एकसा शृंगार भये । अभ्यंग भये । प्रातः ६ बजे संक्रांति के कारण शंखनाद भये । दस बजे राजभोग आरती सबन की भये वाद श्री विट्ठलवर लालवाग पधारे । तब सामेंघाटी पे तिलकायत छड़ीदार कीर्तनिया दिसा में लेवे पधारे तब ये पद गायो "लाल नेक देखिये भवन हमारो" फेर मथुरानाथजी पधारे तब टीकेत सबन को पूर्वतत् छड़ीदार कीर्तनियादि सहित सामें पधारे "भले मेरे आये पद गायो वाद नवनीतप्रिय सहित" वाल भोग के आगे चोतरा पर हटड़ी खड़ी भई । वीच में काचकी हटड़ी आस पास चांदी की हटडी सब स्वरूपन में नवनीत पधारे तब ये पद गायो "रानी जू एक वचन मोय दीजे" सब सरूप विराजें वाहर ही भोग चोतरा पे आये सांझ कों सात बजे भोग आये धूप दीप भये और कीर्तन ये भये :—

"आज गुलाल पाहुने आये" "रानीजू एक वचन मोय दीजे" "आज हमारे भोजन कीजे" "बेठी गोपकुवर की पाँत" "परोसत पाहुने त्योरारी" "श्रीब्रषमान

सदन भोजनकों" भोग सरवे के समय अच्छी बरसा भई। रात्री को ११ बजे भोग सरे। वा समें बरसा बन्द भई सन्मुख दर्शनन में ये पद गाये।

"जो रस रसिककीर मुनिगायो" "आज सुहावनी रात" "लटकत लाल रहे प्यारीपर" और हू पद गवे गो० ति० गोवर्द्धनलालजी ने पहरावनी वांटी दर्शन हे चुके बाद स्वरूप सब सुखपाल चकडोल में बिराजे मन्दिर के चौतरा पर पधार कर फूल मण्डनी में बिराजे "आवत है गोकुल के चन्दा" ये पद गावते पधारे एक घन्टा ही अनवसर भये। सब स्वरूपन के फेर दर्शन खुले। चून की आरती भई। राईलोन न्योछावर भई वहाँ ये पद भये "पिहरत्तसानों रूप धरें" श्रीलछमन गृह महामंगल आज" "जयति रुक्मणीनाथ" "आज महामंगल महराने" "आज बड़ो दर्वार देख्यो नन्द तेरो श्रीगोकुल युग युग राज करो" श्रीमथुरानाथजी विट्ठलनाथजी द्वारकानाथजी सब संग ही श्रीजी द्वार पधारे और नवनीत बाग में ही नित्य सेवा भई अनवसर भये। वापस पधारते ये पद गाये ग्यारह बजे ६ को नाथद्वारा पधारे १२ बजे मंगल भये। सब घरन में नाथद्वारा पधारते पद गाये "सुन्दर ब्रज की बाला" मथुरा दरवाजा में आते "देखियत हमारे गोकुल के सरबजू" सिंहपोर पे मार्जन भयो "गावो गावो मंगल चार" सुखपाल भीतर पधारे तब "युग युगराज करो श्रीगो." फेर नित्यक्रम सेवा भई।

वैशाख कृष्णा ९ आज १२ बजे मंगल भोग आये दर्शन एक ही भये सेवा सब भई। सबन के टोपी के श्रृंगार भये राज भोग सों चालू सेवा रह ६ बजे अनवसर शयन भये। नवनीत पधारे।

श्रीनाथजी में गो० ति० श्रीगोवर्द्धनलालजी महाराजकृत पाँच स्वरूपोत्सव छप्पन भोग।

वैसाख कृष्ण १० वस्त्र सब स्वरूपन के कसूमल मुकुट काछनी पटका सूथन मोती के आभरण मोती के मुकुट वनमाला को श्रृंगार कुण्डलहार चँवर अलक धरे।

सब स्वरूपन के ग्वाल पलना भये बाद श्रीजी के छड़ीदार कीर्तनिया समाधानी छत्रछड़ी नगाडा निशान ध्वजा पताका सहित पधराये गये। सो पद गाये "नन्द बुलावत है गोपाल" प्रथम मथुरानाथजी फेर विट्ठलेशरायजी फेर द्वारकानाथजी फेर नवनीतप्रिय पधारे राजभोग छप्पन भोग सामिल अरोगे भोग सरे बाद चार घन्टा दर्शन भये बाद आरती राईलोन न्योछावर होय सब सरूप नवनीत लाल में पधारे नवनीतलाल की तिवारी में भोग आये श्रीजी में राजभोग अलग आये। और नित्यक्रम सेवा भई यहाँ भोग आये तब कीर्तन नट आसावरी टोड़ी के

भये। भोजन के पद भये "नन्द भवन में कान्ह अरोगे" फेर चबूतरा पर कांच की बड़ी हटड़ी भई। भीतर सो भोग सरि के सब सरूप हटड़ी में पधार कर बिराजे बीच में नवनीतलाल जेमनी आड़ी द्वारकानाथजी बाई दिशि मथुरानाथजी विट्ठल नाथजी बिराजे मदनमोहनजी बालकृष्णलाल प्रभृति आगे बिराजे। दर्शन खुले "बिहरत सातो रूप धरे" "जे वसुदेव किये पूरण" "श्रीलछमन गृह होत बधाई" "ऐसी बंसी बाजी" "जयतु रुक्मणिनाथ"। आरती चून की भई। राइलोन नोछावर भई दर्शन हे चुके बाद उत्थापन भोग आये भोग आरती भेलि भई। तब पदगाये "गावो मंगल गीत बधाई" "यह धन धर्म ही सो" फेर सब सरूप मथुरानाथजी के मन्दिर पधारे। वहाँ सब स्वरूमन के संग ही शयन भोज आये। वहां मन्दिर में फूल मण्डनी भई। शयन भोगसरि के सब सरूप फूल मण्डनी में बिराजे। इमन की बधाई गवी। दर्शन रात को एक बजे खुले। आठ बधाई गाय आरती चार भई प्रथम आरती गो० ति० गोवर्द्धनलालजी ने करी। तीसरी आरती गोपेश्वरलालजी ने करी चौथी आरती श्रीवल्लभकृष्णलालजी ने करी राईलोन नोछावर भई रणछोड़लालजी महाराज ने यह रावड़ी बाँटी फेर सब अपने-अपने घर पधारे कीर्तन भये। "लटकत अब कुञ्ज डगरते" "अब पोढ़न को समयो भयो" पहले नवनीतलाल पधारे फेर सब सरूप पधारे। अनवसर भये।

वैशाख कृष्ण १२ को द्वारकानाथजी काँकरोली पधारे वैशाख कृष्ण १३ को सारो नाथद्वारो ग्राम के श्रीजी को प्रसाद सों जिमायो। तिलकायत गोवर्द्धनजी महाराज ने। इतने गोस्वामी बालक वा समय हुते या मनोरथ में गो. ति. गोवर्द्धन लालजी चि० बाबा साहेब दामोदरलालजी श्रीरणछोड़लालजी जीवनलालजी बाबा साहेब कोटा। द्वारकानाथजी के श्रीबालकृष्णलाल, गोपाललाल, विट्ठलेशराय। जी के श्रीगोपेश्वरलालजी गो० चि० बच्चू बाबा परचारग सेरगढ़ वारे गिरधर लालजी चि० वल्लभलालजी बाबा साहेब राज नगर के श्रीमधुसूदनलालजी रणछोड़लालजी प्रभृति अनेक बहू, बेटी, बालक छोटे मोटे हुते।

सेवक वर्ग—

श्रीजी के मुखियाजी—भाणजी भाई, भीमजी भाई। नवनीतलाल के मुखियाजी—गोवर्द्धनजी। मथुरानाथजी के मुखियाजी—गोकुलदासजी। विट्ठलनाथजी के मुखियाजी—मन्नालालजी। द्वारकानाथजी के मुखियाजी—द्वारकादासजी।

लालवाग में खेतन में तम्बू तने। दो मण्डान चालू रहे। समस्त वैष्णव अतिथीन को प्रसाद लिवायो गयो। कोई विमुख नहीं जातो। खीर, पूड़ी शाकादि जिमावते

कोई भी वहिर्मुख न जातो। या उत्सव को ता समय के कविवर घनश्यामजी ने छप्पन भोग वर्णन कियो है तथा श्री गो० ति० गोवर्द्धनलालजी के बहिन श्री देवका बेटीजी, वेनकाजी महाराज ने धोल्हन में वर्णन कियो है।

"श्रीनवनीत लालना छप्पन भोगनी लीला धोल गायन संग्रह" तथा छप्पन भोग वर्णन गोपीलालजी झापटिया ने प्रकाशित कियो।

घनश्यामजी को वस्त्र कसूमल सूथन काछनी पीताम्यर को पट का सफेद किनारी को मोती के आभरण वनमाला को श्रृंगार कुण्डल अलक हाँस नवल पिछवाई चितराम की। मथुरानाथजी, द्वारकानाथजी, विट्ठलवर नवनीत बिराजे। ठाड़े वस्त्र सफेद। पद या प्रकार गवे।

मंगला में—जय-जय वल्लभ राजकुमार। श्रृंगार में—नन्दराय के नव निधि आई। राजभोग में—बिहरत साती रूप धरें। भोग में—बधाई बाजत आज सुसाई। आरती में—श्रीवल्लभ रूप सुरंगे। शयन में—श्रीवल्लभ मधुराकृत मेरे।

गोकुलनाथजी के मन्दिर को उत्सव—

याही प्रकार गोस्वामी तिलक गोवर्द्धनलालजी ने वि० १९३४ में अषाढ़ कृष्णा पाँचम को गादी बिराजे बाद नवनीतलाल को गोकुलनाथजी के मन्दिर में पधराय के मनोरथ कियो। ताको वर्णन गो. श्रीगिरधरलालजी महाराज कांकरोली वारेन के वचनामृत ९९ को वर्णन या प्रकार कियो:—

"सो निस्यतें दोय घड़ी उत्थापन अवारे भये और फिर उत्थापथ भोग अरोगिके पधारे। सो तब चकडोल में बिराजे। सब असवारी सहित चँमर छड़ीदार आगे गोस्वामी बालक संग हुते। सो बहू बेटी ब्याह के गीत गावत हुती परछनाते होयके गौवर्द्धन पूजा के चोक सो होय, धोरी पटिया में पधारे तब अनेक वैष्णवन की भीड़ होय गई। आगे झांझ पखावज दोय-दोय जोड़ी कीर्तन होत चले ऐसी रीती सो गोकुलनाथजी के मन्दिर पधारे सन्मुख कलश बन्ध्यो और मार्जन भयो। पहले तो कीर्तन सेहरा के भये।"

राग सारंग में—"आज को दिन धन-धनरी भाई" सो यह कीर्तन होत पधारे। फिर भोग के दर्शन खुले। ता विरियाँ गोकुलनाथजी के चौक मन्दिर में चोरासी फुहारे छूटे जल सो चौंक भरि गयो ता विरियां ये कीर्तन गाये।

श्रीघनश्यामसागर विद्या विभाग नाथद्वारा से प्रकाशित तथा गोपी लालजी गोरवा द्वारा प्रकाशित छप्पन भोग वर्णन देवका बेटीजी की पुस्तक सूरत सो प्रकाशित १९९७ आश्विन मास में।

सारंग में—आज बने गिरधर दूल्हे नव चन्दन को तन लेप किये।

ये दर्शन भोग के समय भये। फिर सन्ध्या भोग आये सो ता समय कीर्तन भये। वृन्दावन कुञ्जन के मध्य खसखानोर च्यो शीतल वयार झुक गोखन बहत है। बिराजत दोऊ उसीर महल में छूटत फुहारे आगे। इत्यादि कीर्तन भये। विविध सामग्री हू अरोगे।

फेर दर्शन खुले राग-सारंग गय्यो "अंगन-अंग अनंग रह्यो" और जब आरती भई ता समें ये पद गायो "करो लड़ीते जू की आरतो" ये कीर्तन भये। फेर अनवसर भये। फेर ग्वाल अरोगे। फेर डवरा सरे। पाछे आप हिंडोरा में अधिवासन होय बिराजे। हिंडोरा अरु रथ को अधिवासन भयो। फेर हिंडोरा में बिराजे सब बहू, बेटीन ने झुलाये और यह गीत बड़ोदावारे वेणी बेटीजी आदि जाने है। एक दक्षिणी भाषा को कीर्तन बहू, बेटी मिल के गाये। पाछे दर्शन खुले तब क्रमसो सब बालक झुलाये कीर्तन या प्रकार भये।

"झूलन आई ब्रजनारी" "गिरधरलाल की सुरंग हिंडोरना" फेर हिंडोरा सो उतरि के श्रृंगार सहित शयन भोग आये। फेर समय भये भोग सरे अरु रथ में बिराजे। दर्शन खुले बीरी अरोगे वा समय की झारी सब बालकन ने भरी। बीड़ी अरोगे बाद सब बालकन ने मिलि के रथ चलायो सो वा समय रोसनी भई और कीर्तन गवे। राग अडाना में-सुन्दर वदन सुख सदन स्याम को निरख-निरख मन थाक्यों" यह कीर्तन भयो। सो या भाव के और हू कीर्तन भये। फेर बहू, बेटी रथ चलाये पाछे आरती भई। पाछे दूसरी आरती मनोरथ की भई। फेर नोछावर राईलोन भये। फिर चकडोल में बिराजे मन्दिर में पधारे सो ता समें ये कीर्तन भयो "युगल वर आवत है गठ जोरे" मन्दिर में पधारे तब द्वार पर कलश बन्ध्यो मार्जन भयो। फेर चकडोल तिवारी में भीतर बिराजे वहां चून की आरती श्रीगोवर्द्धनलाल ने कीनी। ता समें कीर्तन गायो "रानीजी तिहारो घर सुवस बसो" फेर राईलोन होइके टेरा आयो पाछे श्रृंगार बड़े भये। और कुल्हे को जोड़ पहिरे और नित्यक्रमवत् पौढ़े ता समें रात्री घड़ी छ हुती। श्री महाप्रभुजी, सालिग्रामजी भीतर के रस्ता पधारे।

हुस्ता दरजी कों पाग उपरना के जोड़ आठ दिये और गोस्वामी बालक बहू, बेटीन ने परिक्रमा हू करी और श्रीमदनमोहनजी, बालकृष्णजी संगही पधारे श्रृंगार भयो। ताकी विगत श्रीमस्तक पै कारी पाग तापे सेहरा हीरा को। गाई झालरी की ओढ़नी केशरी ओर एक दोय आभरण पन्ना के सवेरे उत्सव को क्रम रह्यो।

या मनोरथ के समय जे गोस्वामी बालक हुते तिनके नाम श्रीगोवर्द्धन लालजी और श्रीगिरधरलालजी, श्रीगोकुलशरायजी, श्रीगिरधरलालजी कांकरोली गोपीकालंकारजी, कल्याणरायजी, रघुनाथजी उपनाम पन्नालालजी, कल्याणरायजी गिरधरलालजी के गोपाललालजी, बालकृष्णलालजी, ब्रजनाथलालजी, गिरधर लालजी, मधुसूदनलालजी, गो० भीकमलालजी गोविन्दलालजी तत्पुत्र श्रीलालजी गोपाललालजी या प्रकार केहुते । अब बहू, बेटीन केहु नाम यां प्रकार हैं । भामीजी महाराज श्रीगिरधरजी के बहूजी, ब्रजनाथ जी के बहूजी, लालजी श्रीगोपाललाल के बहूजी बहना, बेटी तथा ब्रजकुंवर बेटीजी । सेवकन के मुखियाजी, रावल श्रीविट्ठलजी दूसरे मुखिया शालिग्रामजी, भीतरिया ठक्कर गोवर्द्धनजी सुकल प्राननाथ, मथुरादास, हीरालाल, श्रीनाथजी, नवनीतप्रिय के सेवकहू सब हुते कुञ्ज में केला धरे हुते । सजावट भई हुती" ।

श्री चन्द्रावलीजी की सेवाक्रम में कुञ्ज-निकुञ्ज निविड-निकुञ्ज निभृत-निकुञ्ज के चालीस दिन पूर्ण होते ही जगद्गुरु श्रीवल्लभ महाप्रभुन को प्राकट्चोत्स होय है । और वह चम्पारण्य में प्रादुर्भाव दिवस वि० १५३५ वैशाख कृष्ण ११ के दिन होवे सों सर्वत्र वल्लभ सम्प्रदाय में महामहोच्छव के रूप में माने और वह आज से चालीस दिन उष्णकालिक सेवा श्रीनाथजी में प्रारम्भ होय है ।

श्रीनाथजी शृंगार को स्वरूप तथा भाव—

मुकुट काछनी—ललिता, कृष्णदास की आड़ी को । सूथन पटका, पगा, फेंटा । दुमाला—छीतस्वामी, पद्मासखी । फेंटा—गोविन्द स्वामी—भामासखी । ग्वाल पगा परमानन्ददास चन्द्र भागा, सूथन पटुका—तारा की आड़ी के भाव को ।

वैशाख कृष्ण ११ वल्लभ जयन्ति—

देहली बड़ी, बगीचा, परिक्रमा में माला गली आदि देहेरा सब ठौर वन्दनमाल दुहेरा गादी तकिया । जड़ाऊ लालसाज सब जड़ाऊ सोना के । वासन कुञ्जा बंटा झापुआ आदि । गादी सफेद चादर उष्णकाल के कारण बड़े उत्सव तीनन में बगीचा माला गली आदि या लिये मढ़े "आँगन लीपो चौक पुरावो चीतो भीत पछीत" भाव सों । ये उत्सव नगाड़ा बन्द दड़े कहे गये हैं । जन्माष्टमी महाप्रभु उत्सव गुसाँईजी उत्सव चौकी आदि अड़ाऊ वस्त्र मलमल के केशरी सफेद किनारी दुहेरा के कमलवारे पिछवाई खण्ड वस्त्र चाकदार । खुले वन्द को । यदि ठंड होय तो बन्द दूसरे दिन खुलें । दूसरे दिन पिछोड़ा ठाड़ो वस्त्र सफेद यश के भाव सौं

तथा गरमी के कारण रासरसिक स्वरूप भाव सों मोती को चौखटा श्याम धरती में मोती के काम को । कुल्हे केशरी दो जोड़ के आभूषण । बाजू पहुंची हार हमेल लबल तथा कठला हांस आदि जोड़ । मयूर पक्ष पांच को । वनमाला को शृंगार । कुञ्ज जुही वल्लरी । अक्काजू को सात बालकन को गोविन्दजी को हार दुलड़ीको । चोटी । कुंडल नवरत्नन के । श्री हस्तमें मोती को कमल । बाहर चंदन को बड़ो बंगला डोल तिवारी में आवे । साँझ के अनौसर में सजावट होय । महाप्रभु की पादुका को अभ्यंग होय । स्नान होय । शृंगार होय । पृथक् भोग आवे । एक थाल में । आज सो मणिकोठा में दुपहर को अनवसर । हिंडोला खाट में होय सो जन्माष्टमी तक होय । छठी के शृंगार दिन तक । आज सों राजभोग में सम्मुख माला वड़ी नहीं होय । जन्माष्टमी तक के दिन तक जलेबी को वारा जन्माष्टमीवत् सामग्री । आधोनेग पाँच भात नारंगी भात वगेरे अभ्यंग उवटन होय । दिन भर बधाई गवे ग्वाल भीतर होय । महाप्रभु की सेवा हेतु भोग आरती सामिल होय । आज ही के दिन श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर श्रीनाथजी (श्रीगोवर्द्धननाथजी) समस्त अवयव के साथ मध्याह्न में सं० १५३५ में गोवर्द्धन से उद्भूत भये पीठिका के साथ ।

श्रीमद् वल्लभ महाप्रभु को संक्षिप्त परिचय—आपको प्राकट्य वि० १५३५ "तत्व गुण बाण भुवि"—प्राकट्य पन्द्रह सो पैंतीस में । तत्व पाँच—ये अलौकिक पञ्चतत्व ब्रजभूमि की महत्ता बतावे हेतु । **पृथ्वी तत्व** यमुनाजी को अंगीकार कराय स्वीकृत करानो । प्रभु विग्रह **जलतत्व** नन्दकुमार श्रीकृष्ण की लीला दरसानो । **तेजतत्व** गोवर्द्धन कों हरिदास मान उनसे समुद्भूत प्रभु एक रस माननो । रसदान रसलीला प्रकट करनी **वायुतत्व** । अपने ग्रन्थन को गूढ़ार्थ प्रकट करनो **आकाश तत्व** है ।

तीन गुण—

तीन गुण—सत्व रज तम । ऐसे ही **आधिभौतिक** मनुष्याकृति । **आधिदैविक** कृष्णसाम्य । **आध्यात्मिक** वल्लभरूप रसात्मा "सौन्दर्यं निज हृदगतं" आदि श्रीकृष्णास्य आध्यात्मिक करुणावन्त; आधिभौतिक हुताशं । आधिदैविक महाप्रभ के तीन सरूप या प्रकार प्रकट हैं । आपके ग्रन्थ सिद्धान्त मुक्तावली में आज्ञा करी है ।

यथा जलं तथा सर्वं यथाशक्त्या तथा बृहत् ।
यथा देवी तथा कृष्णस्तत्राप्येतादिहोच्यते ॥

पञ्च वाण—

ये पञ्चवाण कामदेव के हैं और इनके धर्म भागवत में द्वादश स्कन्ध के आठवें अध्याय में (कामदेव के पञ्चमुख) या प्रकार वर्णित है—

"संधेस्त्वं धनुषि कामः पञ्चमुखं" । तथा—चूर्णिका में पञ्चमुख—शोषण, दीपन, संमोहन, तापनोन्मादनेति पञ्चमुखा । शोषण दीपन संमोहन तापन उन्मादन । ये आचार्य श्रीवल्लभ ने लौकिक को अलौकिक में परिणत किये समस्त पापन को शोषण करिके भगवद् रस को दीपन कियौ और रस दीपन के बाद संमोहन-मोहित करनो । बाके बाद विरह ताप । फेर पञ्चमावस्था उन्माद भगवद् भाव में ओत प्रोत होवे सो देहाघ्यासंसोंपरे पहुंचानो । यासों कामदेव के वाण की संख्या पाँच भई ।

भुवि—यह सारे सुख वर्णन ग्रन्थन में हुते । पर प्रत्यक्ष श्रीवल्लभ ने भूतल पै ब्रज में ब्रजराज कों समक्ष नचवाय खिलाय दिये, यही भुवि तत्व को प्राधान्य भयौ या प्रकार पन्द्रह सो पैंतीस सिद्ध होय ।

वैशाख मास को महत्व—माधव सित वैशाखे मासि तनयौ मधुसूदन वल्लभे । (स्कन्द पुराण) प्यारो वैशाख मास होवे सो मधुसूदन ही वल्लभ रूप में प्रकटे ।

मासो वैशाख नामो मे प्रियो वै मधुघातिनः ।
सर्वाश्चातिथयो मध्ये माधवैकादशी प्रिये ।। (पद्मपुराण)

यथा ते माधवो मासो वल्लभो मधुसूदन : (ब्रह्मपुराण) याही सों आप वैशाख मास में प्रकटे ।

वैशाख माहात्म्य में चार बात प्रधानतया वर्णित है—

(१) भगवान को प्यारो वैशाख मास ।
(२) प्रेतोद्धार की कथा ।
(३) तुलसी दल, अश्वत्थ पूजन, कथा ।
(४) छत्र पादुका जल पंखादि दानविधि श्राद्धादि वर्णन ।

वल्लभ ने या मास में प्रकट होय इन चारों वस्तून को सार्थक प्रत्यक्ष कर जीवन कों सुख दियो यासो वैशाख में प्रकटे—

(१) **भगवान को प्यारो मास**—यासों आपने घर-घर में प्यारे भगवान् को पधराय सेवा सुख दियो ।

(२) **प्रेतोद्धार**—भगवान् की सेवा बिना जो जीव प्रेत हे ; उन समस्त जीवन कौं प्रेतत्व से मुक्त कर देवत्व दियो ।

(३) **तुलसी की महत्ता**—तुलसी द्वारा समर्पण तुलसी की कण्ठी । या प्रकार तुलसीकी कथनी न करिकें करणी में परिणत करी ।

(४) **दानादि महत्ता**—समस्त वस्तु प्रभु अर्पण कर प्रभु सुख के साथ वैष्णव भगवदीयन को प्रसाद रूप में वितरित करनो सिद्ध कियौ ।

वसन्त ऋतु—आपको स्वरूप होवे सों आप पुनः या ऋतु में प्रकटे ।

आपने षड्लीला प्रकट कर भूतल में करी—

(१) पृथ्वी पै प्रकट होय दैवी जीवन को उद्धार करि प्रभु संबन्ध कराय सुखसों लीला दर्शन करायो ।

(२) श्रीमद्भागवतोक्त प्रकार प्रत्यक्ष कर सुबोधिनी आदि टीका ग्रन्थादि निर्माण किये ।

(३) मायावाद को खण्डन करि भक्ति मार्ग स्थापन कियो ।

(४) पृथ्वी प्रदक्षिणा तीनवार करि के सात्विक राजस-तामस भक्त अंगीकृत किये ।

(५) पुष्टिमार्ग प्रमेय बल सों अनुग्रह करि सेवा बताय स्त्री शूद्रादिकन कौ उद्धार कियौ ।

(६) आचार्य, सेवक, विद्वान् उनकौं चमत्कार दिखाय भक्ति मुक्ति करतल करि दीनी ।

एकादशी को प्राकट्य हेतु—

पञ्चज्ञानेन्द्रिय पञ्चकर्मेन्द्रिय और एक मन इन कौ सोधन करि प्रभु विनियोग करावये हेतु एकादशी कों प्रकटे अथवा प्रभु ने एकादश स्कन्ध में उद्धवजी को जो ज्ञान दै कै विभूति योगादि में अपनो स्वरूप बतायो वही पुनः प्रत्यक्ष करिबे हेतु एकादशी को प्रकटे । अर्जुन कौं गीता में विराट् स्वरूप के दर्शन कराये । वही समस्त विश्व को प्रभु रसलीला में ओत-प्रोत करि घर-घर में भगवत् स्वरूप स्थित किये ।

आपको स्वरूप—

आपको स्वरूप अनेकाचार्य भक्तन ने वर्णन कियो । श्यामस्वरूप रामचन्द्र एवं कृष्णचन्द्रवत् आपको श्याम स्वरूप है । शृंगार रस को भी श्याम ही सरूप मान्यौ है ।

भागवत में गर्गाचार्यजी ने आप को श्याम स्वरूप बतायो है—**"इदानीं कृष्णतां गतः"** ।

चम्पारण्य में प्राकट्य हेतु—

चम्पा स्वरूप स्वामिनी "चम्पक वर्णा राधिका उनको वन—अरण्य-चम्पारण्य वृन्दावन अतः स्वामिनी भावभावित वृन्दावन स्थित लीला करेंगे; यासों चम्पारण्य में प्रकटे । आचार्य के नामन में भी "रासलीलैक तात्पर्यः" कह्यो है । रासलीला स्थिति श्रीनाथजी तथा गोकुल स्थित सप्त स्वरूप "षोडश गोपिकानां मध्ये अष्ट कृष्णा, भवन्ति" या वाक्य कों सार्थक करिवे हेतु चम्पारण्य में प्रकटे ।

परब्रह्म श्रीकृष्णवत् वल्लभ की षोडश लीला—

कृष्णलीला	वल्लभलीला
(१) पूतना उद्धार	(१) पूत-पवित्र-ना—उनको उद्धार
(२) तृणावर्त उद्धार	(२) वायु बवंडर–भ्रम निवारण करि सन्मार्ग द्रष्टा होय उद्धार कार्य ।
(३) शकटासुरोद्धार	(३) भजन बिना काष्ठवत् है। उनको भजन सिखाय "तुलसी काष्ठजामाला" सों दैजीवन को उद्धार कियो ।
(४) माखन चोर	(४) पापन को चोरबे वारे ।
(५) बकासुरोद्धार	(५) अविद्यारूपी वकवादीन को उद्धार ।
(६) धेनुकासुरउद्धार	(६) मायावादी (रासभन) को उद्धार ।
(७) वन-वन गौचारण कर गौ सेवा करी	(७) पृथ्वी प्रदक्षिणा कर गौ-वेद गो-वाणी वह प्रकटकरि सेवा सिद्ध करी "गो-वाणी जो वेद की कहिये श्रीभागवत लें अवगाही"
(८) वेणुनाद से गोपी मोहित करि कामकूं परास्त कियौ	(८) श्रीमद्भागवत सुबोधिनी आदि सुनाय जीवन को सेवा फल दैकर काम निरसन कियो ।
(९) दावाग्निपान	(९) लोभ मोह मद रूपी दावाग्नि के सामान ज्वाला दूर करी ।
(१०) गोवर्द्धन धारण कर ब्रज रक्षा करी	(१०) संसार रूपी भय-यही इन्द्र कोप ताको श्रीनाथजी की छत्र-छाँहदै रक्षा करी ।
(११) श्रीदामादि साथिनसों लीला सुखदान	(११) दामोदरदास कृष्णदासादि के साथ भगवद् रसदान ।
(१२) नन्दनन्दन	(१२) द्विजनन्दन
(१३) ब्रज में बिराजे	(१३) चम्पारण्य सें काशी बिराजे
(१४) समस्त देवता ब्रज में पधारे परास्त भये	(१४) सेवा मार्ग दिखाय समस्त लोकालोक के देव मानव ऋषिगंधर्वादि परास्त किये ।
(१५) महारास कियो	(१५) श्रीकृष्ण की रासलीला को भगवदीयन को प्रत्यक्ष दर्शन कराय "रास में नाचत लाल बिहारी" ।
(१६) ब्रज में ग्यारह वर्ष बिराजे	(१६) ब्रजसों ही ग्यारह विग्रह पधराय पुष्ट किये ।

अध्ययन—

आचार्यश्री को उपनयन आठवें वर्ष में भयो। विद्याध्ययन विष्णुचित् कुल पुरोहित सों। सामान्य ग्रन्थ कृष्ण यजुर्वेदीय शाखा ग्रन्थ अपने पिताश्री सों पढ़े। आन्ध्र देश के तैलङ्ग माधवेन्द्रयति सों गीता भागवत नारद पञ्चरात्रादि पढ़े। तिरुमलल सों ऋग्वेद सामवेद पढ़े। नारायण दीक्षित से चारों भाष्य संहिता पाणिनीय सूत्र कणादि भाष्य योगग्रन्थ सांख्यमीमांसा आगमादि शारीरक सूत्र ग्रन्थ पढ़े। धर्मशास्त्र ज्योतिष शिक्षा अंग साहित्य काव्यकला सहयोगी विद्यार्थिन की चर्चा सों ही पढ़ लीनी।

शास्त्रार्थन के प्रसंग सम्वत् :—

(१) वि० १५४५ जगदीशराज सभा में शास्त्रार्थ कियौ।
(२) वि० १५४६ उज्जैन विद्वत्सभा में घट सरस्वती सों शास्त्रार्थ कियौ।
(३) विद्यानगर में विद्वत्सभा में शास्त्रार्थ १५४८ में करिके दिग्विजय कियौ।
(४) १५४९ काशी में मंगलप्रस्थ ढुंढिराज याज्ञिक के साथ शास्त्रार्थ कियौ।
(५) १५६४ काशी में पत्रावलम्बन सों शास्त्रार्थ करवायो और निरुत्तर किये।
(६) विद्यानगर में १५६५ कृष्णदेव राजा के यहाँ शास्त्रार्थ करिकें दिग्विजय पत्र प्राप्त कर कनकाभिषेक सों अलंकृत भये ।

वि० १५५० श्रावण शुक्ला ११ को मध्य रात्रि में ठकुरानी घाट गोकुल में प्रभु दर्शन प्राप्त कर ब्रह्मसंबन्ध दीक्षा प्रारम्भ करी ।

वि० १५५६ गोवर्धन पर्वत पर श्रीनाथजी गोवर्धनधर को प्रतिष्ठापित करि सेवा आरम्भ करी।

भोर होत तन सुद्ध करि गोविन्द कुण्ड अन्हाय।
मिले जाय व्रजराय सौं हिय हर्षित द्विजराय॥ १
स्वेत पिछोरा पाग अरु गुञ्जमाल पहराय।
मोर चन्द्रिका शीशधरि करि शृंगार हरखाय॥ २
दूध पाक करि छिप्रही निजकर भोग लगाय।
श्री गोवर्धनधरन को दर्शन बहुरि कराय॥ ३

ब्रह्मचर्यादि चार आश्रम—आपने १५३५ सों वि० १५५८ पर्यन्त ब्रह्मचर्य धर्म पालन कियौ। वि० १५५८ अषाढ़ शुक्ला ५ लो पण्ढरपुर के श्रीविट्ठल नाथजी की आज्ञा सों काशी के सजातीय मधुमंगल की पुत्री महालक्ष्मी के साथ विवाह कियौ। उनकी आयु ८ वर्ष की हती।

तीन पृथ्वी प्रदक्षिणा कीनी—प्रथम १५५३ में; दूसरी १५५८ में तीसरी १५६६ में। याप्राकार तीस वर्ष की आयु तक में पृथ्वी पर्यटन कियौ।

१५६६ में महालक्ष्मीजी को लेके अडेल पधारे। १५६७ आश्विन कृष्णा १२ गोपीनाथजी प्रथम पुत्र भये पाँच वर्ष बाद वि० १५७२ पौष कृ० ९ द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी प्रकटे। चौदह-पन्द्रह वर्ष गृहस्थाश्रम को साधन करि वि० १५८७ में आपने ४० दिन मौनसंन्यास लियो और अषाढ़ शुक्ला ३ को मध्याह्न में गंगा की धारा में विलीन भये।

आपके अनेक ग्रन्थन में ८४ ग्रन्थ महात्वपूर्ण हैं। आपकी बैठक ८४ हैं। आपके मुख्य सेवक ८४ हैं। वैसे कुल गणना वैष्णवन की ९१ है। उनकी गणना या प्रकार है।

ब्राह्मण—४१, संन्यासी—१, क्षत्रिय—३०, कायस्थ—३, कुण्वी—१, भाट—२, कुम्भकार—१, सुतार—१, छीपी—१, गौरवा—१, अलिखित जाति—८।

सेव्य स्वरूप एवं आचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित स्वरूप :—

बालकृष्णलाल २० मदनमोहन जी १० नवनीत ४ मथुरेशजी ३ विट्ठलवर, द्वारकानाथजी, गोकुलनाथजी, चन्द्रमाजी, मदनमोहन, अष्टभुजाजी दामोदरजी, कल्याणरायजी, श्रीनाथजी ४, ललितत्रिभंगीजी, लाडलेशजी, मुकुन्दरायजी आदि।

आपके प्रधान रूप से तीन उपदेश ग्रन्थ हैं। समस्त वैष्णव समाज को पञ्चश्लोकी से उपदेश दियो। समस्त परिवार कों ढाई श्लोक सों शिक्षा। तथा समस्त धनपति राजा महाराजन को दो श्लोक सों उपदेश कियौ।

अनेक ग्रन्थन की रचना करी तथा सारे जगत् में सिंहनाद करि भक्ति मार्ग की पुष्टिपताका फहराई।

पदन के गायवे को क्रम :—

मंगला में—आज बड़ो दर्बार देख्यो, सुनोरी आज नवल बधायो।
अभ्यंग में—६ पद (जन्माष्टमी वारे), ब्रज भयो महर के पूत।
माधो मास कृष्ण एकादशी। शृंगार में—वर्ष वेत्र।
आनन्द आज नन्दजु। राजभोग आयवे पर
नन्द जू मेरे मन आनन्द। नन्द जू तिहारे सुख दुख गेय।
हो ब्रज माँगनो, ब्रजपति माँगियेजू।
श्री जन्माष्टमी, की १२ या १५ बधाई गवे। तथा महाप्रभुजी की।
माला बोले जब, तक गवें, रा० सन्मुख में आज बधाई को दिन नीको।
भोग—बधाई श्री ब्रजराय के। आ०—यह धन धर्म ही सों। ब्यारू वगेरे में—बधाई ही गवे। शयन में—प्रकट ह्वे मारग रीति। पोढ़०—सुभग सेज पोढ़े श्री वल्लभ।

वैशाख वदी १२ परचारगी श्रीवल्लभ जयन्ति को शृंगार—पिछवाई चितराम की। चम्पारण्य में वल्लभ प्राकट्य की एक और आनन्द वर्णन की दूसरी ओर प्राकट्य वस्त्र पिछोड़ा शृंगार एक जोड़ को। पूर्ववत्। कुल्हे घेरा आदि चौखटा फूलन को शृंगार होते में। मूल पुरुष द्वारकेशजी कृत गायो जाय। झाँझे बन्द। डोल तिवारी में चन्दन को बंगला काच को चाँदी को। ध्रुव वारी नीचे आवे वह 'आज ही रमो' बधाई में ढाढ़ी गवे। दिनभर बधाई बटवे के, तथा वल्लभ वाल क्रीड़ा के।

मंगला—शृंगार में—मूल पुरुष गवे। राजभोग सन्मुख—नन्द बधाई दीजे ग्वालन। भोग में—श्री लछमन भट देत बधाई। आ०—श्री लछमन वर ब्रह्मधाम। शयन में—आनन्द बधावनो नन्द महर के। तिहारो घर सुबस बसो।

वैशाख वदी १३ सो प्रतिपदा पर्यन्त बाल लीला गवें—जैसे शृंगार वैसी बाललीला। ये शृंगार चार होंय। चार यूथाधिपान के भाव सों।

वैशाखवदी १३ बाललीला को शृंगार—

चित्तराम की पिछवाई। एक तरफ नन्द महोत्सव होतो भयो एक तरफ छठी पूजन। तथा पलना झूल ते दधिकांदो होते भये धोती उपरना लाल पटका छोड़ को ठाड़े वस्त्र पीरे। मोर चन्द्रिका, पाग सादा, आभरण पन्ना-मोती; के छोटो शृंगार बाललीला के पद गवे। बघनखा धरें।

वैशाखवदी १४ बाललीला को दूसरो शृंगार—

वस्त्र गुलाबी, मल्ल काछ, टिपारा पटका एक, ठाड़ेवस्त्र मेघ श्याम। जोड़ रेसमी फूल को टिपारा, साज-पिछवाई चितराम की उलूखल बन्धन की एक ओर छीका पेच ढके माखन लेते भये दूसरी ओर उलूखल बन्धन पे यमुलार्जुन मोक्ष। बीच में श्रीनाथजी। आभरण जड़ाऊ मध्य को छोटो शृंगार बाललीला के पद गवें।

वैशाखवदी ३०—वस्त्र पाग पिछोड़ा पिछवाई खंड श्याम। आभरण सोना के, मोरसिखा, पगा सुनहरी कंगूरावारी, श्याम कर्णफूल झूमक वारे। ठाड़े वस्त्र गहर गुलाबी। बाललीला के पद। ये चार शृंगार जन्माष्टमीवत् बाललीला के भाव सों भागवत आधार पर।

वैशाख शुक्ला १—आज गत दिन वारो शृंगार अवश्य होय। छेल्लो मुकुट ग्रीष्मावसर को। कसूमल वस्त्र पे मुकुट काछनी। सूथन। पटका। पीताम्बर काछनी दुहेरी। एक कसूमल रंग की। रूपहरी किनारी की ठाड़े वस्त्र सफेद पिछवाई खण्ड भी लाल सफेद किनारी दुहेरा की। मुकुट आभरण कुण्डल—ये सब मोती के। वनमाला को शृंगार।

वैशाख शुक्ला २—उच्छव के प्रथम दिन को शृंगार लाल (अधरंग) धोती उपरना चन्द्रिका सादा। पाग, सादा। पन्ना मोती के आभरण। ठाड़े वस्त्र पीरे कर्ण फूलन को शृंगार मध्य को छोटो। आज श्रीनाथजी में जयगोपाल (कुनवारा) भयो।

चारयुग श्लोक—

वैशाखे शुक्ल पक्षस्य तृतीयायां कृते युगम्।
कार्तिके शुक्ल पक्षेतु त्रेतायां नवमेहनि॥
अथ भाद्र पदे कृष्णे त्रयोदश्यांतु द्वापरे।
माघेतु पौर्णमास्यां च घोरे कलियुगे तथा॥

वैशाख शुक्ला ३ अक्षय तृतिया चन्दन यात्रा—

देहली वन्दनमाला साज सब चाँदी को। चारों ओर सफेद चन्दुवा महेराब वगेरे। पड़दा खस के। चारों दिशा छिड़काव सुरू। राजभोग बाद आरती पूर्व शयन वाद आरती वाद समस्त साहित्य उष्ण कालिक वस्त्र चन्दन के कोट के छापे वारे पिछोड़ा कुल्हे सफेद किनारी की पिछोड़ा बीच में। खाली चारों ओर चन्दन की बेल ठाड़ वस्त्र चाँदनी मध्य को कुण्डल को शृंगार वही धरें। मोती के कर्ण में कुण्डल मोर पक्ष तीन को। कुल्हे को जोड़ राजभोग सरे बाद चन्दन को पंखा को अधिवासन होय। आज से गुलाबदानी कुन्जा तूत्या आवें फेर दर्शन के खुलते ही पंखा की आड़ से चन्दन की गोली धरें। दो श्रीहस्तन पे; दो चरणन में एक वक्षःस्थल पे। फेर भोग आवे शीतल बीज के लड्डू। पना, चिरोजी के नग, सतुवा दही भात आदि विविध सामग्री आवे। दूसरे भोग के दर्शन खुले आरती होय नित्य सेवा होय आज सों फिरती भीजी भई दालें तथा शीतल नित्य अरोगे। सतुवा विशेष दही भात सिखरन भात आदि। सांझ को भोग आरती भेले होय। आरती को खण्ड उतरे आरती थाली की होय। अभ्यंग होय। आज से चन्दन की वरणी कुन्जा तथा पंखादि नित्य सेवा में आवें। आज के ही दिन वि० १५५६ रविवार को मन्दिर श्रीजी के बनवे की नींव धरी गई। वि० १५७६—आज के दिन पाट बैठाये श्री आचार्य महाप्रभु ने। मंगला में आड़ बन्द धरें रथयात्रा तक फेर उपरना अषाढी सों आवे। पद को क्रम मंगला—भोर भावते गिरिधर देखो। मंगल आरती गुपाल की। अभ्यंग के छः पद। आसक्ती के छः पद गवे।

(१) ये दोऊ नागर ढोटा कोन गोप के।
(२) माईरी जा दिन ते सुन्दर वर।
(३) बेन बजायो सुन्दर नन्द के।
(४) नन्द भवन को भूषन माई।

(५) कर मोदक माखन मिश्री ले।
(६) कहा ओछी ह्वै जात।
(७) आऊ गुपाल शृंगार बनाऊँ।
(८) लाल कों शृंगार बनावत मैया।
(९) भोग शृंगार जसोदा मैया श्री विट्ठल।
(१०) पीताम्बर को चोलना पहरावत।
(११) सुन्दर ढोटा कोन को सुन्दर।

ये पद अभ्यंग होय तब गवें उत्सवन के अभ्यंग जन्माष्टमी महाप्रभु विट्ठलेश्वर के दूसरे हैं वे होय।

शृंगार—सन्मुख। सुभग शृंगार निरख मनमोहन। राजभोग सन्मुख—अक्षय तृतीया, अक्षय लीला। **उत्सव भोग आवे तब**—सखी सुगन्ध जल घोर के चन्दन बन्यो वागो वामना श्याम अंग बन्यो चन्दन। **दूसरे दर्शन में**—देख सखी गोविन्द के चन्दन। **भोग में**—गिरधर संबद्धि अंग को वाको। **आरती**—पिछोरा खासा को करि। **शयन**—मेरे गृह आवो नन्द-नन्द। **पोढ़वे में**—रंग महल पोढ़े गोविन्द।

परशुराम जयन्ती—अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा श्री जमदग्निकुमार परशुराम क्रोधवन्त स्वरूप होयवे सों प्रभु के अंशावतार के कारण प्रभु को चन्दन धरावें शीतल करें तथा शीतल सामग्री अरोगें।

श्रुत्वा तत् तस्यदौरात्म्यं चुक्रोध हरि वाहनः।
घोरमादाय परशुं सतूणं चर्म कार्मुकम्।
अन्वधावत दुर्धर्षो मृगेन्द्र इव यूथपम्॥
श्रीमद्भागवत ९-१५-२८

या प्रकार क्रोध रूप परशुरामजी को वर्णन श्रीमद्भागवत में है। आप कूं शीतल करवे आज के उत्सव में चन्दन धराय शीतल सामग्री भोग धरें।

आज ही त्रेता युगारम्भ दिवस है। वैशाख महात्म्य में जल कुम्भदान तथा शीतल वस्तु दान की महत्ता वर्णित है। तासों ही पुष्टिमार्ग में कुन्जा तूत्या मिट्टी पात्रन में प्रभुकूं शीतल जल अरोगावे को सेवाक्रम राख्यो है। आज सेवा तथा दानादि कियो भयो अक्षय होय है। यासों अक्षय तृतीया कही गई है।

चन्दन धरायवे के प्रकार तथा वर्णन—

चन्दन प्रभुन के तीन प्रकार धरावे के वर्णन मिले हैं। आज के दिन गोली पाँच ही धरें। ताको कारण प्रभु सर्वत्र शक्ति युत पंचतत्व में है और वह कुपित न

होय यासो पाँच स्थान में धरें। घिसके केशर मिश्रित चन्दन में बरास कस्तूरी की भावना अतर खस गुलाब आदि गुलाब जल सो मिश्रित गोली बनानी और धरानी। पहले गोली चन्दन की जेमने श्रीहस्त में फेर जेमने श्रीचरण में, फेर वाम श्रीचरण में फेर वक्षःस्थल में या प्रकार पाँच गोली धरें। एक प्रकार भयो। दूसरो जब विशेष गरमी होय, रोहणी तपे तब प्रभु को गोली धरें। ठाड़े स्वरूपन को। तथा स्वरूपन को। वामें गोली तो चार धरेंही और वक्षःस्थल बाहु आदि तक। गोली फागण की भाँति चन्दन की शीतलता हेतु धरें। यह दूसरो प्रकार है। तीसरो मनोरथी होय तो कबहू चन्दन की खोर धरें।

श्रीमद्भागवत को प्रमाण—

तत्रैकांसगतं बाहू कृष्णस्योत्पल सौरभम्।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्बह ॥

श्री सुबोधिनी को प्रमाण—

आघ्राणे चन्दनज सौरभमेव नहेतुः किन्तु ततोविलक्षणं साधारणं जनावेद्यं तदपेक्षयापि सौरभ युक्तत्वेनात्यलौकिक भावव्यतीभामिव: वेद । सहज सौरभ मित्य विज्ञापनायेदं विशेषणं। चन्दनलेपम् विवेक धैर्याश्रयार्थः। घ्राणेमान्ति प्रवेशनमनस्या विशेषः श्रीरूपा। यासों चन्दन में सुगन्धित वस्तु मिलावे याके भाव भगवदीयन ने या प्रकार किये हैं—

चन्दन शीतलतायुक्त केशर स्वामिनीजी के स्वरूप। बरास चन्द्रावलीजी सरूप कस्तूरी यमुनाजी सरूप। गुलाब जल ललिताजी के भाव सों आवे। तीन-तीन दिन के मनोरथ चार यूथाधिपान के आरती को खण्ड उतरे चार बाती की आरती होय। शयन में जोड़ अरु १६ माला को जोड़ आवे।

वैशाख शुक्ला ४—वस्त्र गहरे गुलाबी धोती उपरना, ठाड़े वस्त्र स्वेत। मोती के आभरण। खण्ड पिछवाई गहरी गुलाबी रूपहरी किनारी की श्री मस्तक पर पाग। गोल चन्द्रिका कर्ण फूल। छोटो शृंगार।

कई घरन में परशुराम जयन्ति की परचारगी शृंगार होय तथा अक्षय तृतीय सों ही फुहारे छूटे। यहाँ न छूटे ताको कारण या प्रकार है सके है :— वैशाख ३ सो वैशाख शुक्ला ६ तक चार यूथाधिपा चन्दन धरावे तासों। तथा कुञ्ज लीला में निकुञ्ज द्वार आच्छादित है। अर्थात् ठाड़े वस्त्र धरे। तासों उष्णकालिक सेवा वैशाख शुक्ला ७ सो प्रारम्भ माने अंग वस्त्र बड़े होय फुहारे चले। छिड़काव बढ़े।

वामन जयन्ती नृसिंह जयन्ती इनके तथा परसुराम जयन्ती के परचारगी शृंगार न होय। कारण—ये अवतार स्वरूप श्री गोवर्धनधर स्वरूप है तथा इन

उत्सवन की ब्रज लीला नहीं। अन्य घर नन्दालय के भाव सों सब माने। ये गौ लोक स्वरूप है वैसो शृंगार नहीं होय। परचारगी शृंगार जहां नन्दालय ब्रज रस लीला व्रज ललनान की भावना सों होय तहाँ परचारगी शृंगार होय। और घरन में यशोदाजी गोपीगण प्रभु को लाड विशेष लड़ावें। पद चन्दन लीला के गवें। खण्डितादि तथा शीतल उष्णकालिक गवें। नित्य सेवा निदाघ कालिक जल विहार चन्दन खसखाना रूखरी आदि पद गवें शृंगार जैसे पद होय।

वैशाख शुक्ला ५—आज मल्ल काछ टिपारा धरे। ये शृंगार वाही ठाड़े वस्त्र पर दो शृंगार होय है। सूथना, पटका एवं मल्लकाछ अतः आज मल्लकाछ धरे। फेर अषाढ़ शुक्ला में रथ यात्रा बाद धरेंगे। ये धीरोद्धत नायक को शृंगार होयवे सो जमुनाजी की सेवा विशेष में। तथा गरमी में श्रम हेतु नहीं धरै। आज से नित्य सतुआ अरोगे। सखड़ी में रथयात्रा पर्यन्त मल्लकाछल को गुलाबी मोतिया रंग के। पटका नहीं। चोटी टिपारा मोती के आभरण कुण्डल छोटी शृंगार ठाड़े वस्त्र चन्दन की। हास हमेल त्रवल चोटी धरें। खण्ड पाट भी गुलाबी मोतिया रंग के रूपहरी किनारी के।

वैशाख शुक्ला ६—वस्त्र सरबती छबीन के। जो धोरा रूपहरी सूथन पटका ठाड़े वस्त्र गहरा गुलाबी। आभरण जड़ाऊ हीरा मोती के श्री मस्तक पर फेटा मोरसिखा। वाम भाग को कतरा गुलाबी रेसम को छड़ी के धोरा के सूथन पटका कर्ण फूल को शृंगार लोलक धरें। झूमकी वारे कर्णफूल मध्य को घोटून तक को शृंगार खण्ड पाठ वस्त्र जैसे छबीन के।

यह सूथन पटका को शृंगार ताज की प्रार्थना सों श्री भक्त कामना कल्पतरु विट्ठलवर गुसांई जी ने कियो उष्ण काल एवं श्रावण में होय तथा महारास में एक शयन में शृंगार होय है। कार्तिक वदी ८ को।

ताज को परिचय

एक लावण्यमयी परमसुन्दरी पञ्जाब की हिन्दु ललना हुती। वाकूं दिल्लीश्वर बादशाह ने अपने बलात्कार सों बुलाय यवन धर्म दै असंख्य भोग युक्ता ललनान में यासों लग्न करि रनिवास में राखि लीनी। बिलास के साज सज्जा वाकूं भयावह लगन लागे। सदा उदासीन रहे। ताके पास आयवे वारी हिन्दू ललना दोय हुती जो दिल्लीश्वर के यहाँ सेवक हुते उनकी कन्या एक वीरबलकी दूसरी राय वृन्ददास की। तिनने एक दिन ताज से उदासीन रहिवे को कारण पूँछ्यो ताज ने अपनी सच्ची परिस्थिति बताई। ताको हृदय भक्ति भाव सों भरि गयो।

इन दोनों बालिकान को भी भक्ति रस में ओत प्रोत बनाय दीनी । तब कहन लगी अपने सर्वस्व धन वैष्णवन के कृपाभाजन गुसाईं जी श्रीविट्ठलनाथजी हैं । तब सारी वैष्णव सेवा दीक्षादि की वार्तान सो तथा इनके व्यवहार सो ताज पै अच्छो प्रभाव पर्यो और ताज ने इन बालिकान द्वारा पत्र के द्वारा श्री गुसाईजी की शरण लीनी । दिन रात चिन्ता में मग्न रहे । कह्यो है—"भगवान विरहंदत्वा भात्र वृद्धि करोतिहि" तासो ताज की भक्ति उमड़ि परी । प्रभु कृपा सों दिल्ली पति कोहू हृदय परिवर्तित है गयो । श्री गुसाईजी ने सेवक करि श्री ठाकुरजी माथे पधराये । सो आज काल पोरबन्दर में रणछोड़जीकी हवेली में बिराजे हैं । जिनको ललितत्रिभंगीजी कहे है ।

या भगवदीय ताज ने अनेक पद रचना करि प्रभू कूं रिझाये तासों ही श्री गुसाईजी ने ये श्रृंगार अंगीकृत कियो । दो रचना तथा एक पद या प्रकार है—

छैल ओ छबीला सब रंग में रंगीला बड़ा चित्त का अड़ीला ।
सब देवतों से न्यारा है ।
माल गले सोहे नाक मोती सेस जो है,
मन मोहे लाल मुकुट सिर धारा है ।
दुष्टन मारे ओ सन्तन उबारे ताज,
चित्त में तिहारे प्रण प्रीति करनहारा है ।
नन्द जू का प्यारा जिन कंस को पछारा,
वह वृन्दावन वाला कृष्ण साहब हमारा है ।

(१)

एहो दिल जानी दिल की कहूँ कहानी,
इस्क में बिकानी बदनामी भी सहूँगी मैं ।
देव पूजा ठानी औ निमाजहू भुलानी,
तजे कलमा कुरान सारे, गुञ्जन गहूँगी मैं ।
साँवरो सलोना सिर ताज ओ कुल्लेदार,
तेरे नेह दाग में निदाग ह्वै रहूँगी मैं ।
नन्दके कुमार कुरवान तेरी सूरतपे,
होंतो मुगलानी हिन्दुवानी ह्वै रहूँगी मैं ।

नट में पद—

बहुरि डफ बाजन लागे ऐरी ।
खेलत मोहन साँवरो किहिं मिस देखन जाय ।
सास ननद बैरिन भई अब कीजे कौन उपाय ।

ओजक गागर ढोरियो जमुना जल के काज ।
यह मिस बाहर निकस के हम जाय मिले तजि लाज ।
आओ बछरा मेलिये वन को देहि विडार ।
वे देहैं हमही पठै हैम रहेगी घरी द्वै चार ।
हाहा री हों जात हों मोपे नाहिन परत रह्यो ।
तूतो सोचत ही रही ते मान्यो न मेरो कह्यो ।
रागरंग गृह गृह मच्यो नन्दराय दरवार ।
गाय खेलि हँसि लीजिये फाग बड़ो त्योहार ।
तिन में मोहन अति बने नाचत सबे गुवाल ।
बाजे बहु विध बाज ही सेज मुरज ढफताल ।
मुरली मुकुट बिराजही कटिपर बाधे पीत ।
नृत्यत आवत ताज को प्रभु गावत होरी गीत ।

या प्रकार श्रीभगवदीया ताज के अनेक पद रचनादि है । ताकी सेवा सो सूथन पटका के श्रृंगार होत हैं ।

साल भर में सूथन पटका के श्रृंगारन की गणना—

वैशाख में एक । अषाढ़ में एक । श्रावण में एक या दो । भादरवा में एक आश्विन में एक । या प्रकार छः ही सूथन पटका के श्रृंगार होय । दिन निश्चय नहीं । भादरवासुद चौथ को श्रृंगार निश्चय होय है ।

वैशाखवदी शुक्ला ७ गोस्वामी तिलक गिरधारीजी को उत्सव जो लालगिरधरजी कहे जांय उनको उत्सव—

देहली वन्दनमाल । हांडी, जलेबी को वारा वस्त्र केशरी पाग पिछोड़ा, पठानी किनारी को आज सो ठाड़े वस्त्र बन्द । कन्दरा खुली के दर्शन होय । फुहारा चले । दिन भर राजभोग होत ही मणिकोठा के कोण में चलतो रहे । उत्थापन में सन्मुख में भोग आरती में नये-नये ढंग के धार छूटें सन्मुख झारा लगे भोग के दर्शनन में झारा सों जलधार गिरे । फेर दर्शन भये बाद बन्द होय । मनुष्य चादरसी काडतो रहे । आभरण मोती हीरा के । सिलमा छोटो श्रृंगार मध्य को कतरा । मोर पक्षको लूम को सखड़ी में दही भात सिखरन भात अरोगे । रथ यात्रा पर्यन्त कर्ण फूल धरें । चारो तरफ छिड़काव बढ़े । एक-एक घन्टा में दुपहर में छिड़काव होय ।

पद-मंगला—आज हरि नेत्र उनींदे आये । श्रृंगार होते में—उष्णकालिक पद गवें ।

शृंगार सन्मुख—बलि-बलि पांऊ धारिये नृपतिवर । राजभोग आये पर-छाक के चोखला गवे ।

टेरत हरि फेरत पियरो पट पीत ऊपरना वारे ढोटा ।
हरि को ग्वालन भोजन लाई रंग रंगीली डलिया ॥

राजभोग सन्मुख—सेवक की सुखदास सदाँ श्री । उत्थापन में इनको निर्मित पद 'अनत न जैये पिय रहिये मेरे ही महल । छूटत फुहारे आगे नीके बैठे ।'

आरती में—पिछोरा खासा को कटि बाधें । **शयन में**—जल बिहार के उष्ण कालिक पद ।

श्री गोस्वामी तिलक लालगिरधरजी को संक्षिप्त परिचय—

सम्प्रदाय कल्पद्रुम—

बहुरि सम्प्रदायाधिपभये—विट्ठलनाथ सुजान ।
दैवीजन उद्धरण कों भक्ति मार्ग सुखदान ।

इनके चार पुत्र भये—

प्रथम हि गिरधरलाल जू विट्ठलेश सुखकन्द ।
माधव सित, सातम सुभग नन्द दिगिश रसचन्द ॥१॥
प्रकटे बहुरि गुविन्दजू—विट्ठलेश सुखदान ।
मृगसरवद बारसहि कों मुनिग्रह सच्छित आन ॥२॥
बालकृष्ण प्रकटे बहुरि भक्ति सिन्धु अरविन्द ।
श्रावण कृष्णा चौथ को नभ पूरन मन कन्द ॥३॥
प्रकटे वल्लभलाल फिर कुलवृद्धी सुखकन्द ।
भादव कृष्ण चौदसहि को वेद पूर्ण मुनिचन्द ॥४॥

इनके ही दामोदरजी प्रकटे जो मेदपाट पधार ले गये—

प्रकट भये गिरधरन के दामोदर बलवान ।
माघ कृष्ण आठम सुभग मुख शशि भुवि आन ॥१॥

अपने पुत्र श्री दामोदरजी को गोकुल में उपनयन करके आवते समय गौरवा नें बरछी मारी और श्री गिरधारीजी डंडोती शिला तक आयके लीला प्रवेश कर गये ।

नन्दभूमि मुनिचन्द के राम जन्मतिथि अग्र ।
दामोदर उपनयन करि गिरधर गोकुल नग्र ॥
फिर आवत गोपालपुर दानघाटी पर मान ।
शक्तिदीन गिरधरन कों दुष्ट गौरवन आन ॥

भोर होत गिरधरन के दर्शन करि सुख पाय ।
किय प्रयाण निज धाम कों भ्रातन पुत्र भलाय ॥

श्री गोस्वामी तिलक टिपारा वाले विट्ठलेशरायजी के चार पुत्रन में सबसे बड़े लाल गिरधारीजी भये । जन्म सं० १६८९ में आज के दिन गोकुल में भयो आपके तीन भाई श्री **गोविन्दजी** १६९७ मृगसर वदीवर तृतीया । पुत्र विट्ठलेश रायजी के **बालकृष्णजी** वि० १७०० श्रावण कृष्ण ४ चतुर्थी **चौथे वल्लभजी** जन्म वि० १७०४ भाद्रपद कृष्ण १४ इनमें सबसे बड़े लालगिरधरजी जो आज के उत्सव नायक भये ।

आप सात्विक सरूप सौम्य प्रकृति के हुते । आपके समय ब्रज जतीपुरा में यवनन के उपद्रव बढ़े । पर आपको सरल स्वभाव से कछु बिगाड़ि न सके । पर अन्त में आप पर गोरवा द्वारा वार भयो ।

आप अच्छे सुन्दर पद रचयिता हुते । आपको एक समय लाहौर विराजनों भयो । डोलोत्सव के सोलह दिनही बाकी रहे । आपको श्रीनाथजी ने आज्ञा करी कै जब तुम आवोगे तब मैं तुमसों ही खेलूंगो । और अमुक वैष्णव लाख मुद्रा भेंट करेगो । ये आज्ञा सुन भेंट ले आप पधारे । और वसन्त फाग खिलाये । डोल झुलाये । आप की रचना कछु या प्रकार है—

राग सारंग—आपने वर्णन प्रभु परक या पद में कियो-अनत न जैये मनोरथ कीजिये ।

१—अनत न चलिये रहो मेरे ही महल ।
जोइ जोइ मोसो कहोगे सोइ सोइ करिहो टहल ।
सुख लीजे सुख दीजे जैसे काम दण्ड कुहुरन कहल ।
लाल गिरधारी पिय आये मेरे पहले ही पहल ।

२—कबकी मनावन आई होरी तोको उठ चल प्यारी मेरी ।
नीचे नेन किये ऊँचे न चितवत कोऊ न जानत हित चित की तेरी ।
मेरे वाके बीच कोऊ काहे को परत हो वात न सुहात उनको मेरी ।
लाल गिरधर पिय आपु ही आवेगे उनके गरज परेगी मेरी ।

हिंडोला को झूलना सोरठ-राग में—

नवल हिंडोरना नवल हिडोरना नव तरवि तनया तट रच्यो ।
खम्भ कदम्ब के खम्भ कदम्ब के मखतूज चोलनासो मच्यो । नवल.
हाटक हरी की हाटक हीरकी नग पांच पटुली मन हरे ।
कब कैसे कहे कब कैसे कहें छवि वरनी नापटे । नवल.

छवी फवी वरनी ना पटे हो जगमग ज्योति हुहुं दिसे ।
मटक भूतल मान मानों उभय अद्भुत यों लसे । नवल.
मुक्ता मुरवा झालरी झूमका बहुविधि सच्यो ।
लाल गिरधर कारने नव तरनि तनया तट रच्यो । नवल.
गिरधर झूल ही झूल ही संग स्वामिनी फूल ही ।
रस में पागे परम सुहागे दोऊ सम तूलही ।
झुलावत नागरी झुलावत नागरी—अनुराग अन्तर चित्त धरी ।
षट् दस बरस की षट् दस बरस की—नव अंग जोवन सो भरी ।
भरी जोवन अंग संगन प्रानपति मन भावही ।
विविध वसन अनूप अभरन कोटि कामलजावही ।
आप नन्दे जगत वन्दे जहाँ श्रीगिरधर झूलही ।
लाल गिरधर प्रेम रस भर सुन्दरी मन फूल ही ।
गावत सहचरी गावत सहचरी सुरतान मान बन्धान सों
निर्तत नेहसों निर्तत नेहसों संगीयुत जुप्रमान सों ।
कोऊ गति उघरत ही कोऊ गति उघरतही सब साज बने मृदंगा ।
अगनित बाज ही अगनित बाज ही ताल सरस सुढंगा ।
मंद मंद सों छन्द बाजे नाद शब्द ब्रज छाजही ।
किंकिनी करि ताल जमाव ताल रिझावही ।
रीझत ही छिन भीजही भामिनी अंक नेनन सो भरीरी।
लाल गिरधर प्रेम वस कर सुजस गावे सहचरी।
सजल घनघोर ही सजल घनघोर ही चहु ओर चपला चमक ही ।
वादर उनय वादर उनय झुकि झुकि बूंद झमकही ।
मधुकर झूम ही मधुकर झूम ही नव कुंज पुंज पराग के ।
मोर मराल मोर मराल—शब्द रसाल कोकिला पिक शुके ।
शुक पिक सारस चार चकवा विविध बानी बोलही ।
लता ललितन कुंज निकुंज कुसुम भाई अतोलही ।
कुसुम भार अतोल फलदल विविध पवन झकोरना ।
लाल गिरधर परस पद आनन्द नभ घन घोरना ।

(१) दामोदरजी को उपनयन भये बाद एक दिन आप विक्रमाब्द १७२३ श्रावण पड़वा को गोकुल से जतीपुरा पधारते हुते । तब दान घाटीपे एक गौरवा ने बरछी मारी । आप लड़खड़ाते दानघाटी से डंडोती शिला तक पधारे। और श्रीजी को निरखकर लीला प्रवेश कियो । आपने तीनों भाईन को पुत्र

श्री दामोदरजी को सँभलायो और तब से ही श्री गोविन्दजी बालकृष्णजी ने भया-वह घटना से घबरायकर श्रीजी से प्रार्थना करी और वहाँ से प्रस्थान करायवे को निर्णय कियो । आपके एक ही पुत्र श्री दामोदरजी हुते ।

(२) कछु प्रमाण औरहू मिले हैं कि दान घाटी पक्की वनवानो ब्रजवासी चाहते हुते ताते आपने श्री गिरराज के भावात्मक स्वरूप पर खुदाई वगैरे की रोक करिवे सों ब्रजवासीन ने आप पर आक्रमण कर लीला प्रवेश करायो।

(३) सम्प्रदाय कल्पद्रुम के आधार पर जनेऊ करके गोकुल से आते समय दानघाटी में गौरवाने छुरा मार्यो और लीला प्रवेश भई ।[1]

(४) कछु प्रमाण के आधार से आपको लीला प्रवेश सद्दू पाण्डे की बैंठक में भयो । तासो कोई भी बालक वा बैंठक में तपेली न करे । तथा दर्शन मात्र करिके आवत है ।

वैशाख शुक्ला अष्टमी—ऐच्छिक श्रृंगार । चन्दनी धोती, उपारना, पगा सफेद मोर चन्द्रिका मोती के आभूषण । पिछवाई खण्ड एक सार । मध्य को श्रृंगार । कमलन की माला । उष्ण कालिक ऋतु अनुसार पद ।

वैशाख शुक्ला नवमी—पिछवाई खण्ड हलके गुलाबी सफेद किनारी पठानी दुहेरा पिछोड़ा पाग छोटो । श्रृंगार मोर सिखा रेसमी ।

वैशाख शुक्ला दशमी—पिछवाई खण्ड तथा धोती उपरना चम्पई । किरीट मोती कौ । वनमाल को श्रृंगार । उष्ण कालिक हीरा मोती मिश्रित आभूषण । कुण्डल आदि । पद सारंग राग में—

"आज धरे गिरिधर पिय धोती ।
अलिम्मा झाँकी अरगजा भीनी पीताम्बर घनदामिनी जोती ।
टेढ़ी पाग लकुटि छवि राजत श्याम अंग अद्भुत छबिछाई ।
मुक्तामाला फूली बनराग परमानन्द प्रभु सब सुखदाई ।
ये पद राजभोग में गायो जाय ।

वैशाख शुक्ला ११—वस्त्र केशरी पिछोड़ा दुमालो पटका मोती को सेहरा चोटी पिछवाई चितराम की । उष्णकाल की खसखाना चन्दन बंगला जल संकेत बिहारी की खण्ड में यज्ञ करावते ब्रह्मादि । पद सेहरा के भाव के । उष्ण कालिक श्रृंगार ।

---

१ प्रथम द्वितीय खास दफ्तर नाथद्वारा महाराजजी के यहाँ से नन्द किशोर त्रिपाठी द्वारा प्राप्त—

वैशाख शुक्ला १२—कपासी रंग को साज। पिछवाई धोती उपारना छोड़को कटिको पटिका मोती के आभूषण। पाग कतरा दुहेरा सफेद मोरछल को कर्णफूल को शृंगार छोटो।

वैशाख शुक्ला १३—वस्त्र सरवती। पाग पिछोड़ा खण्ड। ऐच्छिक शृंगार। मध्य को चोटो मोती के आभरण उष्णकाल में जब भी उत्सव आवे वाके पहले गहरे गुलाबी वस्त्र धरावें।

वैशाख शुक्ला १४ [नृसिंह जयन्ति]—

देहली वन्दन,माल,हांडी, अभ्यंग वस्त्र केशरी पिछोड़ा। कुल्हे पिछवाई खण्ड, किनारी दुहेरा पठानी की, जोड़को, पक्ष को तीनको क्रीट छोटो जड़ाऊ। आभरण हीरा मोती के बघनखा धरें। कड़ा सिंहमुखी वेत्र दोनों सिंह मुखवारे। कुण्डल वनमाला को। शृंगार अलंकार बालकृष्ण लोचन विशाल धरें आज से रथयात्रा के पूर्व दिन तलक राजभोग सें लैके सन्ध्यार्ति तलक प्रतिदिन सन्मुख जल को थाल आवे। जामें बीच में छत्री तथा चाँदी के इक्कीस खिलौनादि कमल वगैरे पधरावे। जल भरे। तथा कछू भी उत्सवादि होय तो थाल आवेही ताको भगवदीय ये भाव राखे जमना जल बिहार नित्य प्रभु करे। उष्ण कालिक लीला। **व्रज में जल बिहार के स्थल निम्न प्रकार हैं—**

यह वर्णन श्री विट्ठलनाथजी गुसांइजी को चतुर्थ पुत्र श्री गोकुलनाथजी ने व्रजयात्रा वरणन गुसांईजी ने बि० १६०० में करी। तब को वर्णन कियो जल-शय्या स्थल **कुमुदवन। जमनावतो। गोविन्द कुण्ड। सुनहरा की कदम्ब खण्डी। मोती कुण्ड। भद्रवन।** वाही भाव सों ये थाल आवे तथा बीच में जोड़ी तीन। खिलौना तथा अन्य पात्रन के भाव या प्रकार माने हैं। **सरोवर मान सरोवर। पान सरोवर प्रेम सरोवर। चन्द्र सरोवर। ये चार यूथाधिपान संग विहार स्थल है।** छैपोखर कुशपोखर तरजी की पोखर अजनोखर भानोखर पिपासा पोखर पीरी पोखर ये छः प्रकार पोखर की हैं। इक्कीस वस्तुएँ उपरोक्त—१७ तथा चार गिरि-राज जमनाजी आदि चार यूथाधिपान सों २१ होय हैं। ये २१ वस्तु आवें। श्रीमद्भागवत में उष्ण कालिक ऋतु वर्णन में या प्रकार है—

ग्रीष्मो नामर्तुरभवन्नाति प्रेयाञ्छरीरिणाम्।
यत्रास्ते भगवान् साक्षात् रामेण सहकेशवः॥

गरमी के दिन शरीर धारीन कों बड़े प्रसन्नता न होय परन्तु वृन्दावन तथा वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिर में श्री वृन्दावन की छटा होवे से सुखद मालूम परे है। जहाँ फुहारे चले होदन में अगाध जल भरे रहे। तथा छिड़कावन सो शीतल

मन्द सुगन्धित वायु चले। या प्रकार वर्णन यहाँ कियो है। (श्रीमद्भागवत १०-१८-३६) तासों ही होद तथा थाल जल को आवे हंस, सारस, मच्छ, कच्छ आदि जल चर्या में धरे जाय तथा कहूँ-कहूँ बतकें रुई कपास कीहू आवें यहाँ जल भरे जब सो आवे नित्य कमल धरे जाँय कमल के पत्ता हू धरें।

फाल्गुन कृष्णा ७—को श्री गिरधरजी पै कृपा कर श्रीनाथजी मथुरा सतघरा जो गढ़ा की राणी दुर्गावती की प्रार्थना सें बनवायो वामें होरि खेलिबे पधारे। तथा श्री गिरधरजी ने सर्वस्व समर्पण कियो। जाको प्राचीन चौखटा सेवा में श्रीजी धरावे। वा दिन सो आज के दिन पुनः गोपालपुर जतीपुरा श्रीजी पधारे। तासों शयन में राजभोगवत् सब सामग्री अरोगे।

चतुभुजदासजी कों श्रीनाथजी के दर्शन की अत्यधिक लालसा बढ़ गई। तथा जब से श्रीनाथजी मथुरा पधारे तब से गोवर्द्धन की तरहटी में बैठ के ये पद प्रतिदिन गावते या कारण भक्त कामना कल्पतरु प्रभु रहि न सके और आज के दिन पधारे। वह पद ये "गोवर्द्धनवासी साँवरे लालन तुम बिन रह्यो न जाय। व्रजराज लड़ैते लाडले।"

आज सन्ध्यार्ति भये बाद ग्वाल अरोग के विशेष नृसिंह जन्म के दर्शन होय। आज के ही दिन श्री सालिग्रामजी को पञ्चामृत जन्म के समय होय। यह समय को ले पञ्चामृत के समय सन्ध्या शृंगार वोही रहे। वड़े नहीं होय। फेर शीतल भोग आवे। शृंगार वड़े होंय। राजभोग शयन भोग भेले अरोगे। पञ्चामृत प्रकार सर्वत्र एक सो है। कहूँ-कहूँ आचार्यश्री की आज्ञा की भावना सों हेर-फेरहू है। दूध, दही, बूरा, शहद घृतादि सें पञ्चामृत होवें। तिलक होय। फूल माला धरें। वारे विग्रह श्रीजी के पास बिराजे। जन्म के समय ही झांझें बजें। घन्टा, झालर, शंख तथा नगाड़ा इनही पंच शब्दन सों जन्म होय।

पद या प्रकार माहात्म्य के गाये जाँय—

मंगला—गोविंद तिहारो सरूप। अभ्यंग के छः पद पूर्वोक्त अक्षय तृतीया वारे।

शृंगार—शुभ शृंगार निरख मोहन को। **राजभोग सन्मुख**—जाके वेद रटत ब्रह्मारटत उत्थापन में वे देखियत गोकुल के रूखजू भोग में रतन चौक में—अरी जाको नामकन पति। भोग सन्मुख—प्रलय प्रयोधि जले धृतवानसि। आरती—मोहन नन्दरायकुमार पद्मधर्यो जनताप। वन्दे धरन गिरिवर। जन्म समय सन्मुख—अलापचारी होय के झांझें बजें—यह व्रत माधव प्रथम लायो।

फिर कीरतनिया गली में—तौलौं होंवें कुण्डन जैहो । शयन में—चरन कमल वन्दो जगदीश । मानके पोढ़वे के पद होंय ।

नृसिंह जयन्ती ही क्यों ? चार जयन्ती ही काय कों माने—

चौबीस अवतारन में चार जयन्ति की प्रधानता या लिये है कि मनुष्यन के हित साधन में इन चार अवतारन ने प्रधान भाग लैके ये भक्त कामना कल्पतरू बने शास्त्रन में विष्णु पञ्चक करिवे की आज्ञा है । चारों जयन्ती तथा एकादशी ये पंचक कहे गये हैं । "किञ्च पुष्टि मार्गे भक्त दुःख निवारणार्थम् ।" सें आविर्भाव की मान्यता लई है—

तहाँ मत्स्यावतार वेद उद्धारार्थ । कूर्मावतार चतुर्दशरत्न प्रकटार्थ । वाराह अवतार ब्रह्मा की सृष्टि काहे पर रहे तासों भूमि उद्धारार्थ । पूर्णावतार विषे प्रह्लाद रक्षार्थ । प्रह्लाद भक्त हैं तिनको क्लेश न सहि सके ताते प्रकट उत्सव मान्यो । भक्तोद्धारार्थ है सो नृसिंहावतार भयो । वामनावतार यद्यपि इन्द्र की स्थिरता को बलि छलिवे कों पधारे राजा बलिकौ आत्म समर्पण भक्ति आत्म निवेदन करी ताते येहू भक्तार्थ प्राकट्य—उत्सव मान्यो चहिये । परशुरामावतार व्यूहावतारान्तर्गत प्रकट माने । मर्यादा पुरुषोत्तम राम भये । कृष्णचन्द्र व्यूह विशिष्ट पुरुषोत्तम वासुदेव जुदे माने । बलदेवजी को अवतारन में माने । कल्किम्लेच्छ विनाशार्थ । अतः चार अवतार ही प्रधान रूप से सेवादि सौ, कर्मसो प्रभु सुख विचारै—राम, कृष्ण, वामन, नृसिंह । श्रीमद्भागवत में प्रह्लाद चरित के दश अध्याय हैं तिन में नृसिंह लीला प्रकट है । यहाँ भागवतोक्त एक मन्त्र सर्व कामना सिद्धयर्थ लिखे हैं । पना भोग धरिकै याके जप सों प्रभु दर्शन होय है "ॐ नमोभगवते नरसिंहाय नमस्तेजसे स्तेजसे आविर्भव वज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान् रन्धय-रन्धय तमोग्रस-ग्रस । ॐस्वाहा अभयमभयमात्मनिभूयिष्ठा ॐक्ष्रौं [श्रीमद्भागवत ५-१८-८]

परमानन्दजी की वाणी में श्री नृसिंह साधना को फल—

श्रीनरसिंह भक्तभय भंजन जनरंजन मन सुखकारी ।
भूत प्रेत पिसाच डाकिनी यन्त्र-मन्त्र भव भय हारी ।
सबे मन्त्रनते अधिक नाम जप रहत निरन्तर उर धारी ।
निजजन शब्द सुनत अनुदिन गिर गये गर्भ दनुज नारी ।
कोटिककाल दुरासद विघ्ने महाकाल को काल संधारी ।
श्रीनरसिंह चरण पंकजरज जन परमानन्द बल बलहारी ।

बारह महीना में आज ही उत्थापन में यह पद होय है । ता पद सों यह

सिद्ध होय है कै प्रभु मन्दिर में कलशवारो मन्दिर तथा ध्वजा फहरावत है । ऐसो हतो कै बाबा नन्दरायजी के भवन में बीच में मन्दिर हतो । वे ब्रह्मस्वरूप की पूजा कियो करते । जो स्वरूप अनन्तशयनजी कहावत है । वो मथुरानाथजी के पास विराजत हैं ।

वे देखियत गोकुल के रूख जू ।
प्राची दिशा ते नेक दच्छिन कर मेरी अंगुरिन के अग्र करो नेक मुख जू ।
गोवर्धन श्रृंग चढ़ कहत मोहन चलिये जुदाऊ हमें देखिवे की भूखजू ।
जनम भूमि चलि आये गोविन्द प्रभुतन पुलकित अति भयो सुखजू । (१)
चढ़ि गिरि श्रृंग कहत मोहन इहाते देखियत सकल ब्रज दाऊँ ।
यावत सम्पत तुम ही ब्रजराज की नेक इहालों चढ़ि आऊँ ।
आंखी पेखी काहू नहिं सूझत मैया हो कनक कलस पर ध्वजा बताऊँ ।
गोविन्द प्रभु सों कहत सखा सब ऐसे ही तुम्हें बताऊँ । (२)

यासों ही श्रीजी के मन्दिर पर कलश, कलश पै सात ध्वजा । और ये ध्वजा मनोरथ सों चढ़े या कलश को वरणन या प्रकार है ।

सूरदासजी के पद में कलश चक्र एवं ध्वजा वर्णन एक ही पद में वर्णित है—

देख्यो कलश एक अपार ।
सकल ब्रज को सार यामें मृग रिपुन की वार ।
धर्यो चक्र सुधार तापे वक्रताकी धार ।
शिव सनक शुकदेव नारद रहे पचि पचि हार ।
शेष महिमा कहि न आवे निगम गावे चार ।
पीतध्वज फहरात तामें सूर जन बलिहार ।

नन्द भवन में कन्हैया विराज रहे हते । बाबा नन्दजी हू अपने भवन भीतर एक मन्दिर में प्रभु विराजमान राखि नित्य सेवा कियौ करते । एक दिन पूजा करत-करत बाबा नन्द के पास कन्हैया ने उन प्रभु शालिग्राम जी को मुख में पधराय लिये और या प्रकार संकेत कियौ कै मैं पूर्ण पुरुषोत्तम विराज रह्यो हूँ साकार रूप में फिर निराकार की निर्गुण की बाबा पूजा काहे कों करें ।

हंसत गुपाल नन्दजु के आगे नन्द सरूप न जाने
निर्गुन ब्रह्म सगुन धर लीला ताहि सुतकर माने ।

एक द्यौस पूजा के अवसर नन्द समाधि लगाई ।
सालिग्राम मेल मुख भीतर बैठ रहे अरगाई ।
नन्दे ध्यान विसर्जन कीनो आगे मूरति नाई ।
कहो मेरे लाल देवता कहँ गयौ यह विसमय मन भाई ।
मुख से काढ़ दिये जगजीवन हस्त कमल कर लाई ।
परमानन्द दास को ठाकुर खेल मच्यो ब्रज माँई ।

या पदाधार से कलश वारो प्रभु को मन्दिर नन्दालय में हुतो और तासो ही श्रीनाथजी के मन्दिर में ब्रज में कलश (गुमट) वारे मन्दिर अद्यावधि दर्शन देत है । प्राकट्य वार्ता तथा चौरासी वैष्णव वार्ता में हीरामणि हुस्ता को मन्दिर नकशा (चित्र) बनवायवे की आज्ञा श्री आचार्य महा प्रभु ने दीनी और तीन दफे फेर फेर के गुमट रहित की आज्ञा भई और कलश सहित नकशा बन आये तब आचार्यश्री ने प्रभु इच्छा मान वह कलश ध्वजा सहित मंदिर बनवायो ।

ताही भाव सों आचार्य हरिरायजी ने नाथद्वारा मन्दिर श्रीजी के छपरा के मन्दिर में कलश एवं श्री सुदर्शन चक्र तथा सात ध्वजा सिद्ध कराय पधराई । सो अद्यावधि दर्शन दें भगवेदीयन कौ कृतार्थ करें है कलश पे चक्रराज जामें विराजे वामें सात पाषाण विग्रह सात सरूपन के भाव सों है तथा ऊपर श्री चक्रराज विराजें और पीछे सात ध्वजा फहरावे सूरदास के उपर्युक्त पदाधार पै जहाँ कलश है वहाँ चौतरा पर चारों दिश सिंहन के चित्र हैं। उक्त पद की व्याख्या सम्पूर्ण रूप से यहाँ करें हैं ।

एक कलश अपार देख्यो जाको पार हू न पाय सकें। कारण जामें सातो बालकन को तेज पूंज है । जामें सातो निधीन को सरूप है। जाको पार पायवे में शिव सनकादि शुकदेव नारद शेष महेश निगम हू कह न पाये । चारों वेद हू ते न्यारो तथा चारों वेद प्रतिपाद्य यह कलश है समस्त ब्रज को अर्थात् ब्रजलीला नायक ब्रज सार भूत यामें स्थित हैं । याके नीचे सिंहन की पंक्ति चारों दिशान में चारो सिंह विराजमान है और ताप सुधारकर चक्र धर्यो है ।

चक्र स्वरूप यामें काहे को धर्यो। प्राचीन भगवदीयन की वाणी है कि जब प्रलय के मेघ वर्षे तब श्री प्रभु ने अपने चक्र को आज्ञा करी और वह कलश पर विराजमान होय के अति वृष्टि के जल को शोषण करत रह्यो। ताही सों यह सदा सर्वदा विराजमान है ।

प्राकट्य वार्ता २६ पूरनमलखत्री की ।

चक्र श्री सुदर्शन चक्र जी हैं। प्रसिद्धि में दो ही चक्र विराजमान हैं। एक जगन्नाथपुरी में भ्रामरी चक्र। दूसरो यहाँ श्री सुदर्शन चक्र। श्री सुदर्शन चक्र रक्षार्थ विराजे हैं। भक्तन की कामना पूर्ण करिवे अतरसों स्नान करै है एवं प्रभु प्रसाद को नैवेद्य अरोगें और सरूपात्मक आप विराजें है। आप को सरूप सप्तधातु विशिष्ट तथा कटवरा वारो है। बीच में रन्ध्र एवं नीचे पकड़िवे को चिह्न। वोही सरूप अद्यावधि परम्परा से श्रीनाथ जी के साथ मन्दिर में रक्षार्थ विराजे है। स्थापत्य कला मन्दिर निर्मातान की उक्ति है कि राज प्रासादन में तथा मंदिरादिन में सप्त धातु युक्त कलश एवं ऐसी वस्तु राखी जाय जामें विद्युत चोट फेट टूट फूट वगैरे एवं छत्र भंगादि न हों अतः ये श्री विग्रह विराजमान है।

इनके साथ सात ध्वजा है ये सात ध्वजा भी अनेक भावना एवं भाव सों विराजे है तथा मनोरथी अपनी मनोरथ पूर्णता पर नई ध्वजा चढ़वावें ताको कछुक भाव या प्रकार वर्णित है :—

कनक कलश पर धुजा फहरात बताऊ—गोविन्द स्वामी

पीत ध्वजा फहरात तामें सूरजन बलिहार । [सूरदास]

अति ओसेर धरो रुचि कलसा प्रीति धुजा फहराऊँ । [श्री विट्ठल]

सातो बालकन के परमाराधनीय समस्त पुष्टि सृष्टि के वन्दनीय सेवनीय प्रभु गोवर्धनधर है। अतः समस्त वैष्णव सातों घरन के ही सेवक होयवे सों सात ध्वजा सातन की और सों फहरे हैं। अथवा सप्तद्वीप सप्त सिन्धु पार तक पुष्टि पताका फहर रही है अतः सात ध्वजा यहाँ फहरावे हैं। तथा सप्त लोकन के हू दैवी जीवन पर इन ध्वजान की कृपा सों लोकिक अलौकिक कामना पूर्ण होय तासों भगवदीय सात ध्वजा तथा यथाश्रद्धा ध्वजा चढ़ावें है। तानसेन ने हूँ आपकी लीला सर्वत्र विराजमान है यह पद में वर्णन कियो है। सो या प्रकार है।

तेरी गति अगाध मोपे वर्णित वरनीन जाई निरंजन निराकार नारायण ।
सप्तद्वीप सप्त सिन्धु अष्टकुल पर्वत मेरू धर्यो सर्व धारायण ।।
तूही चंद तूही सूरज तूही उडुगण तूही तेज पवन धरनि आकाश मान ।

जहाँ जहाँ जब जब ध्वजा जी प्रदेश में पधारे ताकी मान्यता साक्षात् श्रीनाथ जी पधारें तब प्रभु समान मान भक्त गण सेवा स्वरूप सों पधरावे हैं तथा महान् उत्सव करें हैं । वहाँ गोस्वामी बालक ध्वजा चढावें तथा दो आरती हू महाराज करे। यहाँ सों विदा होय पुनः पधारे वैण्ड सो सलामी होय। वहाँ ताके उपांग बड़े बड़े मनोरथ होय ।

चक्रराज की सेवा तथा भोग अतर ही क्यों ? ताको भाव तथा महत्ता—

चक्र सुदर्शन धर्यों कमल कर भक्तन की रक्षा के कारण (परमानन्द) ।

प्राग्दिष्टं भक्त रक्षायां पुरुषेण महात्मना ।
ददाह कृत्यां तां चक्रं क्रुद्धाहिमिह पावक: ।। ९-४-४८

महाराजा अम्बरीष पर चक्र ने कृपा कीनी तथा रक्षार्थ सदा विराजमान हुते तासों ही भक्तराज अम्बरीष को कछु विगार न सके ।

सुदर्शन नमस्तुभ्यं सहस्राराच्युत प्रिय* ।
सर्वास्त्रघातिन् विप्राय स्वस्तिभूयात् दुंस्यते ।। ९-५-४

आपकेहू हजारन करबरा तथा हजारन रन्ध्र हैं आपकी सेवा में केवल दर्शन अतर समर्पन तथा भोग अरोगानो होय है । अतर में द्रवता तथा स्नेह है । तासों आप भक्तन पर द्रवीभूत रहे हैं । तथा स्निग्धता (सच्चिक्कणता) राखे जैसे अतर अपनी सौरभ सर्वत्र फेलावें ऐसे ही आप के श्रीयश सौरभ सों भक्त स्वस्थ रहें । तासों ही सब लोग अतर ही चढ़ावे है । चक्रराज कों अतर धराते ही मन: कामना पूर्ण होय है । धार तेज न बने । परम भक्त को आप रस स्नेह सच्चिकण है तासों शीतल स्नेह युक्त रहें । भगवादयुध हो वैसे धूप-दीप पूजा प्रकार कछू नहीं । एक मात्र अतर समर्पण कराय भोग धरें । ये प्रकार जगद् गुरु श्रीविट्ठलेशरायजी (गुसाईजी ने) मंदिर सेवा प्रकार के साथ चालू कियो विजयादशमी सों लैके कार्तिक शुक्ला १५ तक घी को अखण्ड दीपक रहे ।

आज के दिन एवं कार्तिक शुक्ला एकादशी प्रबोधिनी के दिन माहात्म्य के पद होंय । ताको आशय यह है कि श्रीमद्भागवत में निहित है और वे चार पद ही प्राय: इन दोउ उत्सवन में विशेष गाये जांएँ है । (१) स्तुत्यात्मक (२) उपदेशात्मक (३) गीतात्मक (४) घटनात्मक ये चार प्रकार सों भागवत वर्णित है समस्त लीलाहू वर्णित है ?

सर्वप्रथम घटनात्मक वर्णन है याही सों मंगला में घटनात्मक भाव को पद होय—

गोविन्द तिहारो सरूप निगम नेति नेतिगावै ।
भक्त हेत श्याम सुन्दर देह धरि आवै ।

---

* कल्याण—श्रीमद्भागवताङ्क पृष्ठ ६१—श्रीमद् भागवत की अनिर्वचनीय महिमा—ले० शान्तनुबिहारी द्विवेदी ।

योगी जन ध्यान धरत सपने नहि पावै ।
नन्द घरनि बाँध बाँध कपि ज्यों नचावै ।
गोपी जन प्रेमातुर तिनको सुख दीनो ।
अपने-अपने रस विलास काहू नहिं चीन्हो ।
श्रुति स्मृति पुराण कहत गुण विचारी ।
सूरदास प्रेम कथा सबहिन ते न्यारी ।

दूसरो उपदेशात्मक—

आनन्द सिन्धु बढ़यो हरि तन में ।
राधामुख पूरण शशि निरखत उमग चल्यो ब्रज वृन्दावन में ।
इत रोक्यों यमुना उत गोपिन कछु एक फेल रह्यो त्रिभुवन में ।
ना परस्यो करमठ अरु ज्ञानी अटक रह्यो रसिकन के मन में ।
मंद-मंद अवगाहत बुद्धि बल भक्त हेत लीला छिन-छिन में ।
कछु एक लह्यो नन्द सुनु कृपावल से देखियत परमानन्द जन में ।

तीसरो स्तुत्यात्मक—

अरी जाको वेद रटत ब्रह्मारटत शम्भुरटत शेषरटत नारदशुक व्यासरटत पावत नहि पार री ।

ध्रुवजन प्रह्लाद रटत कुन्ति के कुंवर रटत द्रुपदसुता रटत् नाथ अनाथन प्रतिपाल री ।

गणिका गज गीध रटत राजन की रवनी रटत सुतन दे दे प्यार री ।
नन्ददास श्रीगोपाल गिरवरधर रूप रसाल ।
जसोदा के कुंवर राधा उर हार री ।

चौथो गीतात्मक—

जो रस रसिक कीर मुनि गायो ।
सो रस रसिक रहत निशि वासर शेष सहस्रमुख पार न पायो ।
शिव सनकादिक नारद-सारद कमल कोष रंचक न चखायो ।
यद्यपि रमा रहत चरननतर निगम सुअगम अगाध जनायो ।
यमुना तीर निकट वंशीबट वृन्दावन बीथिन जु बहायो ।
जो रस रसिकदास परमानन्द व्रषभानसुता उरमांझ बसायो ।

वैशाख शुक्ला १५ [प्रथम परदनी तिलकायत की]—

शृंगार वस्त्र सफेद मलमल के । परदनी फेटा छोटो । मोती के आभरण । एकदम छोटो शृंगार । कर्णफूल दो । हार एक । पचलड़ा कटिपेच सफेद । मोर

पक्ष को कतरा। आज को ही श्रृंगार अषाढ़ शुक्ला चौदस को भी वनमाला धरें तब ऐसो ही होय। मलमल को सफेद साज पिछवाई खण्ड। सादा बिना किनारी को। पद उष्ण कालिक।

जेष्ठ कृष्ण १—आज मंगला में—कल्ल वारे—

सफेद फेटा साल में दो ही दिन रहे। मंगला में फेटा रहें। वस्त्र सफेद। आड़दग्द खण्डपाट। सफेद सादा पाग खिड़की की। मोरपक्ष सफेद को कतरा वछी धरें। छोटो श्रृंगार मोती को। कड़ा पहुची बाजू हलके मोती के लड़वारे। कर्णफूल को श्रृंगार। आज गरमी की ऋतु आरम्भ से तथा जब-जब जल भरें तब राजभोग एवं सन्ध्यार्ति बाहर मणिकोठा से होय। आज सांज सौं मंगला श्रृंगार में महीना भर तक जमुनाजी के पद गवैं। जब-जब भी उत्सव आवे जेठ में तब ताके पूर्व दिन वस्त्र रंगे। सो झपक करि प्रभु को सौरभ युक्तशीत। **उन वस्त्रन सों हवा होय। जब राजभोग आरती** उतर जाय तब ये दर्शन होय। और पदहूँ या भाव सों गवैं। जेष्ठ कृष्णा ३—चार सरूपोत्सव के वस्त्र रंगे गये। तासों ये झपक की हवा भई। पद ये गवैं। "चन्दन की खोर किये चन्दन सब अंग लगाये सौंधे की लपट झपट पवन फहर में। प्यारी को पिया को नेम पिय को प्यारी सों प्रेम अरस-परस दोऊ रीझ रिझावैं जेठ दुपहर में। चहूँ ओर खस सवार जल गुलाब धर शीतल भवन कियो कुञ्ज महल में। सोभा कछु कही न जाय निरखे नेन न सचुपाय; पवन ढुरावे परमानन्द दासी टहल में।'

यह सेवा जब तक यह पद होय तब तक होय। भीतर निज मन्दिर में शय्यामन्दिर की आड़ी सो झपट करें और पुनि-पुनि भीजो वे फेर। पद समाप्त होइबे पै दरजीखाना के मुखिया को दे देवे। वो सेवा जायके कटि वस्त्र सिद्ध करें सायं भोग समय लावै।

जेष्ठ कृष्ण द्वितीया—गोस्वामी तिलक दुहेरा—मनोरथकर्ता श्रीदाऊजी महाराजकृत चारसरूपोत्सव देहली वन्दन, माल, हाडी वस्त्र, केशरी पिछोड़ा, केसरी, मोरचन्द्रिका सादा वाम भाग को कतरा फेटापै कुण्डल आज ही धरें। वनमाला श्रृंगार। हीरा मोती के आभरण। पिछवाई, खण्ड केशरी दुहेरा किनारी रूपहरी के। वनमाला को श्रृंगार वि० १८७८ आज के दिन चार सरूप श्रीमथुरानाथजी श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगोकुलनाथजी श्रीनवनीतप्रियजी या प्रकार चार सरूप पधारे इनको विशद वर्णन गो० द्वारकेश लालजी (गन्नूजी) गिरिराज वारेन ने कियो है। यहाँ उन सरूपन को वर्णन मात्र करत है।

> मध्ये श्री मधुराधिपोग्रसरणे हैयंगबीन प्रियो।
> वामे श्रीमथुराधिपा निजमय श्रीविट्ठलेशाह्वयः॥
> सव्ये गोकुलनाथजू निज रमामञ्चेस्थिता पार्श्वयो।
> एवं रूप चतुष्टयं त्रिकमलं संराजते सप्तकः॥

—गन्नूजी महाराज की वार्ता

पद-मंगला में—

तिहारो दरस मोहि भावै श्रीजमनाजू। श्रृंगार में—सुनहरी सेनदई ग्वालन। **राजभोग में**—जय-जय श्रीवल्लभ राजकुमार। **उत्थापन में**—शिर धरें पखौवा भोरके। **भोग में**—वृन्दावन यमुना तट खेवत है नाव। **रतन चौक में**—सखी देख चन्दोंवा मोर के। आरती में—कटिपीत पिछोरी आढ़े ठाढ़ो। **शयन में**—धीर समीरे यमुना तीरे। या उत्सव में वा समय जो पीठधीश्वर हुते उनके नाम मथुरेशजी के गोपाललालजी समस्त परिवार विट्ठलनाथजी के कृष्णरायजी समस्त परिवार गोकुलनाथजी के द्वारकेशलालजी समस्त परिवार नवनीतप्रिय के दामोदरजी (दाउजी)।

श्रीनाथजी को स्वरूप वर्णन हरिराय कृत भावना—

श्रीगोवर्धनधर श्रीनाथजी के अंग के चिह्न ताको भाव सिज्जा मन्दिर के ओर शुकमोर है सो तो स्वामिनीजी के भाव सों है। स्वामिनीजी कैसे मोर की तरह नृत्य करे। और मोरनी रस प्राप्त करे यासों ही मोर दोय है। शुक है सो चतुर चन्द्रावली सरूप शय्या मन्दिर में निकुञ्ज बतावत है। पीठिका पर दोय यूथ है। वह श्रीस्वामिनीजी एवं चन्द्रावलीजी है। दक्षिण दिश बलवन्त खण्डिता वचन सुनावत है और दक्षिण श्रीहस्त पकड़के कहत है अपने अंग सरूप देखि लज्जायमान होत है। यातें पास ही मणिधर सर्प है। मणिरूप दीपक है और कहत है सारी रात तिहारो ध्यान धर्यो तुमको ऐसो नचहिये। कुंज की कन्दरा में मुख बाहर रूप प्रकट है। और तीसरी गाय स्वामिनीजी की कुंज में ते मुख बाहिर कर बुलावत है। और अति बिरहतें कन्दरा के भीतर है। और कुण्डली वारो सर्प है वह प्रभु स्वामिनीजो की इच्छा भवन में है। और गिरिराज कों लेकर चलत है। अथवा बलदेवजी तो शेष है शेष स्वरूप मस्त ग्वाल-वालन को बिदा किये सो चले जात है। नीचे नृसिंह है सो द्वार पर बैठे हैं। बिना आज्ञा काहूकों

प्रवेश नहीं करन देत है। आधिदैविक वघनखा हू धरे है। वाम भाग में दोय श्रुति रूप मुनि है। वे हू कुमारिकाएँ है। एक दिश नित्य सिद्धा है वे मुनि हैं। शय्या चौखूंटी है। वही पीठिका चौरस है। श्रीजी को अभिप्राय बोधक सरूप है। शब्द कर्ता श्रीनाथजी हैं। यहाँ मेष है वह मेष नहीं है "मेधातिथेर्मेष इन्द्रः" या श्रुति के आधार सों अर्थज्ञानी मेष इन्द्र है यमुना पुलिन में कुंजद्वार में आप स्थित है। यमुनाजी चन्द्रवलीजी ललिताजी ये तीन रूप मुनि तीन सरूप हैं। गोपी भाव भावित हैं।

गोपेश्वरजीकृत पीठिका भावना—

पुष्टि को आविर्भाव प्रभु के श्री अंग सों ही है। "पुष्टि कायेन निश्चयः" फल प्रकरण में "षोडश गोपिकानां मध्ये अष्ट कृष्णाः भवन्ति" यासौं आठ सरूपन को ध्यान सेवा स्मरण आवश्यक है। सरूप भावनान में श्री सुबोधिनी के आधार सों फल प्रकरण में प्रमाण प्रमेय साधन फल—इन चार की लीला सर्वत्र ही बिराजमान है। सब सरूपन में "स्वरूप भावना लीला भावना भाव भावनेति" या वाक्य सों प्रथम स्वरूप भावना कहत है :—

उक्षिप्त हस्तः पुरुषोभक्तमाकारयेत्पुनः।
दक्षिणेन करेणासौ मुष्ठी कृत्य मनांसिनः।
वामे करे समुद्धृत्य निह्नुते पश्य चातुरीम्।

तत्त्वदीप निबन्ध में—वाम श्रीहस्त सों भक्तन कौं बुलावत है। दक्षिण श्रीहस्त की मुट्ठी बँधी है। ताको तात्पर्य यह है कि भक्तन कों पहले बुलावें हैं, फेर अँगूठा दिखावें है। और सबन कौ मन आकर्षण करि मुष्टि में बाँध लेत है। यह चातुरी तो देखौ। निकुंजद्वार पर आप ठाड़े हैं उभय भाग कों आच्छादनार्थ ओढ़नी उढ़ाई जाय है। आपकी पीठिका चोरस है पंचदृष्टीन में सन्मुख दृष्टि है। "सर्वरसः" या श्रुति सों भगवान् की रसात्मिका लीलानुभव रस मर्यादा भावना करनी चाहिए।

'रस' शब्द से यहाँ भक्ति लई है। "विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः" या सूत्र सों आलम्बन तो कह्यो उद्दीपन कछू कहनौ चहिये सो कहे हैं—

उनमें अनुभाव विहंगम (पक्षी) है वे है शुकादि। और मुनि है सो श्रीभागवत में वर्णित है "प्रायोबताम्ब विहगा मुनयोभयंच" यह अनुभाव भक्ति को अनुभव करावे है।

उद्दीपन चेष्टा रूप होवे सों मेष (मेढ़ा) लीलानुकूल काल है। और दूसरो

पक्षी भी भक्ति को जनुभव करावे है। व्यूह रूप होवे सों सर्पादि संकर्षण आलम्बन विभाग है। "सर्वं सर्वमयं" या श्रुति के अनुसार आकार्य (बुलाये जायवे वारे) भक्त शेष हैं और शेष पत्नी हू है। गोवर्धन में स्थित तीन मुनि धर्म अर्थ काम है। ये तीनों विभाव है। गाये गोलोक की बोधिका है। ये उद्दीपन विभाव है। श्री नृसिंह अक्षर ब्रह्म है। जैसे निबन्ध में कह्यो है।

"प्रभुत्वेन हरेस्फूर्तौ लोकत्वेनतदुद्भवः" यासों लोक ही याको बीज है। भगवान् अक्षर ब्रह्म स्थित है। और उत्तम पुरुष है नीचे जमनाजी है दूसरे सारे विग्रह हरिदासवर्य है जैसी नित्य लीला में विद्वन्मण्डन में रस बतायो वह भगवद्रूप ही है।

"यावती रसमर्यादा तावन्तोर्था भगवद्रूपा मन्तव्या" जितनी रस मर्यादा है वह सब आप में हैं।

अन्य भगवदीय एवं ग्रन्थन हू में प्रभु विग्रह वर्णन या प्रकार है। तीन रुप तीन भावना सों आपको स्वरूप है।

आप रक्ताभ कछु ललाई लिये श्री गिरिराजवत् अंग-रंग है कुंज के द्वार पर ठाड़े हैं ऊपर चौरस पीठिका है भीतर गोल है जेमने (दक्षिण) श्रीहस्त सों मुट्ठी बँधी है। वाम श्रीहस्त ऊर्ध्व भुजा रूप में है जो द्वार पर स्थित है। वनमाला धराये ठाढ़े सरूप है। बाये तरफ दो मुनि हैं श्रीमस्तक पर शुक फल लिये है। दो मुनीन के नीचे छोटो सर्प है वाके नीचे नृसिंह है। ताके नीचे दो मयूर हैं। दक्षिण दिशा एक मुनि है। मुनि के नीचे मेष (मेढ़ा) है वाके नीचे सर्प है वाके नीचे दो सरूप गायन के हैं या प्रकार स्थित श्रीविग्रह है। ये तीन सरूप **वेद स्वरूप भागवत सरूप** एवं **वृन्दावन सरूप** हैं।

वेद सरूप—वेद तीन सरूप से है ऋगुवेद, यजुर्वेद, सामवेद। इनके प्रवक्ता पैल जैमिनि वैशम्पायन हैं। इनमें कर्म ज्ञान भक्ति वर्णित है। इनके प्रवर्तक सनकादि, वशिष्ठ, उद्धव ये—ही तीनों तीन मुनि हैं। शुकवेद माता गायत्री रूप है और सोम लिये हैं। नीचे मेष है वह काल को द्योतक है। मेष सों ब्रह्मा को सम्बत चलै और मीन में समाप्त होय। वह काल संहारक है। आप पालक हैं। वृषभ (गाय रूप) यज्ञ भाग सेवार्थ है। यज्ञ स्वरूप श्रीगोवर्द्धनधर है। मेष रोमन सो जन पालिने वारो है। ब्रह्म सरूप आपश्री हैं। उत्पति स्थिति प्रभुसन्निधि में है। नृसिंह यज्ञोपरान्त भक्ति प्रवर्तक है। सर्प काल चक्र द्योतक है। मोर वैराग्य सरूप है। गायें कामधेनु है। स्वेदज वनमाला। अण्डज मयूरादि।

जरायुज मुनि गाय आदि। उद्भिज कमलादि। या प्रकार सारी सृष्टि वेद से निहित है। यही महा सरूप है। सर्वोत्तम स्तोत्र में हू कहे है "यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता चतुर्वर्ग विशारदः।"

भागवतोक्त स्वरूप—

दो मुनि—नर-नारायण अथवा राम लक्षमण। एक मुनि कपिलदेवजी अथवा वामन। शुक फल लिये महा मुनिन के मूर्धन्य रसरूपी फल प्रवक्ता शुकदेव। गायें धर्म। पृथ्वी नृसिंह अवतार। मेष मयूर सर्प ये सर्प भगवान् संकर्षण सपत्नी अन्य पुराण सम अन्य चिह्न द्वादश स्कंधात्मक श्री अंग प्रभु को। निबन्ध के अनुसार—

प्रथम स्कन्ध द्वितीय स्कन्ध दोनों चरणारविन्द। तृतीया स्कन्ध—चतुर्थ स्कन्ध—दोनों ऊरू। पंचम स्कन्ध—षष्ठ स्कन्ध दोनों जंघा। सप्तम स्कन्ध—दक्षिण श्रीहस्त। अष्टम नवम दोनों स्तन। दशम स्कन्ध—हृदय (रसलीला) एकादश स्कन्ध श्रीमस्तक सहित, मुखारविंद। द्वादश स्कन्ध—वाम भुजा। या प्रकार भागवतोक्त श्रीविग्रह माने हैं।

वृन्दावनस्थ-स्वरूप—वृन्दावनस्थ प्रभु विग्रह निकुञ्जादि भाव युक्त—

"धन्यं वृन्दावनं यत्र भक्तिर्नृत्यति सर्वदा"।

अतः आपके श्रीअंग में नवधा भक्ति के ही नौ चिह्न है तथा राग द्वेष रहित वृन्दावन में निवास करें है। यहाँ परस्पर हिंसक हू एक जाति सों विराजें हैं।

(१) श्रवण भक्त नाग याकौं चक्षुश्रवा माने हैं। (२) कीर्तन भक्त—शुक मुनि शुकदेवजी। (३) स्मरण—तीनों मुनि। (४) पाद सेवन—मेष (मेढ़ा)। (५) अर्चन—मयूर। (६) वन्दन—दूसरो नाग। (७) दास्य। (८) सख्य—नृसिंह। (९) आत्म निवेदन—दोनों गायें।

समस्त श्री विग्रह सप्तनिधि श्रीजी में—

मुख में जो हीरा है वही माखन अरोगते **नवनीत** है। गोल पीठिका ही **मथुरेशजी** चोरसपीठिका ही **द्वारकानाथजी** है। ऊर्ध्वभुजा ही गोकुलनाथजी है। मुष्टिबँधी जेमने **श्रीहस्त की विट्ठलवर**है। मुख एवं दोनों कुण्डल मदनमोहनजी कुण्डलरूपा युगलस्वामिनी। **मुखचन्द्रजी चन्द्रगा को सरूप**।

गोस्वामी बालक सरूप श्रीजी—एक मुनि वल्लभ महाप्रभु दोनों मुनि गोपीनाथजी विट्ठलनाथजी शुकदेवजी मेष बालकृष्णजी नृसिंह गोकुलनाथजी शेष (सर्प) गिरधरजी दूसरो शेष रघुनाथजी दो गाये यदुनाथजी दो मयूर घनश्यामजी।

जेष्ठ कृष्ण ३—वस्त्र गहरे गुलाबी धोती पटका—पिछवाई। खण्ड। मोती के झीने आभरण। कर्णफूल को शृंगार। श्री मस्तक पर पगा **गुलाबी हलको** मध्य को शृंगार। आज कुनवारा भयो। मोर चन्द्रिका सफेद।

आज सों असाढ़ शुक्ला ११ तक फूलन के शृंगार खस के बंगला। फूलन की कली के बंगला। राधाजी की कली की मण्डनी होय। यह लीला ब्रज मण्डल में श्री गोकुलनाथजी—गुसांईजी के चतुर्थलालजी की **ब्रज यात्रा में इतने स्थल फूलन** के शृंगार भये। ताही भाव सों श्रीजी में उन ब्रज ललना के भाव सों होय हैं।

(१) **बेलन वन**—फूलन के शृंगार भये को स्थल। कच्ची कलीन के वस्त्राभूषण धरें। (२) ऊंचो गांव (३) गूंजनवन (४) **करहला** (४) **मण्डीर वन**—हार शृंगार के द्वारा शृंगार भयो। (६) **लालबाग॰ शेषशायी के पहले** (७) **भद्रवन** में भयो। (८) यमुना पुलिन टीला (नीचे हू भयो)।

या प्रकार आठ स्थल ब्रज में पुष्प शृंगार के वर्णित है।

(१) चन्द्रावलीजी ने किये फूल शृंगार कुनवारा में (२) ललिताजी ने किये फूल शृंगार कोकिलावन में (३) स्वामिनीजी ने किये शृंगार खिद्रवन में (४) जमुनाजी ने कियें शृंगार वृन्दावन यमुना पुलिन में।

द्वादश निकुंज में यमुना पुलिन में द्वादश प्रकार के फूलन के भवन मण्डनी आदि होय है जैसे—

(१) **अठखम्भा**—देख सखी फूलन के अठखम्भा। —**कृष्णदास**

(२) **चौखण्डी**—अति विचित्र फूलन की चौखण्डी जहाँ बैठे रसिक गिरधारी। —**चत्रभुजदास**

(३) **चौबारा**—बैठे लाल फूलन के चौबारे —**कुम्भनदास**

(४) **भवन**—फूल के भवन गिरधरन नव नागरी फूल शृंगार कर अति ही राजे —**छीतस्वामी**

(५) **महल** फूलन के महल बैठे फूलन वितान तने फूलन के छाजे झरोखा फूलन किया रहै —**नन्ददास**

(६) **तिवारी**—बैठे लाल फूलन की तिवारी —**ब्रजपति**

(७) **कुंज**—फूलन की कुंज में फूले फूले फिरत —**गोविन्दस्वामी**

(८) बंगला—फूलन के बँगला बने अतिछाजे बैठे लाल गोवर्धनधारी —**परमानन्ददास**

(९) मंदिर—बैठे कुसुम मन्दिर दोऊ प्रिय प्यारी —**रसिकप्रीतम**

(१०) मण्डली—फूलन की मण्डनी मनोहर बैठे रसिक पिय प्यारी —**चत्रभुजदास**

श्रीमद्भागवत में पुष्प शृंगार।

वर्हं प्रसून नवधातु विचित्राङ्ग,
प्रोद्दाम वेणुदल शृंगरबोधोत्सवाद्य: । —१०-१४-४७
प्रवाल वर्हं स्तबक: स्रग् धातु कृत भूषण: —१०-१०-४७

जेष्ठ में पुष्प शृंगार चार-चार यूथाधिपान के भाव सों तथा दूसरों दिन अभ्यंग होय—**परदनी आडबन्द धोती पिछोड़ा**। वस्त्र जैसे शृंगार सवेरे भये होय वैसे के वैसे उत्थापन भोग सरेवाद शृंगार होय। वस्त्र आभूषणादि सन्ध्यार्ति भोग के साथ पुष्प शृंगार आवे। आर्तिभये वाद शृंगार सब बड़े होय के रात्रि में शय्या के पास सिद्ध विराजे वे। सारे शृंगार-शयन के जोड़ादि नियम के तो धरै ही।

फाल्गुन में जब पुष्पन के आभरण आवे तब शयन में ही आवे। और चैत्र वैशाख में आभरण आवे तो भोग आरती में पुष्प शृंगारवत् आवे। कारण यह है—फाल्गुन में होरी खेलवे के पश्चात् सायं साखी में सज-धज शृंगार करि शयन में रसदान करें। तासों शयन में धरें तथा चैत्र वैशाख में वन विहार श्रीमद्भागवताधार पर कुञ्ज विहार में वसन्त के विकसित पुष्पन के प्रभु अंगीकार किये तासों भोग आरती में धरें। ये जेष्ठ अषाढ़ के वस्त्र आभरण ये सबहू भगवताधार ग्वालवाल तथा व्रज ललना शृंगार करे तासों शृंगार कर घर नन्दालय पधारे। श्रमित होवे सो दूसरे दिन अभ्यंग होय। अधिक गरमी के कारण हू।

अषाढ़ में रथयात्रा के बाद या पूर्व चार श्रंगार होय। रथयात्रा पूर्व एक शृंगार जो पांचवे अभ्यंग के कारण तथा रथ यात्रा बाद तीन शृंगार (१) **मल्लकाछ टिपारा** (२) **सूथन पटुका** (३) **मुकुट काछनी**।

शृंगारन के सरूप तथा भाव—

मुकुट काछनी ललिताजी के भाव सों तथा **कृष्णदास** जी की आडी को। **सूथनपटका** पे दुमाला या पगा फेंटा। दुमाला **छीतस्वामी** पद्मा सखी **फेंटा गोविन्द स्वामी भामा ग्वालपगा परमानन्ददासजी**। चन्द्रभागा सूथनपटुका ताज की आडीको भाव को। **मल्लकाछ टिपारा गोविन्द** स्वामि भामा सखी यह बालक क्रीड़ा को शृंगार है। **परदनी पाग गोविन्द स्वामी** की ओर से **आडबन्द पगा** गोविन्द स्वामी भामा सखी **सूरदास धोती उपरना** सेहरा चम्पकलताजी—**चत्रभुजदास** सुशीला सखी। **पिछोड़ा टिपारा** नन्ददास चित्रलेखा **परदनी दूसरी** ऐच्छिक।

जेष्ठ एवं अषाढ़ में पदन के आधार से उष्ण कालिक शृंगार होय तथा अधिक गरमी में रोहिणी में चन्दन धरै। स्नान होय। शयन के पूर्व जब पद के आधार को शृंगार होय तो फूल के शृंगार नहीं होंय।

जेष्ठवदी ४—शृंगार पद के आधार पर—

वस्त्र सफेद परदनी केशरी पाग। छोटो शृंगार। मोती के आभरण। कर्ण फूल, पाग सादा, कतरा, पिछवाई खण्ड दाखमाडवा की चितराम की। ये शृंगार श्रीदामोदरलालजी ने कियौ। तब से नेहमी होय। पद के शृंगार होंय, दिन निश्चय नहीं। जब ये शृंगार होय तब ये पद गायौ जाय—

आज को पद—

सारंग राग में—

सोहत श्याम मनोहर गात।
स्वेत परदनी अति रस भीनी केशर पगिया माथ।
कर्णफूल प्रतिबिम्ब कपोलन अंग-अंग मनमथ ही लजात।
परमानन्ददास को ठाकुर निरख बदन मुस्कात।

प्रथम अभ्यंग भयो पांच अभ्यंगन में को। शयन में विशेष सामग्री अरोगे।

जेष्ठवदी ५—गहरे गुलाबी रंग के आड़बन्द वड़ी मोती की, पगा, मोरचन्द्रिका, हीरा मोती के भूषण छोटो शृंगार। **साँझ कूं फूलन को शृंगार** भयो।

जेष्ठवदी ६—खसको बंगला आयो, वस्त्र बदामी धोती उपरना पाग। हीरा मोती के आभरण। मध्य को शृंगार। मोरशिखा श्रीमस्तक पर पिछवाई। खण्ड उष्णकालिक, राजभोग में बंगला खस के **तिवारा, महल, रावटी, भवन, गृह** सारंग कुंजन के भीतर **खसखाना**।

१ **तिवारा**—सुन्दर तिवारो **खसखाने** को बनायो। तामें बैठे व्रजराज कुँवर मन को हरत है। —**जीवन**
२ **रावटी**—यमुना तट नव-निकुंज द्रुमदल नव पहुप कुंज तहाँ रची है नागरवर रावटी उसीर की। —**नन्ददास**
३ **महल**—विराजत दोऊ उसीर महल छूटत फुहारे आगे नीके। —**चतुर बिहारी**
४ **भवन**—उसीर **भवन** छायो सुमन तामें बैठे राधारमन एरी अंस भुजन मेली। —**चतुर बिहारी**
५ **गृह**—सीतल उसीर गृह छिरक्यो अतर गुलाब नीर तहाँ बैठे पियप्यारी केलि करत है। —**गोविन्द**
६ **कुञ्जनमध खसखाना**—वृन्दावन कुंजन मध **खसखानौ** रच्यो सीतल बयार झुकि घोपन वहत है। —**कृष्णदास**

जेष्ठवदी ७ रोहिणी होवे सों चन्दन धरे—चन्दन को बंगला—वस्त्र केशरी चन्दन मिश्रित पिछोड़ा। पाग सादा। चोली चन्दन की चरणन में श्रीहस्त में गोली धरें। वड़ी मोती की। आभरण मोती के। आजकल फूलन के आभरण हू धरे हैं चोली सन्ध्यार्ति वाद वड़ी हो जाय। तब आभरण भी राजभोग सरे वाद भीतर ही चोली धरें। फेर दर्शन खुलें। विशेष भोग आवे। दर्शन एक ही होय। चन्दन धराय के भोग आवें राजभोग दर्शन खुले। धूप दीप होय। अनवसर में भी भोग धरवे की पद्धति हुती।

चोली को भाव—

"काचित् दधार तद्वाहुमंसे चंदन रूषितम्" [भाग]

सुबोधिनी—

भुजमगरू सुगन्धं मूर्ध्न्यंधास्यत् कदानु इति अतएव तदीयो धर्मोन्त: स्थित-स्तस्या निरोधं साधयिष्यति इति। चन्दन रूषितमित्युक्तम् चन्दनेन रूषितं-लिप्तम्। चन्दन हेतुर्भुजा लक्ष्मीवा पूर्वोक्ता।

श्रीहस्त में सुगन्धित अगर मिश्रित चन्दन सो लिप्त श्री अंग है। भुजा वक्षःस्थलादि अतः चन्दन चोली धरें। श्री स्वामिनी भाव-भावित चोली धरें। काम शान्त्यर्थ उष्ण कालिक ग्रीष्म शान्त्यर्थ हू।

"चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्ट रोमाचुचुम्बह।" (भाग०)
चन्दन सुगन्ध लगाय आये मेरे गेह। —**नन्ददास**
चन्दन पहर आप हरि बैठे कालिन्दी के कूल। —**गोविन्द**
देख सखी गोविन्द के चन्दन शोभित साँवल अंग।
टीक दुपहरि में खसखानारच्यो तामें। —**चत्रभुज**
चन्दन श्यामतन टौर-ठौर लेपन कर वृषभान दुलारी। —**कुम्भन**
चन्दन को वागो वामना चन्दन को। —**सूर**
रंग महल पोढ़े गोविन्द मलय चन्दन अंग लेपत परस्पर आनन्द।—**परमानन्द**

जेष्ठ वदी ८—वस्त्र पिछवाई। कपासी रंग के धोती पाग पटका मोर शिखा। झीने मोती के आभरण। लूमतुर्रा।

शयन पूर्व सन्ध्यार्तिवाद स्नान भये रोहिणी में गरमी अधिक होय तो स्नान होय सुगन्ध मिश्रित शीतल जल सों तथा शयन में विशेष सामग्री शीतल आवे। दही भात। मीठो शिखरन रोटी आदि।

जेष्ठवदी ९—पिछवाई खण्ड कमल की। सफेद धरती चितराम की। वस्त्र

परदनी मोती की। पाग मोती की। आभरण मोती के। छोटो शृंगार। हमेल धरें। आज को शृंगार पद के भाव सों तथा वार्ता के आधार पर है।

एक समय श्रीनाथजी के शृंगार सब बालक मिलके कर रहे हुते। यदुनाथ जी ने कही सूरदासजी तो आंधरे हैं। तब गोकुलनाथजी ने आज्ञाकरी ये प्रज्ञाचक्षु हैं। इन्हें सब दीसत है। ये महाभाग है शृंगार होते में डोल तिवारी में सूरदास जी कीर्तन करत हुते। तब बालकन ने चिक (टेरा) ऊँचो कर दियो। और श्रीनाथ जी नंगे हुते। शृंगार हे रहे हुते। तब सूरदासजी ने पद गाए। या भाव सों श्रीदामोदरलाल जी ने श्रीगोवर्द्धनलाल जी की आज्ञा सों शृंगार किये। मोती की परदनी पाग। पद ये है—

आज हरि देखेरी नंगमनंगा।
जलसुत भूषण अंग बिराजत वसन हीन छवि उठत तरंगा।
कहा कहों अंग-अंगकी सोभा निरखत लज्जित कोटि अनंगा।
कछु दधि हात कछुक मुख माखन सूर हँसत व्रज युवतिन संगा।

यह कीर्तन सुनत ही समस्त बालक जान गये कि ए महाभाग दिव्य दृष्टि वारे हैं। ताही भाव को ये शृंगार आज भयो। शृंगार निश्चित है। दिन निश्चय नही। और ऐसे हू मोती को आड़बन्द हू धरें; तब ये पद शृंगार सन्मुख में गायो जाय। दिन भर कीर्तन उष्ण कालिक लीला के होत है। जल बिहारादि के उपर्युक्त पद जरूर गायो जाय।

जेष्ठवदी १०—जमना दशमी—जमनाजल भर्यो जाय। मणिकोठा डोल तिवारी में राजभोग आरती के बाद मन्दिर खासा होय। ध्रुववारी के नीचे सिंहासन खण्ड आवे। चारों दिश कुंज के भाव सों केला के खम्भ आवे। फेर अनवसर में जल भर्यो जाय। आज फुहारा नहीं चले। आज छिड़काव दुपहर के नहीं होय। कारण जल बिहार के भाव सो आज सो रुई की बतकें सन्मुख आवें आज राजभोग आरती सन्ध्यार्ति मणिकोठा सो होय।

वस्त्र झीने मलमल के सादा आड़बन्द पाग खिड़की की मोती छोटे आभरण हलको शृंगार। मोर पक्ष को। सफेद कतरा कर्णफूल धवल (जनेऊ) धरे पिछवाई सुन्दर जल के झाईवारी जल बिहार की। पद या प्रकार जब-जब जल भरे तथा स्नान यात्रा के प्रथम दिन हू ये पद गवे। **मंगला में**—यमुनाष्टपदी—नमोदेवीयमुने **शृंगार में**—जमना जल धर भरन चली चन्द्रावल नागर। **राज. सन्मुख**—आवत ही जमना भर पानी। जमना जल गिरधर करत बिहार। **भोग में**—बैठे हरि जमुनातट कुंजन में। आरती में—कृपारस नेन कमलदल फूले। **शयन में**—धीर समीरे। **पोढ़वे में**—पोढ़े रावटी उसीर।

जल भरें तब उत्थापन न होय। भोग में दर्शन होय। जल बिहार करते जल में ही कीर्तन होय। जल में निकसते में दर्शन होय। आरती उतरे बाद थाल पधराये बाद मणिकोठा को जल खाली होय।

उत्थापन क्यों न होय? ताको भाव या प्रकार मिले है—प्रभु श्रीगोवर्द्धनधरण के संग सातों निधि जल बिहार करिवे पधारे तथा समस्त गोस्वामी बालक हू जल बिहार श्रीजी के संग करें यासों उत्थापन में दर्शन न होय। और भोग में भगवदीय वैष्णव प्रभु संग क्रीड़ा करें तथा समस्त व्रज ललना करें। उत्थापन में श्रीस्वामिनीजी एवं चार यूथाधिपा जल बिहार करें।

कई बार पूर्व में तथा अन्य समय में जेष्ठ कृष्ण द्वादशी को जल भरकर जमुना जल बिहार की सेवा उपर्युक्त होती हुती परन्तु दो दशमी ही श्रीजी में जल बिहार की मानी गई हुती। द्वादशी श्रीविट्ठलवर, चारो रविवार में श्रीद्वारकानाथजी एवं मथुरानाथजी प्रभृतिन में जल बिहार होय। नवनीत में अमावस्या को। जल में मगरमच्छ कछुवा छोटी नावें कमल पुष्प कमल पत्तादि डारे विशेष भोग सखड़ी-अनसखड़ी में आवे। सेवाक्रम में कुछ विशेषता रहे। जमुनाजी को सरूप भाव ग्रन्थारम्भ में लिखवे सों यहाँ न लिख्यौ। जन्म चैत्र शुक्ला ६ को जमनावतो माने हैं।

जेष्ठ कृष्णा ११—वस्त्र केसरी। धोती उपरना मोती को। सेहरा हू माला केसरी पे चोटी वनमाला को श्रृंगार। पिछवाई चितराम की। विवाह दारवभण्डा में। संकेत विवाह लीला जल बिहारादि की फूल के श्रृंगार। सायं भये। पिछवाई श्याम धरती पे सफेद कला के काम की झाईवारी।

जेष्ठवदी १२—आड़बन्द सफेद किनारी को पाग। हीर के आभूषण। छोटो श्रृंगार पिछवाई खण्ड कसीदा के काम की मलमल पर।

जेष्ठवदी १३—वस्त्र सफेद धोती केशरी पाग केशरी पटका छोड़ को। पिछवाई सादा किनारी की। आभरण मोती के। श्रृंगार पद के भाव को। वस्त्र सादा उत्थापन पूर्व पटका वड़ो होय जाय। उत्थापन में केवल पाग धोती के दर्शन होय यह श्रृंगार श्रीगोवर्द्धनलालजी ने कीयो। पद के आधार पर। पद या प्रकार भोग के दर्शन में गवे। पहले दूसरो पटका किनारी को धरावते हुते। अब बन्द ही कर दिये केवल धोती के दर्शन होय है।

पीत पिछोरी कहा जु विसारी।
ये तो लाल ढिंगन की ओढ़े हे काहू की सारी।
हों वाही घाट पिवावत गैया जहाँ भरत पनिहारी।

भीर भई गैया सब बिडरीं मुरली भलीजू सवाँरी।
होले भज्यो और काहू की वे ले जु गई जु हमारी।
परमानन्द बलि-बलि बातन पर तृन तोरत महतारी।

ग्रीष्मावसर में निकुञ्ज नायक श्रीगोवर्द्धननाथजी निकुंज में प्रिया प्रीतम पोढ़े। उत माऊ शंखध्वनि भई और घवराय वेग उठके भाजे तब रसिक शिरोमणि रसराज श्रीस्वामिनीजी को सारी ओढ़ि पधारे तब माता जसोदा सचकित नयन सों देखि के पूछि बैठीं। वाक् चतुर भोरी-भारी मैया जसोदा ये समझाय दई। वे समझ गईं। और बातन पै बलिहारी जाइबे लगी। या प्रकार माँ बेटान के संवाद रूपी यह श्रृंगार होत है। या श्रृंगार को दिन निश्चित नहीं है। श्रृंगार निश्चित है।

जेष्ठवदी १४ दूसरो अभ्यंग—

वस्त्र बदामी। आड़बन्द। पगा। मोर चन्द्रिका। हीरा के आभूषण। पिछवाई चितराम की दोनों तरफ कुंजद्वार पर गुसाँईजी महाप्रभुजी हरिरायजी एक ओर गोवर्द्धनलाल दामोदरलाल गोविन्दलाल कुंजन को सुन्दर रसभरी रचना। शयन में विशेष सामग्री। बिलसारू, रोटी, शिखरन भात वगैरे।

जेष्ठ कृष्ण ३०—वस्त्र गुलाबी हल्के। परदनी। पाग। पिछवाई। खण्ड। मोती के आमरण। कर्णफूल को श्रृंगार छोटो। साँझ को फूल के श्रृंगार।

जेष्ठ शुक्ला प्रतिपद—वस्त्र सफेद। पिछोड़ा। कुल्हे। मोती की जोड़ सफेद। मयूर पक्ष को आभरण सब मोती के कुण्डल को श्रृंगार वनमाला को। चोटी। पिछवाई सफेद कला की। निकुंज के भाव की।

जेष्ठ सुदी २—वस्त्र चन्दनी धोती। उपरना मोती के आभरण। छोटो श्रृंगार मयूरमच्छ की चन्द्रिका श्वेत मोतीन की मण्डनी राजभोग ते सायं आरतीपर्यन्त फूल के श्रृंगार।

जेष्ठ शुक्ला ३—वस्त्र सफेद आडबन्द, पाग सफेद, हीरा के आभूषण, छोटो श्रृंगार यह सेन को श्रृंगार पद आधार पर माने हैं। पद या प्रकार है।

राग कान्हरा—

आवरी बावरी ऊजरी पाग में मेल के बाध्यो है मंजुल चोटा।
चंचल लोचन चारु मनोहर अब ही गहि आन्यो है खञ्जन जोटा।
देखत रूप ठगौरी सी लागत नयनन सेनन निमिष ओटा।
नन्ददास रतिराज कोटि वारों आज बन्यो ब्रजराज को ढोटा।

यह पद शयन समय भयो। श्री मस्तक पर शुभ्र सफेद पाग बीच में मंजुल केश पाश बंधे भये आपके चंचल चपल चितौनवारे खञ्जन पक्षी की तरह युगल नेत्र कमल है। वे अबही मानो आय के बांधे है। उन्हें देख ठगौरी सी लागत है। एक पलक हू दूर होय ऐसो नहिं चाहें। रतिराज के मान मर्दन करिवे वारे आज ब्रजराज कुंवर ऐसे बने है।

जेष्ठ शुक्ल ४—फेंटा सफेद, पिछौरा, सफेद डोरिया के, पिछवाई सफेद पनघट की कसीदा की, आभरण मोती के, छोटो शृंगार कर्णफूल को।

जेष्ठ शुक्ला ५ वस्त्र गुलाबी परदनी दुहेरी किनारी की—फेंटा गुलाबी गोल चन्द्रिका रूपहरी, हाँस, त्रवल, कटि पेच, हीरा मोती के। छोटो कर्णफूल को झूमक के हार पिछवाई चितराम की। नाव में विराजे ब्रज भक्तन की श्रीविट्ठल नाथजी के यहाँ के वस्त्र, नाव को मनोरथ, उदयपुर गणगौर घाट पिछवाई में, नाव में विराजे तथा प्रभु नाव खेते भये।

या प्रकार वर्तमान गो० ति० श्रीगोविन्दलालजी ने ये मनोरथ उदयपुर महाराणा भोपालसिंहजी की प्रार्थना से वि० २००५ में कियो। वामें श्रीनवनीत प्रियजी को पधराय के रतन चौक डोल तिवारी में जल भर के नाव में प्रभुन कों विराजमान करिके सरस मनोरथ कियो।

नाव में दोनों आडी ग्वाल नाव खेवते भये। उपरझीना (पगतिया नोके) ऊपर छन्नी वारी तिवारी में श्री नवनीत विराजे तथा अगल बगल मदनमोहनजी आदि सरूप भोग सरे वाद सायं नाव को अधिवासन कराय प्रभु पधराय नवनीत, श्रीजी सहित विविध सामग्री भोगधरी और फेर दर्शन खुले। हथियापोल सौं पुरुष, सूरज पोल सें महिला तथा बगीचा में होय के मणिकोठा से होते भये कमल चौक में निकसि के गये तीन घण्टा दर्शन भये। भीतर पधार के आरती के दर्शन भये। राईलौन न्योछावर भये। तब से ये मनोरथ सदा के लिये स्थाई कर दियो और उपर्युक्त मनोरथ के विचार विमर्श एक साल पूर्व सो निर्णय करके अनेक प्रमाणन सों शास्त्र संमत कियो।

भावना या पद के आधार पर (सारंग)—

बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत है नाव।
आज सखी नन्दलाल संग खेलवे को दाव।
पथिक हम खेवट तुम लीजे उतराय।
बीच धार माँझ रोकी मिस ही मिषदु राय।
यमुना गमीर नीर अति तरंग लोले।
गोपिन प्रति कहत लागे मीठे मृदु वोले।

नन्दनन्दन डरपति हों राखिये पद पास।
याही मिस मिल्यो चाहे **परमानन्ददास**॥

पद को भाव—

याही भाव सों या मनोरथ को कियो सुन्दर महूर्त में सुन्दर दिन में सुन्दर लीला मनोरथ कियो युगल छवि श्रीविट्ठलवर है और उनके यहाँ श्रीगोविन्दजी तथा वहाँ सों ही वस्त्र सामग्री आदि आवे को उत्सव आवे यासों उनको गोविन्द नाम है। अतः आपने ये मनोरथ कियो। भोग आरती सामिल भई अब केवल श्रीमदनमोहनजी विराज ये मनोरथ होय है। या दिन भर पद जल विहार के। दर्शनन में नाव के पद भये।

जेष्ठ शुक्ला ६—वस्त्र केशरी कौर की खाली धोती तथा पाग। चन्द्रिका सादा, सफेद मोती के आभरण, छोटो शृंगार, पिछवाई सफेद धरती में जाली के मोर नाचते सफेद, यह शृंगार पद के भाव सों भयो। । दिन निश्चय नहीं शृंगार निश्चय।

सारंग—

आज धरें गिरधर पिय धोती।
अति झीनी अरगजा भीनी पीताम्बर घनदामिनी जोती।
टेढ़ी पाग भ्रकुटि छबि राजत श्याम अंग अद्भुत छबिछाई।
मुक्तामाल फूली बनराई परमानन्द प्रभु सुखदाई॥

अतिझीनी अरगजा सों भीनी आज श्रीनाथजी धोती धरे है। श्रीमस्तक पर टेढ़ी पाग अतिशोभित है अंग-अंग छवि बढ़ावे है वापे मानो बनराई मोती आभूषण शोभित है गिरिराज पे जैसी शोभा ऐसी ही श्रीगिरधर श्रीजी की शोभा है।

जेष्ठ शुक्ला ७—मोतिया रंग के आड़बन्द, पगा पिछवाई, खण्ड। आभरण मोती के, मोर शिखा, कर्णफूल, सायं फूल शृंगार, पिछवाई जल बिहार की कसीदा वारी।

तीसरो अभ्यंग—

जेष्ठ शुक्ला ८-९—वस्त्र बदामी, परदनी, पाग गोल, चन्द्रिका, अभ्यंग तीसरो भयो। हीरा के आभूषण, किनारी दुहेरा के साज, परदनी, पाग। पाँच अभ्यंग के पाँच शृंगार। विशेष सुन्दर ढंग के होय। **आड़बन्द, परदनी, धोती, पिछोड़ा** एवं फेर परदनी सामग्री भी। या प्रकार शयन में अरोगे। **रोटी, शिखरन भात, दही भात, सत्, प्रथम, कच्ची केरी को बिलशारू, पक्के आम को बिलसारू**

खरबूजा को बिलसारू, अमृता, अमरस आदि दही भात सिखरन, भात, रोटी अवश्य आवे।

जेष्ठ शुक्ला दशमी गंगा दशहरा—

देहली, वन्दनमाल, हांडी, गोपी वल्लभ, दुहेरा, वर्तमान गोस्वामी तिलक श्रीगोविन्दलालजी गादी बिराजे सो मनोरथ, तथा गंगा दशहरा को मनोरथ पहले वस्त्र सादा आवते। अब किनारी के वस्त्र। पिछवाई खण्ड। पाग केशरी रूपहरी, किनारी के, पिछोड़ा, लूम की किलंगी, हीरा मोती के आभरण, मध्य को श्रृंगार।

पद—

मंगला—नमोदेवी गंगे। नमोदेवी यमुने। श्रृंगार में—आगे-आगे भाग्यो जात भागीरथ को। ग्वाल—माई मेरो हरि गंगा को सो पान्यो। छाक माला, बोले पे। गंगा पतितन को सुखदेनी, गंगा ते त्रिभुवन को सुखदीनो गंगा जगतारण को आई। राजभोग सम्मुख—अरी जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत। एक बधाई। भोग में—बैठे घनश्याम सुन्दर खेवत हैं नाव कृपा रस नेन कमल दल फूले। शयन—धीर समीरे यमुना तीरे। विशेष में खाजा—सुहारी अरोगे तथा विविध सामग्री।

गंगा महात्म्य पुष्टि में स्थान—

सुवर्ण आदि धातु के प्राकट्यस्थान हिमालय के तो दो पुत्री भई वे दोनों अतीव सुन्दर मेंना नाम की हिमालय पत्नी ने उनको बड़े लाड़ प्यार सों राखी। प्रथम पुत्री गंगा तथा तथा दूसरी पार्वती भई। देवतान ने अपने कार्य के लिये भारत भूपै भगीरथ ने तपश्चर्य्या ते सगर सन्तति उद्धारार्थ पधराई। शंकर ने जटा में ते भू-मण्डल में जहाँ-जहाँ से भगीरथ गये, गई और येही त्रिपथगा जह्नुकन्या कहाई। इनकी गाथा सर्वत्र है तासों यहाँ न लिखी गई। चरणोदक से निकसवे के कारण आज सिंहासनादि कछु न आवे। न कुन्जादि। जिन स्थानन में आवे तहाँ यमुनाजी के भाव सो। श्रीनाथजी में केवल मगरमच्छादि ही आवें।

भागवत पञ्चम स्कन्ध के सतरहवे अध्याय में गंगा वर्णन—चारो दिशा समुज्वल करती भगवत् पदी सीता भद्रा, अलक नन्दा ये सब पृथक्-पृथक् लोक पावन करती अलकनन्दा भारतभू पर पधारी। विक्रमाब्द १९९५ में आज के ही दिन वर्तमान गोस्वामी तिलक श्रीगोविन्दलालजी महाराज गादी बिराजे ताको मनोरथ।

गादीजी—

जहाँ-जहाँ आचार्यन की गादी है और वामें झारी नहीं, भोग नहीं केवल सेवा की खबर जाय तथा जब-जब बड़े उत्सव होय तब-तब गादी बिराजे। गादीजी या लिये रहे—जैसे पदन में वर्णन मिले है आप परदेश हू पधारे तो खबर आज्ञा दंडवत होय सो गादीजी स्वयं आचार्य स्वरूप होय जगावनो पोढ़ावनो समाचारन की सूचना को आज्ञा ले उत्तर देनो होय है पद या प्रकार है—

ब्रज में श्रीविट्ठलनाथ बिराजे।
जिनके परम मनोहर श्रीमुख देखत ही अघ भाजे।
जिनके पद प्रताप तेज सों सेवक जन सब गाजे।
छीत स्वामि गिरधरन श्रीविट्ठल प्रकट भक्त हित काजे।

यासों सेवकन के आज्ञाहेतु गादीजी बिराजे जा स्थान में बिराजे वो स्थान गादीको पवित्र तथा स्वानुभव सो सब मार्ग द्रष्टा होई सेवा की आज्ञा देय। वार्ता ८४ में भगवानदास सारस्वत ब्राह्मण ५६ वार्ता में देखो।

जेष्ठ शुक्ला ११—खसको बंगला। अंगूरी वस्त्र पिछोड़ा। टिपारा को जोड़ सफेद मोर पक्ष को। टिपारा। अंगूरी किनारी के वस्त्र, आभरण मोती के, कुण्डल मयूराकृत मोती के, बनमाला को श्रृंगार, आभरण में सायं फूल के श्रृंगार के पद।

जेष्ठ शुक्ला १२—आज को श्रृंगार नियम को भयो वर्तमान गोस्वामी तिलक श्रीगोविन्दलालजी महाराज ने अपने नीरा बेटीजी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पद के भाव को श्रृंगार कर विविध सामग्री अरोगाई श्रृंगार नियमित कियो। आज तक बेटीजीन के आड़ी के मनोरथ नहीं होय पर श्रृंगार भये यह आपकी समानाधिकार भावना तथा श्रीनाथजी की आज्ञा प्रधान मान या पद के वर्णन को सार्थकता दिखाई तथा सेवा में तत्परता को यह भाव भावना करि मनोरथ कियो।

वस्त्र केशरी। पिछोड़ा। केशरी पाग। केसरी उपरना (पटका) श्रीमस्तक पर कतरा लूम को, मध्य को श्रृंगार, कर्णफूल, हीरा मोती के आभरण।

सारंग—

आज बने नन्द-नन्दनरी नव-चन्दन को तन लेप किये।
तामे चित्र धरे केशर के शोभित है हरि सुभग हिये।
तनसुख को कटि बन्यो पिछोरा ठाड़े है कर कमल लिये।
रुचिर माल पियरो जु उपरना नेन मेन सर से देखिये।
करनफूल प्रतिबिम्ब बिराजत मृगमद तिलक ललाट छिये।
चत्रभुज प्रभु गिरधरनलाल शिर टेढ़ी पाग रही भ्रकुटि छिये।

या श्रृंगार की विशेषता पिछोड़ा पर उपरना के साथ कर्णफूल के श्रृंगार न होय तथा पागहू धरें केशर रञ्जित वस्त्र चन्दन सुगन्धि वारे कमलन की माला धरे भये आदि श्रीहस्त में कमल धराये भये को वर्णन चत्रभुजदासजी ने कियो वि० २०२३ को ये श्रृंगार आरम्भ कियो।

जेष्ठ शुक्ला १३—गोस्वामी तिलक वीर श्रीगिरधारीजी महाराज को उत्सव पर देहली, वन्दनमाल, हांडी, वारा जलेबी, खण्ड प्रकार वस्त्र केशरी धोती उपरना रूपहरी किनारी के, दुमाला, सेहरा मोती को, लाल फूल की टिकड़ी पाचवारों चोटी; नवलदास वनमाला को श्रृंगार, कुण्डल सुकक्रत (शुकाकृति) पिछवाई खण्ड केशरी रूपहरी दुहेरा किनारी वारे।

पद-मंगला में—नमो देवी यमुने नमोदेवी। **श्रृंगार में—**श्याम संग श्याम सी ह्वै रही। **राजभोग में—**केशर की धोती पहरे केशरी उपरना। **भोग में—** आज बने गिरधारी नव चन्दन। **आरती—**चितेवो छाँड़ दे री श्रीराधा। **शयन—** बैठे ब्रजराज कुवर प्यारी संग यमुना तट। **पोढ़वे में—**पोढ़ेरावटी उसीर।

गोस्वामी तिलक श्री गिरधारीजी महाराज को संक्षिप्त परिचय—विट्ठल नाथजी गोद आये श्री गोविन्दजी महाराज के पुत्र श्री गिरधारीलालजी महाराज जन्म सं० १८६६। आज के दिन नाथद्वारा में प्राकट्य। आप छोटेपन से ही हृष्ट-पुष्ट सुन्दर सुडौल कमल नयन। आपको मुण्डन रतन चौक में वि० १६०५ भयो तथा जनेऊ वि० १६०७ में चैत्र शुक्ला ७ को भयो। आपने अपने जीवन में पांच विवाह किये। प्रथम विवाह काशीवारे श्यामलालजी की पुत्री साथ। दूसरी बहूजी को नाम भामिनीजी तीसरी भागीरथी बहूजी, चोथी लक्ष्मी बहूजी के साथ भये आपके चतुर्थ बहूजी से श्री देवका बेटीजी जो बेनाजी कही गयी तथा दूसरे श्री गोवर्धनलालजी तीसरे श्रीवल्लभव लालजी दो पुत्र एक कन्या भई।

आपके तिलकायत पदासीन अधिकार प्राप्ति पर बड़े ठाट बाट वीरता पूर्ण राज्य बनाय अपने नाथद्वारा नगर को आश्रित पद से मुक्त मान प्रभु सेवा जन सेवा राज्य सेवा कर भारत स्वतन्त्रता के रखवारे धर्माचार्य भए आपने ही राज्य रक्षार्थ चार ओर संगठनात्म सेवक रखे जैसे नृसिंह बंकट महुवा वाडा में वीर तथा मल्ल को स्थान दियो जरखण्डी बरखण्डी आदि स्थानन में घोड़ा हाथी सेना के रूप में रक्खे। प्रभु सुखार्थ गोपालन गो लालन गोसंवर्धन हेतु गौशाला बनवाई ओडन, वडियाल, खटूकडा मोगानादि कई स्थानन में गौशाला बनवाई। आपने राज्य की सुनवाई हेतु तथा काम काज के लिए बड़े बाजार में कोतवाली चौकी की स्थिति कर हवामहल में विराज न्याय करते। आप सत्य प्रतिज्ञ एवं सत्यवादी हुते। तथा मार खाड़ कौ आइवे वारे से असन्तुष्ट रहते आपके समय में नगर के काहू स्थान में टोडी झरोखा धोखादि के मकान नहीं बन सकते। तथा कोई जरी आदि के कपड़ा नहीं पहर सकते आप तत्कालिक न्याय कर वही फैसला कर देते जो आपकी आज्ञा मानले तो वाकूं दयालु होकर दण्ड से मुक्त कर देते तथा आनाकानी करिवे पर दुगुनीं सजा देते आप इतने कोमल हृदय भी हुते के सजा देकै उच्च स्थान में सेवा दै भरण-पोषण करते या सुन्दर सुचारू व्यवस्था राज्य परिपाटी देखि उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह को ईर्ष्या भई और प्रपंच जाल फैलाइकै षड्यन्त्र करिवे लेंगे।

आपने वि० १६१७ में मोतीमहल बनवायो तथा श्रीजी नवनीत में विविध मनोरथ किये। आश्विन मास में नवनीतलाल को लालबाग पधरायके दान के एवं अन्य अनेक मनोरथ किये।

आपने १६२३ विक्रमाब्द में ब्रजयात्रा करी। आप बड़े चमत्कारी सरूप भये हैं। आप चतुर राजनीतिज्ञ हुते। तथाकबहूँ काहू की दासता स्वीकार नहीं करते। यासों राणा सज्जनसिंह ने प्रपंच करिके वि० १६३२ वैशाख शुक्ला को मेवाड़ से श्रीजी की सेवा सें पृथक् करे। ब्रजवास के हेतु आपने श्रीजी की आज्ञा मान चल दिये। जितने ही गोरखा तथा सेनानी मल्लादि हुते उनते युद्ध कौ निषेध कियो। और हू विचार प्रस्तुत कियो पर सब कछु छोड़ आप ब्रज कौ चल दिये तथा नरसंहार बचायौ। बाहर ब्रज में बिराजकर श्रीगोवर्द्धन धरण प्रभु की जो चिरस्थाई सेवा करी वह स्तुत्य हैं जैसे सूरत बम्बई, गुजरात, काठियावाड़ तथा अन्य प्रदेशन के भण्डारन की स्थापना संरक्षा तथा आय वृद्धि प्रभु सुखार्थ आपने करी। और आपने ब्रज में जतीपुरा, गोपालपुरा में वि० १६५६ वैशाख शुक्ला १४ को लीला प्रवेश कियौ। आपको वीर स्वरूप भयो। श्रीगोवर्द्धनधर भक्त कामना पूरक है तथा भक्तन को दुःखी नहीं देखनो चाहें याते तिलकायत श्रीगोविन्दजी पर जो वैष्णवन ने तथा नागरिकन नै दबाव दै श्रम दियौ ताही सों गोवर्द्धनधर श्रीनाथजी गिरिधारी रूप में प्रकट भये और आपने परशुरामवत् अवतार लै अपने नगर की तथा प्रभु की दासता कौ मुक्त किये अन्त में आप ने मेवाड़ त्यागनो स्वीकार्यो परि दासता नहीं स्वीकारी।

आपके चमत्कार—

(१) एक दिन दोपहर को आप गोवर्द्धन निवास में पौढ़ि रहे हुते। समीप में गोपी खवास पंखा कर रह्यो हुतो आप जागे, सन्मुख एक वृक्ष के नीचे दो स्त्री-पुरुष एक मृतक बच्चा को लिये बैठे रोय रहे। वे वहाँ के लकड़ी बेचन हारे भील-भीलनी हते। लड़का की उमर लगभग ६-७ की हुती। आपने गोपी से आज्ञाकरी—ये क्यों रोय रहे हैं। वाने जाय के पूछी आपने कही रोवो नहीं।

मुह में दिवायो ।
तीन घूंट देते ही बच्चा में साँस आयी तथा थोड़े समय बाद चरणन में आयके पहुँचो गद्‌गद् हृदय सों आचार्यश्री ने आशीर्वाद दियो । वही भीलन के राजा मामा कहे गये ।

(२) एक समै गिरधारीजी महाराज घूमवे पधार रहे हुते । आपके देखते एक काले सर्प ने एक गाय कूं डस लीनी । गाय पाँव पछाड़ रही हुती वा समय श्री महाराज ने जल से संचित कर विष उतारि दियो गाय को दौड़ती, स्वस्थ्य कर दई । दोनों घटना गोपीखवास के मुख से श्रुत हैं । जो इन महाराज को निजी खवास हुतो ।

जेष्ठ शुक्ला १४—स्नान यात्रा को पूर्व दिन को श्रृंगार जब भी स्नान यात्रा होय या आगे पीछे तिथि क्षय वृद्धि होय तो ये श्रृंगार आगे पीछे होय । श्रृंगार अवश्य होय । वस्त्र गुलाबी गहरे रूपहरी किनारी के । आड़बन्द । पाग सादा, मोती के आभरण पिछवाई कसीदा की सफेद गोपी जल भर के लाती भई घड़ान सो दोनों ओर भूमिपै । खण्ड में जल बिहार में हो हमें बिराजे भये आज दिन भर पनघट के पद होय ।

मंगला में—जमनाजी ने चालीस पदन में से । श्रृंगार में—यमुना घट भर चली चन्द्रावल नार । **राजभोग**—आवत ही यमुना भर पानी । **उत्थापन**—ग्वालन कृष्ण दरस कों अटकी । **भोग में**—ललन उठाय देहू मेरी गगरी । **आरती में**—अरे कोन टेव तेरी कन्हैया—अधिवासन एवं शयन में । जल को गई सुधर नेह भर लाई परी है चटपटी ।

विशेष—समस्त स्नानन में जल भरिवे सयन भोग धर के जाय तथा श्रीजी में हू शयन भोग धरिके जाते हुते परन्तु भक्त कामना कल्पतरु आचार्यन ने समस्त सेवक वैष्णवन को यह लाभ मिले या कारण रीति में परिवर्तन कियो । प्रथम वल्लभ वंश जल भरें तब सेवक वैष्णव भरें "सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा" अतः गोपी वल्लभ भोग धरके चोवा यमुना (बनास) के समीप स्थान में सों जल भरके लायें ।

आचार्य बालक बहू-बेटी सेवक दोनों ठिकानन के सारी व्यवस्था सों जाय और भरिके लायके हौंडान में सूक्ष्म-सूक्ष्म पधरावे तथा समस्त वैष्णव के घटन में तेहू एक-एक चुलु जल में पधरावे दिन भर जल भरें । ताके पश्चात् शयन भोग आयवे पै अधिवासन होय तथा तामें कदम्ब, कमल, गुलाब, जुही, रायवेल, मोगरा की कली, तुलसी निवारा की कली आदि आठ प्रकार प्रकार के पुष्प धरावें चन्दन, जमुना जल, गुलाब जल आदि पधरावे । शयन में रात्रि भर रहे प्रातः प्रभु वा सीतल जलसों वेद मन्त्रन सों स्नान करें । वहाँ सबही वस्तु भावात्मक स्वरूपात्मक होवे सो आधिवासन अर्थात् (पूजन कर देवत्व स्थित करें) कारण बालक रक्षार्थ ये आधिवासन होय । पवित्रा, राखी, हिंडोला डोल रथ आदि सब को होय । पलना को अधिवासन न होय कारण यह निपट बालक लीला होइबे सों और सब कान्ता भाव मिश्रित लीलान सो रक्षार्थ अधिवासन होय । फेर नित्य सेवा शयन की होय । यासों ही श्रृंगार में यह पद गायो जाय—

यमुना घट भर चली चन्द्रावल नार ।
मारग में खेलत मिले धनश्याम मुरार ।
नयनन सों नेना मिले मन हर लियो लुभाय ।
मोहन मूरति मन बसी पग धर्यो न जाय ।
तब की प्रीति प्रकट भई यह पहली ही भेट ।
परमानन्द ऐसी मिली जैसे गुड़ में चेट ।

जेष्ठा नक्षत्र प्रधान स्नान यात्रा को उत्सव जेठ शुक्ला १५—आज देहली वन्दनमाल, हाँडी, वारा, शंखनाद चार बजे, मंगला आरती बाद खुले, दर्शनन में टेरा आय धोती उपरना केशरी कोरके सफेद धरें । साज सब उठे फेर प्रभु के दूसरे श्रृंगार स्नान के होय मणिकोठा में जितने जमुनाजी के आगम के महात्म्य पद होय । टेरा खुले बाद तिलक होय । अक्षत चढ़े । तुलसी समर्पण होय । संकल्प होय फेर स्नान अधिवासन किये भये जल सों होय । सुवर्ण घर्मानुवाक् एवं पुरुष सूक्त सों जब तक वेदोच्चारण होतो रहे तब तक स्नान शंखसू छिटके होतो रहें फेर लोटान सों स्नान होय, टेरा आय श्रृंगार होय वस्त्र सफेद केशर के छाया के कुल्हे पिछौड़ा जोड़ मयूर पक्ष को बनमाला को श्रृंगार । कुण्डल, हास त्रबल ये सब मोती के । खण्ड पिछवाई, केशर के छापा के गोपी वल्लभ भोग में सवा लक्ष आम तथा विविध सामग्री जामें प्रधान बीज चिरौंजी के लड्डू पनासत्तू फलफूल अंकुरी आदि आवे ।

पद या प्रकार—

मंगला—जमनाजी के पद अष्टपदी सहित होय स्नान के समय धोती उपरना धरे स्नान के दर्शन खुलते ही वेद पाठ के साथ ये पद होय—

मंगला जेष्ट जेष्टापूनम जेष्टमास जेष्टान ।
पूरनमास पूर तिथी जेष्टमास जेष्ट में करत स्नान ॥

राजभोग में—करत गुपाल जमना जल क्रीड़ा । **भोग में**—मोय मिलत को

भावे वन-वन । **आरती में**—कृपा रस नेन कमल दल फूले । **शयन में**—बैठे ब्रजराज कुंवर प्यारी संग ।

स्नान यात्रा में विशेषता—

एक मास तक जमनाजी के पद जमुना गुण गान जल बिहार आदि भये । और उद्यापन सरूप आज प्रभु को सवालक्ष आम अरोगाय पूर्णताकरी प्रभु सेवा में चार यात्रा के मनोरथ होंय—चन्दन यात्रा, जल यात्रा, स्नान यात्रा, रथ यात्रा । अक्षय तृतीया को चन्दन यात्रा कहे तथा गंगा दसहरा को जल यात्रा कहे जेष्ठा पूनम जेष्ठा नक्षत्र सो स्नान यात्रा कहे । अषाढ़ शुक्ला २ पुष्प नक्षत्र प्रधान कों रथ यात्रा कहे ।

स्नान यात्रा को अभिप्राय यह है कि ब्रज भक्तन में जेष्ठ भक्त है, ताकरि श्रीठाकुरजी के संग जल क्रीड़ा मनोरथ भयो तिनके चित्त को आशय जानि उन आदि भक्तन के संग जल बिहार कियौ । यमुना विषय जल क्रीड़ा खेल यमुना "नाव को गोपी पारावार कृतोद्यमः" या वचन सों जेष्टा पूनम में ही स्नान । कायते तो प्रभु सब व्रज भक्तन में जेष्ठ-जेष्ठा मास तथा जेष्ठा नक्षत्र तासो भारभूत है वेसो वेद मन्त्रन द्वारा प्रभु कों स्नान करावनो पुष्टि मार्ग में प्रारम्भ श्री आचार्यन ने कियो और कृष्ण चन्द्र नक्षत्रन में प्रधान होवे सोहू मन्त्रन द्वारा अभिषेक कियौ । तासों ही जेष्ठाभिषेक कह्यो गयो श्रीमद्भगवताधार पे यह मनोरथ हू भयो । सब घरन में शंखसों स्नान करावे यहाँ शंख सों छांट के स्नान करावे ताको आशय यह है—

> "सोम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमाना ।
> प्रेम्णोक्षित प्रहसतीभिरितस्ततोङ्ग ।
> वैमानिकैः कुसुम वर्षिभिरीड्यमानो ।
> रमेस्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ।
> ततश्य कृष्णो पवने जलस्थल, प्रसून गन्धानिल जुष्ट दिक् तटे ।
> पचारभृङ्ग प्रमदा गणावृतो, यथा मदच्युत द्विरदः करेणुभिः । १०/३३/२४-२५

यमुना जल में गोपीनने प्रेम वारी चितवन सों प्रभु को देखि-देखि हँसि-हँसि उनते अपनी अगुलीन सौ वौंछारे करन लगी जल उछाल के खूब न्हवाये विमान ते बैठि-बैठि देवतागण कुसुम वृष्टि करन लगे या प्रकार सो आत्माराम प्रभु जमना जल में जैसे मदमत हाथी किलोल करें ता प्रकार आप जल विहार करन लगे ।

या भाव को वर्णन भगवदीयन नेहू किये जो [राजभोग शृंगारादि में पद गान होय है ।

> करत गोपाल जमुना जल क्रीड़ा ।
> सुरनर असुर थकित भये देखत बिसर गई तन-मन जिय पीड़ा ।
> मृगमद तिलक कुंकुमाचन्दन अगर कपूर सुवास बहु भुरकन ।।
> कुच युग मगन रसिक नन्द-नन्दन कमल पाणि परस्पर छिरकन ।
> निर्मल शरद कलाकृत शोभा बरखत स्वातिबूंद जल मोती ।।
> परमानन्द कंचन मणि गोपी मरकत मणि गोविन्द मुख ज्योती ।

स्नान सुवर्णधर्मानु वाक् सों करावत है तथा पुरुष सूक्त सो ताको वर्णन हू श्रीमद्भागवत में कियो है ।

> सलिलैः स्नापिन् मन्त्रैः नित्यदा विभवे सती ।
> स्वर्णधर्मानुवाकेन महापुरुष विद्यया ।। ११-२७-३१

सुगन्धित केशर कपूर अगर चन्दनादि जल सों मोकों स्वर्णधर्मानुवाक मंत्रन सों स्नान करावे महाविद्या पुरुष सूक्त सों होय है ।

पुष्टि मार्ग में हू सामग्री आज एवं रथ यात्रा में विशेष अरोगे ताके भाव हरिराय महाप्रभु द्वारा वर्णित मूंग की भिजोई अंकुरी (खोपरा के साथ) बीज के चिरौंजी के लड्डू आम्र शीतल पना ।

ब्रजललना अत्यन्त प्रीति सौं सुस्वादु कर्करी (ककड़ी) के बीज के मोदक जो मुग्धा अज्ञात यौवना अथवा पुष्टि मार्ग में भक्ति के बीज उत्पन्न होय और वे अंकुरित होय तासों अंकुरी और वह फलात्मक होय वही आम्र और फेर रसात्मक साधन में फल रूप रस शीतल होय याही भाव सों वैष्णवन को प्रभु अंगीकार करें रसदान दें । ये जमुना महाराणी की कृपा सों ही मिलै है पूर्व में पुष्टि बीज फेर पुष्टि भावांकुरित फेर फलरूप फेर रसरूप भगवदीयत्व आवे ।

भावात्मक, संयोगात्मक, रसात्मक पहले भाव उत्पन्न होय फेर संयोग वा भाव को संयोग रूप होय फेर रसात्मक तादात्म्य सम्बन्ध होइकै रस परिणति होय है ।

पद साहित्य में ग्रीष्मानुसार जेठ की सुख सेवा—

सारंग—

> सूर आयो शिर पर छाया आई पायन तर पंछी सब कुछ रहें देख छाँह गहरी ।
> धंधी जन धंधा छाँड़ रहेरी धूपन के लिये पशुपंछी जीव-जन्तु चिरिया चुप रहरी ।
> ब्रज के सुकुमार लोग देदे किवार सोवे उपवन की व्यार तामें पौढ़े पियप्यारी ।
> सूर अलबेली चल काहे को डरात है माह की मध्य रात जैसे जेठ की दुपहरी ।

शीतल उसीर गृह छिरक्यो अतर गुलाब नीर परिमल परिपाटीर घनसार बरखत है ।

सेज सजी पत्रन की अतर सों तर कीनी अरगजा अनूप अंगभोद दरसत है ।

बिजना बयार सीरी छूटत फुहारे नीकी मानो धननेन्ही नेंही फुहियाँ बरसत है ।

चतुर बिहारी प्यारी रस सों विलास करें जेष्ठ मास हेमन्त रितु दरसत है ।

चन्दन की खोर किये चन्दन सब अंग लगाय भींजी झपट-लपट पवन फहर में ।

प्यारी को पिय को नेम पिय को प्यारी को नेम अरस-परस दोऊ रीझि रिझावैं जेठ की दुपहर में ।

चहु ओर खस सँवारे जल गुलाब धर शीतल भवन कियो कुञ्जन महल में ।

शोभा कछू कही न जाय निरख नेन सचुपाय पवन डुलावत परमानन्द दासी टहल में ।

जेठ मास परत घाम ऐसी दुपहर में कहा सिधारे श्याम ऐसी कोन चतुर वाम जाको वीरा लीनौ ।

नेकधो कृपा कीजै हमही को सुख दीजे जैये फेर वाके धाम जाको नेह नवीनौ ।

बाँह पकर लेगई शय्यापैं दिये बैठाय अरगजा घसि अंग लगाय हियो सीतल कीनौ ।

रसिक प्रीतम कण्ठ लगाय रस ही में रसा मिलाय अरस-परस केलि करत प्रीतम बस कीनौ ।

आषाढ़ कृष्ण १—गोस्वामि तिलक श्रीगोवर्द्धनलालजी को गादी उच्छव देहली वन्दनमाल अमृस की तवापूड़ी हाँडी वस्त्र गहर गुलाबी परदनी, पाग, अलक हीरा के आभरण, लटपटी पाग, कर्ण फूल पायजेव सब हीरा के पिछवाई, गोवर्द्धन कन्दरापे श्रीजी बिराजे भये श्रीस्वामिनीजी पास में खड़े हैं । गिरि कन्दरा में कटिपेच हीरा को दुहेरा किनारी की परदनी ।

पद-मंगला—गोवर्द्धन गिरिसघन कन्दरा । शृंगार—श्यामा-श्याम सेज उठ बैटे । **राज भोग**—गायन सो रति गोकुल सो गोवर्द्धन । उत्थापन—मधुर ब्रज देश वस मधुर कीनो । **भोग**—ललित ब्रजदेश गिरीराज । आरती—निरखत रहिये गोवर्धनरानो । **शयन**—धनि-धनि हरिदास राई ।

आज सों राग बदल जाय । सूहा बिलावल तथा सायं सोरठ गायो जाय तथा बाड़ी दोनों ओर आवें । आज श्रीगोस्वामि तिलक गोवर्द्धनलालजी महाराज वि० १६३२ के दिन पिता के वर्तमान होते गादी बिराजे तासों ये गादी उत्सव भयो । वैशाख की पूर्णिमा को इनके पिता श्रीनाथद्वारा छोड़िकै पधारे और आज से आप तिलकायत पदासीन भये । आपको राज्य स्वर्णयुग समान मानें । आपने अनेक मनोरथादि कीने ।

आषाढ़ कृष्ण २—वस्त्र सरवती पिछोड़ा, मोती के आभूषण । टिपारा, सरबती जोड़ सफेद मयूर पक्ष को कुण्डल मीनाकृत वनमाला को शृंगार पिछवाई खण्ड सरबती किनारी दुहेरा के ।

आषाढ़ कृष्ण ३—सफेद वस्त्र चन्दन की बूटी के आड़बन्द पाग दुहेरा कतरा रेसम सफेद को मोती के आभूषण । पिछवाई चितराम की उष्ण कालिक लीला की ।

आषाढ़ कृष्ण ४—चौथो अभ्यंग । वस्त्र गुलाबी धोती उपरना नहीं एक, मात्र धोती पाग लूम । पिछवाई दाख माड़वाबेल की चितराम की । शयन में मीठी रोटी विविध सामग्री ।

आषाढ़ कृष्ण ५—श्रीमस्तक पर फेंटा पिछोड़ा । वस्त्र नीली झाई वारे तथा लाल बूटा गोल वारे छापल पिछवाई चितराम की । मोर शिखा वाम कतरा मोती हीरा के आभूषण मध्य को शृंगार ।

अषाढ़ कृष्ण ६—मोती को आड़बन्द पगामोती को । आभरण मोती के । छोटो शृंगार । पिछवाई कमलन की खण्ड कमलन को चितराम की फूलन के शृंगार भये ।

आषाढ़ वदी ७—क्रीट मोती को । धोती उपरना । चन्दनी वनमाला को शृंगार मोती के । आभरण । पिछवाई चितराम की गलबांही दिये कुञ्ज से निकसते प्रिया प्रीतम ।

आषाढ़ वदी ८—पाँचवों अभ्यंग वस्त्र केशरी परदनी दोहरा किनारी की हीरा के आभरण । पिछवाई केसरी खण्ड केसरी छोटो शृंगार पाय सादा मोर चन्द्रिका की लूम की कलंगी ।

आषाढ़ वदी ९—कदम्ब की मण्डली भई । पिछोड़ा । पाग बदामी । मोती के आभरण । मध्य को शृंगार विविध सामग्री आई मण्डली राजभोग में आयके सन्ध्यार्ति तक रही पद या प्रकार दिन भर कदम्ब के भाव के भये । श्रीमस्तक पर

मोती की मोर शिखा। मोती के आभरण। करहला की कदम्ब खड़ी, गोविन्द स्वामी की कदम्ब खण्डी, सुनहरा की कदम्ब खण्डी, बरसाने की कदम्ब खण्डी, नन्द गाँव की कदम्ब खण्डी, या प्रकार कदम्ब खण्डीन के भाव सों कदम्ब की मण्डनी भई।

मंगला—नवल दोऊ बने हैं मरगजे बागें। शृंगार में—आज को शृंगार सुभग साँवरे गुपालजू को राजभोग आये पर कदम्ब की छाक। राजभोग सन्मुख—बिहरत वन-वन में बनवारी। उत्थापन—चले खेलन कुञ्ज गोपाल। भोग—कदम्ब चढ़ि कान्ह बुलावत। सन्ध्यार्ति—शयन चलो क्यों न देखें खड़े दोऊ।

आषाढ़ कृष्ण १०—वस्त्र नीबुआ हलके आड़बन्द फेटा पिछवाई खण्ड आभरण हीरा मोती के छोटो शृंगार।

आषाढ़ वदी ११—वस्त्र सफेद पिछोड़ा। टिपारा वनमाला को शृंगार, कुंडल जोड़ रेसमी फूलन को दुहेरा। मोती हीरा के आभरण। पिछवाई खण्ड कसीदा के मोर नाचते सफेद।

आषाढ़ वदी १२—परदनी सफेद फेंटा। छोटो-छोटो शृंगार कर्णफूल को मोती के आभरण। कमल की मण्डनी सफेद लाल कमल राजभोग में आई। सन्ध्यार्ति तक रही विविध सामग्री अरोगी। पद या भाव सों भये :—

मंगला—कमल मुख देखत कौन अघाय। शृंगार—कमल मुख देखत तृप्ती न होय। राजभोग—आज की बानक कही न जाय। उत्थापन—कमल सी अखियां लाल। भोग—नैन छबीले तरुण मद माते। आरती—कमल मुख शोभित सुन्दर वेनु। शयन में—हँसि पीकदारी अचरा परी।

आषाढ़ कृष्णा १३—केशरी धोती उपरना सेहरा धरें। कुण्डल वनमाला को शृंगार। पिछवाई ब्याहुला की चितराम की। कुञ्ज-निकुञ्ज की। पद उष्ण कालिक शृंगार के ब्याह के।

आषाढ़ कृष्णा १४—परदनी हलकी बादली बिना किनारी की साज सब वैसोही मोती के आभरण छोटो शृंगार फूल के शृंगार भये

फूलन के शृंगार तथा कुसुंभाके क्रीड़ा वर्णन। अष्टछाप के तथा उष्ण कालिक लीला पदन में विशेषतायुक्त पद—

स्नानयात्रा के दूसरे दिन सों लेकर रथ यात्रा के दिन तक भोग आरती में बाड़ी आवे और वो शयन में चौक में धरे। मंगला में फुहारे के दोनों ओर आवे। भोग आरती के पूर्व फुहारा के साथ उठे। चौक में आय जाय यह वाड़ी चौकी में दोनों दिशि वृक्षावलि लतापता पुष्पादि से युक्त होयके १६ दिन तक आवे तथा कार्तिक में जो वाड़ी आवे वो आठ चाँदी के खम्भा में पुष्प सहित वृक्षावलि आवे वे चार दिन ही आवे। ताको कहा आशय—उत्सवाङ्ग अष्टयूथ अष्ट सहचरीन की आड़ी सो तरु तमाल ढिग कनक बेल लिपटी तासों वे आठ कुसुमित पुष्पित सहचरी भाव सों आठ आवे। पुराणन में देव वृक्ष देवी पुष्पलतावनी—ये वर्णन मिले हैं।

इन दिनन में १६ दिन व्रज स्थलन में यमुना पुलिन में कुसुमावलिरंजित विहार करन पधारें। या भावसों आवे। तथा यमुनाजी के द्वादशघाट गोकुल मथुरादि में है। व्रज के अनेक स्थलन में पधारवे के भाव सोंही ये आवे। यामें चन्दन के अगल-बगल केली के तथा सिल्लू के वृक्षन की डाली लगे ऊपर पुष्पादि से सुसज्जित होय यह आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा सों ही क्यों आवे? ताको कारण मल्हार के पूर्व व्रज शोभायुत दर्शन करि सेवा रूप अंगीकृत किये। तासों ही ये १६ दिन आवे "षोडष गोपिकानां मध्ये अष्ट कृष्णा भवन्ति" अतः दीप मालिका की वाड़ी के आठ, अरु तामें १६ दिन गोकुलदासजी मुखियाजी की वाणी सों—इन पन्द्रह दिनन में सूहा बिलावल सोरठ के पद होय पद साहित्य सूहा बिलावल।

सुवा पढ़ाबत सारंग नैनी।

बदन संकेत लाल गिरधर सों गरजत गुप्त निकट मति केनी।
अहो कीर तुम नीलवरण तन नेक चिते मन बुद्धी हरलेनी॥
होत अवार जात दिन वन गृह हम तुम भेट होयगी गेनी।
जब लगि तुमजु सिधारो सघन वन है जु गई जमना जल लेनी॥
परमानन्द लाल गिरिधर सों मृदु-मृदु वचन कहत पिक वेनी।

सुवा तेरी सोने चोंच मढ़ाऊं।

(१) कहेगो सन्देशो प्रान प्यारे को तव तोय बहुत रिझाऊं।
फरकत भुजा नैन रतनारे यह घों काहे सुनाऊं॥
मुरारिदास प्रभु साँझ समे सपनो जु भयो सो जाग परे गुनगाऊं॥

(२) तरुवर छाँह तीर यमुना के कीर पढ़ावत डोले।
गुण निधान वृषभाननन्दनी मोहन कहि-कहि बोले॥
झमक झुकावत डार कदम्ब की बेनी पीठ भुजंगम डोले।
नागरिदास प्रेम मद माती मूंदि-मूंदि दृग खोले॥

उष्ण कालिक छटा (सारंग)—

तनक प्याय पानी याही मिस आये मेरे गेह ।
जल अचवन लागे तब समझ बूझ भरलाई,
ओक ढीली करि ग्वालन मन्द-मन्द मुसकानी ।
वोही जल वैसे ही गयो और जल भर लाई,
तब ग्वालन बोली मधुर-मधुर वानी ।
चतुर बिहारी प्यारे प्यासे हो तो पानी पीजे नातर,
पाँव धारिये रावरे की प्यास में जानी ॥

१—जल क्यों न पीवो जो तुम हो पिय प्यासे ।
समझ सोच भरलाई यमुना जल पीवत क्यों अलसासे ।
जलहि मिस तुम उझकत डोलो नवल त्रिया रसरासे ।
रसिक प्रीतम जल तुम पियो चाहत अधर सुधारस आसे ॥

२—भले ही आये हो पिय ठीक दुपहरि की बिरियाँ ।
सुभ दिन सुभ नच्छत्र महूरत सुभ पल सुभ घरियाँ ॥
भयो है आनन्द-कन्द मिटयो विरह दुख द्वंद,
चन्दन घिसि अंग लेपत अरु पायन परियाँ ।
तानसेन के प्रभु मया कीनी मोपर, सूकी बेल करी हरियाँ ॥

आलीरी दुपहरि की बिरियाँ बैठी झरोखन पोबत हार ।
औचक आय गये नन्द-नन्दन मोतन चितयेरी कांकरी डार ।
हो सकुची लज्जित भई ठाड़ी गुरुजन मन में कियो विचार ।
गोविन्द प्रभु पिय रसिक सिरोमनि सेन वताई भुजा पसार ॥

१—रूखरी मधुवन की मोहन संग निसदिन रहत खरी ।
जबते परस भयो मोहन को तबते रहत हरी ।
शीतल जल जमुना को सींचत प्रफुलित द्रुमलता सगरी ।
नन्ददास प्रभु शरन गयेते जीवन मुक्तकरी ॥

२—दुहरि झमक भई तामें आये पिय मेरे उठ आदर कीनो ।
आंको भर ले गई तनकी तहद सब ठोर-ठोर बूदन चमक ।
रोम-रोम सुख संतोष भयो अनंग तनते रह्यो न ननक ।
मोहि मिल्यो अब चतुर धोंधी के प्रभु मिट गयो विरह जमक ।

कैसेकैं आये मेरे गेह दुपहरि झकन में ।
चँवर ढुराऊं सेज बिछाऊं श्रमकन झलकत देह ।
श्रम निवारिये अरगजालेपन करो काहे कों करत संदेह ।
रसिक प्रीतम याही ते कहावत सूर सकल करो नेह ॥

(१) सोहत चार-चार चुरी करन ।
कण्ठसरी दुलरी हीरन की नासामुक्ता हरन ।
तेसो कही विरचो नेनन कजरा तेसीय वीरी अधर-धरन ।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुञ्ज बिहारी रीझ-रीझ पावन-परन ।

(२) महल उसीर बैठे दोऊ मोद सो होद में पाव झुलावे ।
गरवैया झुक लेत फुहारन मुख ढिग मुखहि मिलावे ।
सेत महीन उपरना में छवि शोभित बार खुलावे ।
नागरिदास नागरिसखि चितवत इकटक पल न भुलावे ॥

अषाढ़ वदी में वर्षा होय तो शयन में ये पद गवे—

देख सखी पवन पुरवैया ठोर-ठोर रूखन को हिलवो ।
आछी नीकीं कारी-पीरी घटा घूम आई ता मध कृष्ण श्यामजूं को मिलवो ।
कुञ्ज लताद्रुम लता सखीरी मन्द कुसुमनी के कर खिलवो ।
मीन अचलह्वे जल जमुना को तानसेन प्रभु को कबहुंक मिलवो ।

आषाढ़ कृष्ण ३०—गोस्वामि तिलक श्रीगिरधरजी महाराज घस्यार वारेन को उत्सव-देहली वन्दनमाल हाडी वाराबूंदी को वस्त्र अधरंग आड़बन्द पाग सादा पिछवाई खण्ड सादा अधरंग आभरण हीरा के कर्ण फूल छोटो शृंगार लूम छोटी कतरा लूम वारो हीरा को सिरपेच अनुपम शृंगार ।

पद मंगला—नैन उनींदे हो रंगराते । शृंगार होते में—भले आये भोर गिरवरधरन । शृंगार में स०—गोकुल की पनिहार पनियाँ भरन । राजभोग में—सेवक की सुखरास सदा श्रीवल्लभ । भोग—नैन नचावत गूजरी । आरती में—यह ढोटा हट हरत परायो मन । शयन में—धीर समीरे यमुना तीरे ।

उत्सव की विशेष बातें एवं उत्सवनायक परिचय

आप तिलकायत गोविन्दजी जो गोवर्द्धनेशजी के भाई बाललीला वारे गोविन्द जी के यहाँ वि० १८२५ आज के दिन प्रकटे । आपके चंचल चपल दीर्घ सलोने नेत्र तथा श्याम सुन्दरवपु आपकी जीवन एक दम सादगी लिये हीं । तासों ही सादा वस्त्र धरें । रहन-सहन एक दम सादा । आपने तीन विवाह किये । अन्तिम विवाह वि. १८४७ में भयो । उन तीनों बहूजीन से आपके छै सन्तान भई । प्रथम १८४१ श्रीलालजी, दूसरे १८४४ विट्ठलरायजी, तीसरे १८५१ चिमनलालजी चौथे १८५३ दाऊजी, पाँचवे १८५५ नत्थूजी, छटे १८५८ गोपीनाथजी या प्रकार छै सन्तान भई ।

नाथद्वारा पर आक्रमण तथा घस्यार उदयपुर पधरावे की विशेष परिस्थिति कांकरोली इतिहास । नाथद्वारा इतिहास, नाथद्वारा की झाँकी आदि ग्रन्थन से ।

श्रीगोवर्द्धनधरन श्रीनाथजी सौ वर्ष तक सुखेन बिराजे तथा बड़े-बड़े मनोरथादि भये। लीला—विग्रह प्रभु ने कौतुक रच्यो और अन्यत्र सेवा पायवे की इच्छा भई। महाराणा भीमसिंहजी जिनको राज्य काल सं० १८३४ वि० होय है उनके राज्य काल में अनेक अघटित घटना भई। पहले १८३५ में मेरवाड़ान ने लूट-पाट तोड़-फोड़ करी। बाद कछू शान्ति भई फेर अंग्रेजन के विरुद्ध मरहट्टान ने उपद्रव करि देशी रियासतन में रक्तपात कीनो। मरहट्टान के सेनानायक तांत्याटोपे इहाँ तलक आय गयो। इहाँ श्रीनाथद्वारे के मनुष्यन को काफी धन दे प्रसाद पाये। चल्यो गयो। उन्हन के पिछलग्गू पिण्डारियान ने हूँ खूब लूट-पाट करी। वि० १८५५ के लगभग यशवन्तराव होल्कर सिन्धिया दौलतराव सों हारि के प्राणन की रक्षा के लिये मेवाड़ में आय गयो। सिन्धिया की सेना होल्कर के पीछे मेवाड़ भूमि में नुकसान करती नाथद्वारा आई और इहाँ के आचार्यश्री उत्सव नायक गिरधरजी सों तीन लाख रुपैया वसूल करिवे को प्रयत्न कियो[1] और मन्दिर की सम्पति में हाथ बढ़ानो चाह्यो ता समय गिरधरजी ने महाराणा को सारी परिस्थिति लिखि भेजी महाराणा ने वाही समय प्रभु सेवा रक्षार्थ कोठारिया के रावत विजयसिंहजी झाला तथा देलवाड़ा के कल्याणसिंहजी आदिन को भेजे।

ये वीर राजपूत धर्मरक्षार्थ जूझि पड़े और वीर गति प्राप्त करि गये। या भयावह स्थिति को देखि महाराणा के आग्रह एवं व्यवस्था सों प्रभु सों प्रार्थना करि श्रीगोवर्द्धनधर श्रीनवनीतप्रिय श्रीविट्ठलेशरायजी को शीघ्रता से उदयपुर पधराये। पीछे से नाथद्वारा पर भयंकर अत्याचार लूट-पाट भई। श्रीनाथजी प्रभृति प्रभु शीतकाल के समय उदयपुर पधारे। वहाँ वसन्त डोल उष्ण कालिक सेवा श्रावण जन्माष्टमी अन्नकूटादि भये। साल भर वहाँ बिराजे महाराणा या वैभव कों निभाय न सके। तब गोस्वामि तिलक श्रीगिरधरजी ने घस्यार नामक स्थान में नवीन नाथद्वारा बसायो।

मन्दिर वैसोही लोधा घाटी गुर्जरपुरा नई हवेली मन्दिर पिछवाड़ बैठक बगीचा नवनीतप्रिय को मन्दिर आदि सिद्ध कराय वि० १८५६ माघ कृष्ण १० श्रीजी पाट बिराजे। और घस्यार में बड़े उल्लास उत्साह सों मनोरथादि सेवा चलती रही। परन्तु श्रीनाथजी को पुनः श्रीहरिराय महाप्रभु की वाणी सत्य करिवे पुनः नाथद्वारा पधारनो हुतो। अतः वहाँ की जलवायु उचित न पड़ी और दो लालजी हू लीला प्रवेश करि गये। श्रीगोपीनाथजी एवं श्रीनत्थूजी। तब श्री गो० ति० गिरधरजी बहुत चिन्तित भये और श्रीनाथजी सों

१—वे तीन लाख रुपैया वि० १८६८ दौलतराव विट्ठलदास हरदेव द्वारा नीमच की छावनी में भेज कर समझौता भयो।

अपनी इच्छा जानिबे की प्रार्थना करी। वहाँ वि० १८६१ में श्रीदाऊजी को विवाह भयो और नाथद्वारा में शान्ति भई ऐसे वृत्त प्राप्त भये और श्रीनाथजी पुनः नाथद्वारा पधारेंगे ऐसी प्रेरणा सुनिके गो० ति० श्रीगिरधरजी विरह भावना जागृत कर वि० १८६३ वैशाख शुक्ला ११ को घस्यार में ही लीला प्रवेश करि गये और वहाँ ही श्रीदामोदरजी दाऊजी तिलकायत पदासीन भये। वहाँ श्रीगोवर्द्धनधर श्रीनाथजी ने अपनो जेमनो (दक्षिण) श्रीहस्त दाऊजी के श्रीमस्तक पर धर्यो यासों अद्यावधि वहाँ बिराजमान प्रभु के दर्शन हस्त धरे के होय है। बाद श्रीदामोदरजी ने श्रीनाथजी को वि० १८६४ फागण कृष्णा ७ को पुनः पाट बिराजमान किये।

आपने नाथद्वारा में अनेकन स्थान नूतन बनवाये। जन एवं प्रभु सुखार्थ गिरधर सागर आदि बनवाये।

टोड़ी में—

गोकुल की पनिहारि पनियाँ भरन चली बड़े-बड़े नेनन खुबि रयो कजरा।
पहरे कसूंभी सादी अंग-अंग शोभा भारी गोरि-गोरि बहियन मोतिन के गजरा।
सखी संग लिये जात हँस-हँस बूझत बात तनहू की सुध्र भूली सीस सोहे गगरा।
नन्ददास बलिहारी बीच मिले गिरधारी नेनन की सेनन में भूल गई डगरा।

अनुराग रसात्मक रञ्जित दृग्।
प्रभु चित्र विचित्र पवित्र हृदम्।
गमिता सकलं परिहृत्य सदा।
वदनानल दासमहं शरणम्॥

जिनके अनुराग रंजित नेत्र हैं प्रभु की विचित्र लीला सों हृदय पवित्र है और सम्पूर्ण सों हृदय में लीला बिराजमान है, ऐसे वदनानल आचार्य उनके दास शरण हों।

आषाढ़ शुक्ला १—वस्त्र गुलाबी गहरे परदनी पाग खण्ड ये सब गुलाबी आभरण हीरा मोती के गोल चन्द्रिका लूम छोटो श्रृंगार। आज छेल्ले फुहारा छेल्ले खस के पड़दा। पंखा। छिड़काव। वाड़ी तथा अन्य अनेक सेवा भीतर की। छेल्ली भई उष्ण कालिक लीला पूर्ण। वर्षारम्भ की लीलारम्भ।

पुष्य नक्षत्र प्रधान रथयात्रा को उत्सव—

आषाढ़ शुक्ला २—देहली वन्दनमाल हांडी अभ्यंग पिछवाई खण्ड सफेद डोरिया पर धोरा सुनहरी किनारी की (छड़ी) वारी वस्त्र पिछोड़ा धोरा वारों। कुल्हे सुनहरी किनारी की जोड़ पाँच को मयूर पक्ष को वनमाला को श्रृंगार मोती

हीरा पन्ना के आभरण उत्सव के कुण्डल। शीश फूल सिरपेच आदि सब आभरण जड़ाऊ ठाड़े वस्त्र आज धरे। केशरी डोरिया के (चन्दनी) बंटा बदल्यो जाय आज गोपी वल्लभ भोग के संग सवालक्ष आम सकलपारा बीज के चिरौंजी के नग बूंदी मेवाड़ी अंकुरी पन्ना आदि विविध प्रकार की सामग्री अरोगे तथा राजभोग सरे बाद रथ सन्मुख आवे जो सन्ध्यार्ति तक प्रतिदिन रहे। हिंडोरारम्भ के पूर्व दिन तक भोग आरती आज सामिल भई। मल्हार राग आरम्भ (यहाँ रथ के पद नहीं होय) आज से लेके आठो समय मल्हार राग गवे आज से तीन दिन दाल अंकुरी भीजी ३ दिन छुकी अरोगे।

रथ यात्रा की विशेषता तथा 'श्रीजी रथ में क्यों न बिराजे' याकौ विचार-

वि० १५४५ में आप महाप्र श्रीवल्लभ जगदीश पधारे तथा वहाँ शास्त्रार्थ में विजयी भये। जगन्नाथजी प्रसन्न होय के जब सेवा श्रृंगार दिये तब श्रृंगार करत में श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ तथा पुष्टि मार्ग में तीन वस्तुन को अंगीकार करावनी परेगी। वाही समय प्रभु की आज्ञा मानि, तीन वस्तु स्वीकारी तथा पधारिकें चालू करी—

(१) रथ यात्रा को उत्सव मनानौ चाहिये।

(२) एकादशी हमारे यहाँ नहीं होय तो आपके श्रीनाथजी में हू नहीं होनी चाहिए।

(३) शाक यहाँ विशेष अरोगे। श्रीजी में हू शाक विशेष अरोगनो चाहिये।

ये तीनों वस्तु जगन्नाथजी की आज्ञा सों पुष्टि मार्ग में आई।

"आषाढ़स्य सितेपक्षे द्वितीया पुष्पसंयुता।
तस्यां रथे समारोप्य रामं मां भद्रयासह।
यात्रोत्सवं प्रवृत्यर्थं प्रीणयेच्च द्विजान् बहून् ॥

या लिए सर्वप्रथम अडेल में रथ सिद्ध करवायके वामें प्रभु श्रीनवनीतप्रिय को बिराजमान करि बड़े धूमधाम गाजे-बाजेसों रथ यात्रा उत्सव नगर भ्रमण के साथ कियौ। तब सों समस्त पुष्टिमार्ग में रथयात्रोत्सव चालू भयौ।

जब महाप्रभु या उत्सव कों अंगीकार किये परन्तु पुष्टिमार्ग में भाव विचार या प्रकार है जो व्रजपति पुष्टि पुरुषोत्तम व्रज सम्बन्धी लीला सिवाय कछू जानत नहीं और ये मर्यादा मार्गीय लीला कैसे सम्भवै तौ श्रीमद्भागवत के प्रमाण सौं सारी लीला प्रभु आज्ञा सहित है—

गोप्योरूढ़े रथोनूलं कुच कुंकुमकान्तयः।
कृष्णलीला जगुः प्रीत निष्ककण्ठयः सुवाससः।
तथा यशोदा रोहिण्यवेकंशकटमास्थिते।
रेजतुः कृष्णरामाभ्यां तत्कथा श्रवणोत्सुके: ॥
श्रीहरिराय महाप्रभू ने हू पद में गायो है।
"मैया रथ चढ़ि डोलूंगो।
सब विधि साजे हरि रथ बैठाये देखि रसिक बलिजाई।"

याते प्रभु व्रज भक्तन के घर-घर पधारत हैं और वे व्रज ललना अपने-अपने मनोरथ पूरण करत है। वे चार भोग चार यूथाधिपान के भाव सों होत है। तथा अंकुरी बीज के लडुआ आमको पना (सरवत) मण्डी सकलपारा मेवादि अनेक सामग्री भोग धरत है।

समस्त घरन में कहूं चार कहूं तीन कहूं दो श्रृंगार होत है। पहले मंगल में उपरना श्रृंगार में चाकदार वागा रथ में चार भोग ताई फेर पिछोड़ा फेर शयन में रथ में बिराजे तहाँ आड़बन्द या प्रकार श्रृंगार होत है।

प्रश्न—श्रीनाथजी में रथ में क्यों नाहीं बिराजे। तथा चार भोग के दर्शन क्यों नहीं होय ?

उत्तर—श्रीनाथजी गोलोक नायक हैं तथा और घर नन्दालय के भाव लीला के साथ आचार्य के घरन के प्रभु हैं। तासों वे भक्तन की कामना पूरक होयके रस लीला दान करें है। इहाँ श्रीनाथजी में गोलोक लीला में प्रभुन को रथ में बिराजमान करि घुमानो यह प्रभु आज्ञा न होवे सों यहाँ नहीं होय है। न चार भोग हू आवे। सामग्री सब प्रकार की अरोगे तथा सन्मुख रथ आवे। भावना सों प्रभु पधारें व्रज भक्तन के घर तथा रथ हूं के पद न होय। एक पद शयन में भाव पूर्ण रस पूर्ण होय है।

सुन्दर वदन-सदन शोभा को निरख-निरख नयन-नमन या क्यों।
हों ठाड़ी बीथिनह्वे निकस्यो उझक झरोखन झाक्यो।
मोहन इक चतुराई कीनी गेंद उछार गगन मिसताक्यो।
वारोरि लाज बेरिन भई मोको में गमार मुख ढाक्यो।
चितवन में कछु कर गयो मोरान मनन रहत क्यो राख्यो।
सूरदास प्रभु सर्वस्व ले गयो हँसत-हँसत रथ हाँक्यो ॥

तथा प्रधानता या बात हू को है आज ही वि० १५०७ के दिन मध्याह्न के समय भगवत् चरणन सों निकसी भई भगवती कलिमलतारिणी गंग धार काशी में आपको सदेह अग्निपुञ्जसों तिरोहित लोकदृष्टया भयो। तासों ही श्रीजी अपने श्री अंग में स्वेत वस्त्र तथा उत्सव हेतु कुल्हे धरें और जा भाव सोंहू रथ में नहीं बिराजे भावात्मक रथ में बिराजे। तथा काष्ठ रथ में न बिराजे तो चार भोग हूं न आवे जब आचार्य महाप्रभु ने पूर्व में समस्त वैष्णवन के राजा को (तथा सम्पति वारेन

कूं) और अपने निज कुटुम्बियन कों उपदेश दे-कृतार्थ किये जा समय आप श्रीगंगा की धार में प्रवाहित होयवे पधारे तब श्रीगोपीनाथजी, श्रीविट्ठलनाथजी इन उभय पुत्रन कों पृथ्वी में लिख के मौन संन्यासी होवेसों ढाई श्लोक उपदेश दियो। तहाँ ही श्रीगोवर्द्धनधर श्रीनाथजी प्रकट होय उन आचार्य की आज्ञा किये। वो शिक्षा श्लोक कहे जाय है। आचार्य श्रीवल्लभ के तीन उपदेश ही सर्वत्र सब हितार्थ है। वह या प्रकार है—

समस्त समाज एवं वैष्णवनकों प्रथम उपदेश—

गृहं सर्वात्मना त्याज्यं तच्चेत्त्यक्तुं न शक्यते।
कृष्णार्थं तत्प्रयुञ्जीत कृष्णोऽनर्थस्य मोचकः॥
संगः सर्वात्मनात्याज्यः तच्चेत्युक्तुं न शक्यते।
संद्भिः सहकर्तव्यः सन्तः संगस्य भेषजम्॥
अनुकूले कलत्रादौ विष्णोः कार्याणि कारयेत्।
उदासीने स्वयं कुर्यात् प्रतिकूले गृहं त्यजेत॥
परित्यागे दूषणंनास्ति यतः कृष्ण बहिर्मुखाः।
अनुकूलस्य संकल्पः प्रतिकूलस्य विसर्जनम्॥
रक्षिष्यतीति विश्वासो भर्तृत्वेवरणं तथा॥[1]
आत्मनैवेद्यकार्पण्यें षड्विधाशरणा गतिः॥ ५॥

वैभव वारे राजा तथा वैष्णवन कूं उपदेश—

आश्रित्याश्रम धर्ममत्रभवतां स्थेयं प्रजा रक्षता।
आजीव्यं विदुषां विधाय जगतां भोज्याश्रितेशिक्षणेः॥
सेव्यो श्रीरमणो सदा हरिजनैः कार्याधिका संगतिः।
दीनानां दयया नयेन विनये कीर्तिर्विधेयावला॥ १॥
देवत्वेनगुरोरनुग्रह वशाज्जाता प्रवृत्तिर्यदा।
सत्पौंड्रादि विधारयेत् पर जन्मस्यैकादशीर्नां व्रतम्॥
धर्मं भागवतं चरेत् हरि कथामाचार्य भक्तार्चनम्।
पापं तद्विमुखान्न नार्पित भुजी चान्याश्रयो वर्जयेत्॥ २॥

शिक्षा श्लोकास्वकीय पुत्रादिकन कों तीसरो उपदेश अन्तिम दीनों।

यदा बहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन।
तदा काल प्रवाहस्था देह चित्तादयोऽप्युत॥ १॥
सर्वथा भक्षयिष्यन्ति युष्मानिति मतिर्मम।
न लौकिक प्रभु कृष्णो मनुतेनैव लौकिकम्॥ २॥

१—पञ्चश्लोकी श्रीमद् वल्लभाचार्य कृता।

भावास्तस्तत्रप्य स्मदीयः सर्वस्वं श्रेयोहिकश्च सः।
परलोकश्च तेनायं सर्व भावेन सर्वथा॥ ३॥
सेव्यः सएव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः।

या पर प्रभु प्रकट होयके डेढ़ श्लोक कह्यो—

"मयि चेदस्ति विश्वासो श्रीगोपीजन वल्लभे
तदा कृतार्थता यूयं हि शोचनीयं न कर्हिचित्।
मुक्तिर्हित्वान्यथा रूपं स्वरूपेणव्यवस्थितिः"

या प्रकार आज्ञा दैके तिरोहित भये। तासो श्रीनाथजी में रथ यात्रा रथ में बिराजनो न भयो। नहीं डोल पलनादि प्रकार सो यह होय सकतो हुतो।

यहाँ श्रृंगार हू पिछोड़ा को ही होत है तथा जब-जब आज सो अषाढ़ी पूनम तक ठाड़े वस्त्र बीच-बीच में धरेगे। तब-तब मंगला में उपरना धरेंगे वैसे आड़बन्द आवे। चन्दन की बरणी तूंग्या कुञ्जान में कलात्मक वस्त्र आवे।

पद मल्हार को क्रम—

मंगला—कुँवर चलो आगेजु। अभ्यंग के ६ देवगंधार ६ बिलावल। ठहर के ये मल्हार राग में गवे।

को न करे पट तर तेरे। गावत रसिकरायब्रज।

श्रृंगार सन्मुख-तू चल नन्द-नन्दन वन बोली। राजभोग आये पे—छाक बीड़ी में—आये माई बरखा के अगवानी। रा० स०—गोवर्धन पर्वत के उपर नाचत। उत्थापन—आयो आगम नरेस देश-देश। भोग—आयो पावस रितुसुखद। आ०—गाय सब गोवर्द्धन। शयन—सुन्दर वदन सरन शोभा।

अषाढ़ शुक्ला ३ या चौथ रथयात्रा के दूसरे दिन को श्रृंगार ये ही होय—

वस्त्र आड़बन्द चोकड़ी किनारी की फूल बीच में सफेद आड़बन्द कुल्हे जोड़ मयूर पक्ष तीन को ठाड़े वस्त्र नहीं आभरण नित्य के हीरा पन्ना हांस जवल आदि छोटी मध्य को श्रृंगार पिछवाई सफेद चौकड़ी कीनारी-वारी बीच में फूल कुण्डल सिरपेच आदि। बारह महीना में आज ही आड़बन्द पे कुल्हे धरें ये श्रृंगार हू आज ही होय ताको आशय मथुरानाथजी द्वारकाधीश विट्ठलवर आदि उपर्युक्त चार श्रृंगार में शयन में आड़बन्द पे कुल्हे धरे तासो उनकी आड़ी सो ये सबन के भाव सों आड़बन्द पे कुल्हे मय जोड़ के धरें।

मंगला—बोले भाई गोवर्द्धन पर मुरवा। श्रृंगार सन्मुख—नयो नेह नयो मेह नई। राजभोग स०—आयो आगमनरेश-देश। उत्थापन—होतो इन मोरन। भोग—अंग-अंग धन कान्ति। आ०—लाडलो लडाय चरावन। शयन—मुरली अधर धरेहो। शिरपेच कुल्हे देन ही आवे। आज्ञा ही धरें।